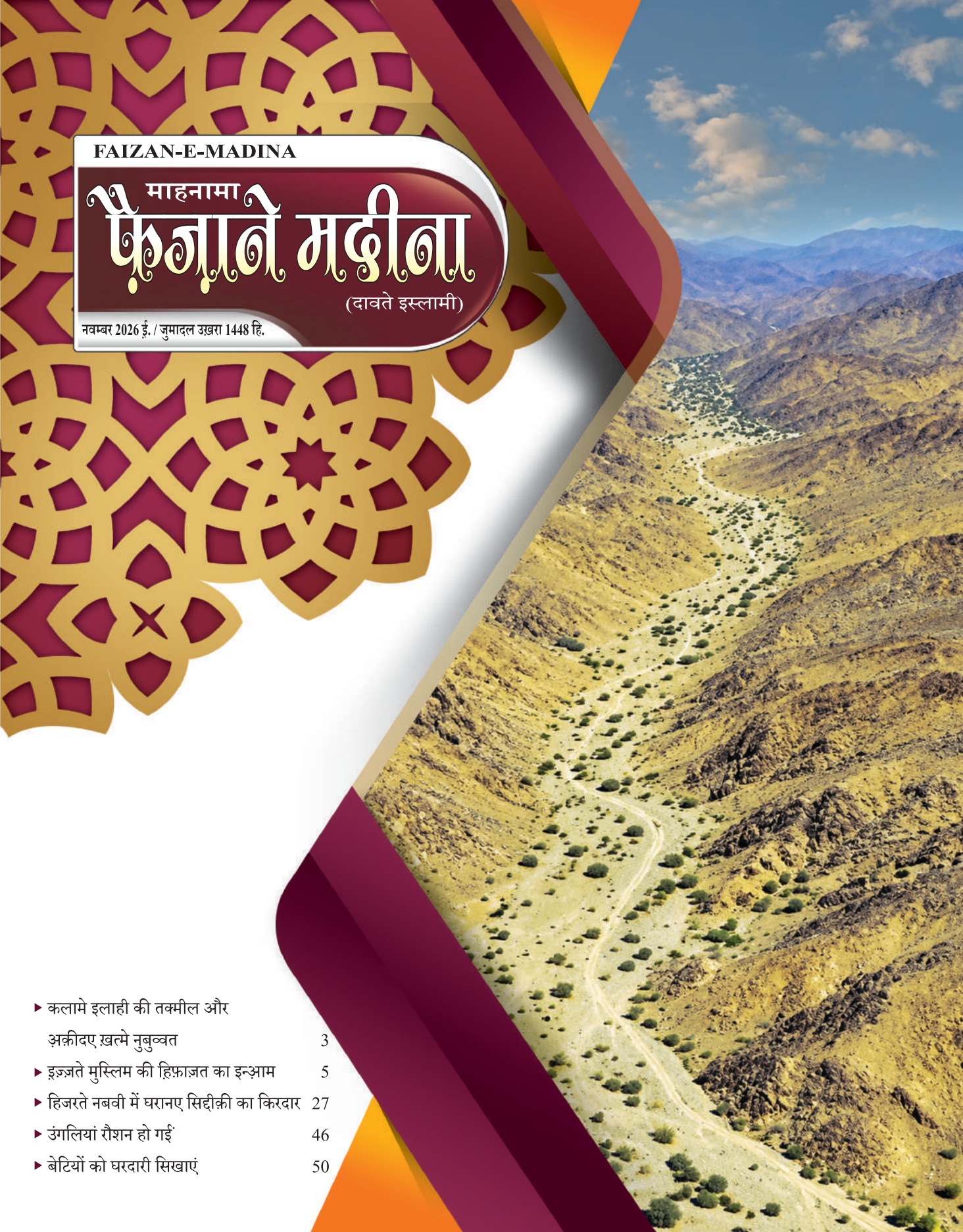
FAIZAN-E-MADINA

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

नवम्बर 2026 ई. / जुमादल उख़रा 1448 हि.



- कलामे इलाही की तक्मील और अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत 3
- इ़ज़्ज़ते मुस्लिम की हिफ़ाज़त का इन्आ़म 5
- हिजरते नबवी में घरानए सिद्दीक़ी का किरदार 27
- उंगलियां रौशन हो गईं 46
- बेटियों को घरदारी सिखाएं 50

इर्क़ुन्निसा का दर्द

इर्क़ुन्निसा की पहचान येह है कि इस में चढ़ढे (यानी रान के जोड़) से ले कर पांव के टख़्ने तक शदीद दर्द होता है येह मरज़ बर्सों तक पीछा नहीं छोड़ता। रोज़ाना दर्द के मक़ाम पर हाथ रख कर अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ **सूरतुल फ़ातिहा** 1 बार और 7 मरतबा येह दुआ पढ़ कर दम कर दीजिए : "اَللّٰھُمَّ اَذْھِبْ عَنِّی سُوْءَ مَا اَجِدُ" अगर दूसरा कोई पढ़ कर दम करे तो عَنِّی की जगह मर्द के लिए عَنْہُ और औरत के लिए عَنْھَا कहे। (मुद्दत : ताहुसूले शिफ़ा)

(मदनी पंजसूरह, स. 389)

یَاقُدُّوسُ

का जो कोई दौराने सफ़र विर्द करता रहे

اِنْ شَآءَاللّٰہ थकन से महफ़ूज़ रहेगा।

(मदनी पंजसूरह, स. 246)



फ़ालिज व लक़्वा

सूरए ज़िल्ज़ाल लोहे (STEEL) के बरतन पर लिख कर धो कर पिलाई जाए।

"**सूरए ज़िल्ज़ाल**" लोहे (STEEL) के बरतन में लिख कर दें कि मरीज़ इस पर देखे اِنْ شَآءَاللّٰہ सेहत होगी।

(काम के औराद, स. 2)



दिमाग़ी अमराज़ का वज़ीफ़ा



» लाहौल शरीफ़ साठ बार
» अलहम्द शरीफ़ और आयतुल कुर्सी शरीफ़ एक एक बार
» तीनों क़ुल (सूरए इख़्लास, सूरए फ़लक़ और सूरए नास) तीन बार



पानी पर दम कर के पिलाइए।

(मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत, स. 341)

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

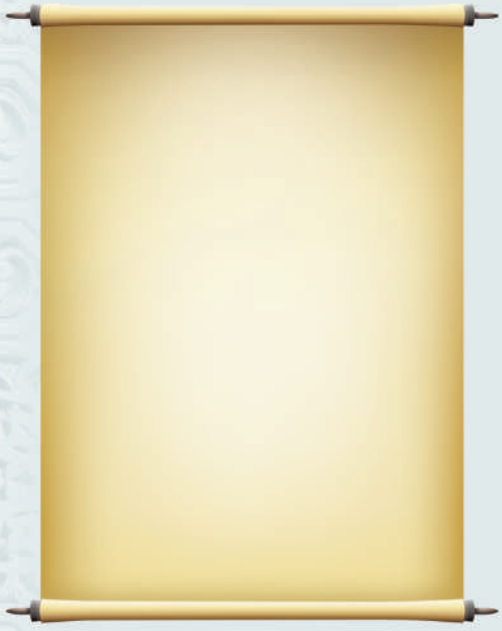
नवम्बर 2026 ई.

ब फ़ैज़ाने नज़र
सिराजुल उम्मह, काशिफुल ग़ुम्मह,
इमामे आज़म हज़रते सय्यिदुना
इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

ब फ़ैज़ाने करम
आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत
मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह
इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर

(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)



क़ुरआनो ह़दीस

कलामे इलाही की तक्मील और अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत 3

इ़ज़्ज़ते मुस्लिम की ह़िफ़ाज़त का इन्आ़म 5

फ़ैज़ाने सीरत

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बैठने का अन्दाज़े मुबारक 7

फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत

नज़रे बद का असर कब तक रहता है ? मअ़ दीगर सुवालात 9

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

ह़ज़रते सिद्दीक़े अकबर और ख़िलाफ़ते बातिनी मअ़ दीगर सुवालात 11

मज़ामीन

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और नमाज़ 13

ज़िन्दगी का बाग़ 16

इस्लाम और शख़्सी निखार 18

जवानी 21

नेकी में जल्दी कीजिए 23

ताजिरों के लिए

अह़कामे तिजारत 25

बुज़ुर्गाने दीन की सीरत

हिजरते नबवी में काशानए सिद्दीक़ी की ख़िदमात 27

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन जाफ़र رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا 31

इमाम ज़ियाउद्दीन मुक़द्दसी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه 32

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए 34

मुतफ़र्रिक़

रसूलुल्लाह ﷺ की ग़िज़ाएं (ख़रगोश का गोश्त) 36

फ़ैटी लीवर 38

क़ारेईन के सफ़ह़ात

नए लिखारी 40

बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"

अल्लाह से मह़ब्बत करो 44

उंगलियां रौशन हो गईं 46

बच्चों के सुवालात को संजीदगी से लीजिए 48

इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"

बेटियों को घरदारी सिखाएं 50

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल 52



कलामे इलाही की तक्मील और अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत

अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत इस्लाम के बुनियादी और क़त्ई अ़क़ाइद में से है। क़ुरआने करीम ने जहां सराहत के साथ रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ातमुन्नबिय्यीन क़रार दिया, वहीं मुख़्तलिफ़ असालीब और मुतअ़द्दद मक़ामात पर ऐसे उसूल भी बयान फ़रमाए हैं जो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़त्मे नुबुव्वत पर निहायत मज़बूत और बलीग़ दलालत करते हैं। उन में एक अहम और क़ाबिले तवज्जोह पहलू दीन की तक्मील, अल्लाह तआ़ला के कलिमात के तमाम व कामिल होने, वह़िए इलाही के मह़फ़ूज़ रहने और उस में किसी क़िस्म के तग़य्युर व तबद्दुल की नफ़ी से मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआनी बयानात हैं। इन आयात को बाहम मरबूत कर के देखा जाए तो येह ह़क़ीक़त नुमायां होती है कि अल्लाह पाक ने अपने आख़िरी रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बिअ़सत के ज़रीए दीने हिदायत को अपनी तक्मील तक पहुंचाया, अपनी आख़िरी किताब नाज़िल फ़रमाई और उस हिदायत को क़ियामत तक के लिए मह़फ़ूज़ फ़रमा दिया।

अल्लाह पाक की सुन्नते जारिया येह रही है कि मुख़्तलिफ़ अदवार में इन्सानों की हिदायत के लिए अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तशरीफ़ लाते रहे और उन के ज़रीए अल्लाह पाक का पैग़ाम बन्दों तक पहुंचता रहा। बुनियादी अ़क़ीदा, यानी अल्लाह पाक की तौह़ीद, उस की इ़बादत और उस क रसूलों की इताअ़त, तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की दावत का मर्कज़ी मज़्मून रहा, अगर्चे मुख़्तलिफ़ ज़मानों, अक़्वाम और ह़ालात के एतिबार से बाज़ शरई अह़काम में फ़र्क़ होता रहा। चुनान्चे क़ुरआने करीम ने अम्बियाए किराम की दावत को एक उम्मत और एक बुनियादी दीन के साथ मरबूत फ़रमाया। लेकिन जब सिल्सिलए नुबुव्वत अपने आख़िरी मह़ले में पहुंचा और रसूले अकरम ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मबऊ़स हुए तो अल्लाह पाक ने आप की आ़लमगीर रिसालत के ज़रीए दीन को ऐसी जामेइ़यत और कमाल अ़ता फ़रमाया जिस के बाद किसी नए नबी, नई शरीअ़त की ज़रूरत बाक़ी नहीं रही।

क़ुरआने करीम फ़ुरक़ाने ह़मीद ने निहायत वाज़ेह़ अलफ़ाज़ में एलान फ़रमाया :

﴿اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَ رَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और मैं ने तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसन्द किया।[1]

क़ुरआने करीम ने दीन और कलामे इलाही की तक्मील को कई मक़ामात पर ज़िक्र फ़रमाया है, चुनान्चे सूरतुल अन्आ़म में है :

﴿وَ تَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّ عَدْلًا ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (۱۱۵)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और सच और इन्साफ़ के एतिबार से

तेरे रब के कलिमात कामिल हैं। उस के कलिमात को कोई बदलने वाला नहीं और वोही सुनने वाला, जानने वाला है।[2]

इस आयते मुबारका में दो अहम निकात बयान हुए हैं : पहला येह कि अल्लाह पाक का कलिमा, यानी वह्यी व शरीअ़त, "تَمَّتْ" यानी अपनी तक्मील को पहुंच चुका, दूसरा येह कि उस में कोई तब्दीली मुम्किन नहीं। इस आयत में क़ुरआने पाक की चार इम्तियाज़ी शानें बयान हुई हैं : क़ुरआने पाक अपनी ज़ात में मुकम्मल है, इस में बयान कर्दा हर बात ह़क़ और सच्चाई पर मब्नी है, इस के तमाम अह़काम अ़दलो इन्साफ़ पर मुश्तमिल हैं, और येह हमेशा के लिए हर क़िस्म की तह़रीफ़ व तब्दीली से मह़फ़ूज़ है। जब अल्लाह पाक का कलाम अपनी तक्मील को पहुंच चुका और उस में तग़य्युर व तबद्दुल की सराह़तन नफ़ी कर दी गई, तो इस के बाद किसी नए नबी के ज़रीए किसी नई वह्यी के नुज़ूल का इम्कान ख़ुद इस एलाने तक्मील से मुतसादिम हो जाता है,

इसी त़रह़ सूरतुल अन्आ़म की आयत 34 में है :

﴿وَ لَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَ اُوْذُوْا حَتّٰۤى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَ لَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِی الْمُرْسَلِیْنَ(۳۴)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और आप से पहले रसूलों को झुटलाया गया तो उन्हों ने झुटलाए जाने और तक्लीफ़ दिए जाने पर सब्र किया यहां तक कि उन के पास हमारी मदद आ गई और कोई अल्लाह की बातों को बदलने वाला नहीं और बेशक तुम्हारे पास रसूलों की ख़बरें आ चुकी हैं।[3]

नीज़ सूरतुल कहफ़ में फ़रमाया :

﴿وَ اتْلُ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَ لَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا(۲۷)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और अपने रब की किताब से उस वह्यी की तिलावत करो जो आप की त़रफ़ भेजी गई है। उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं और तुम हरगिज़ उस के सिवा कोई पनाह न पाओगे।[4]

तौज़ीह़ : इस आयत में नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हुक्म दिया गया कि वोह अपनी त़रफ़ नाज़िल शुदा वह्यी की तिलावत जारी रखें, और साथ ही येह ज़मानत दी गई कि उस वह्यी के कलिमात को कोई तब्दील नहीं कर सकता। तब्दीली न करने की येह ज़मानत ख़ास त़ौर पर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल शुदा वह्यी के साथ ख़ास की गई, जो ख़ुद इस बात की दलील है कि येही वह्यी ह़र्फ़े आख़िर है, और इस के बाद किसी नई वह्यी के ज़रीए उस में किसी तग़य्युर की गुन्जाइश नहीं।

कलामे इलाही के तब्दीली से मह़फ़ूज़ होने का मफ़्हूम सूरए यूनुस में भी है :

﴿لَا تَبْدِیْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ(۶۴)﴾

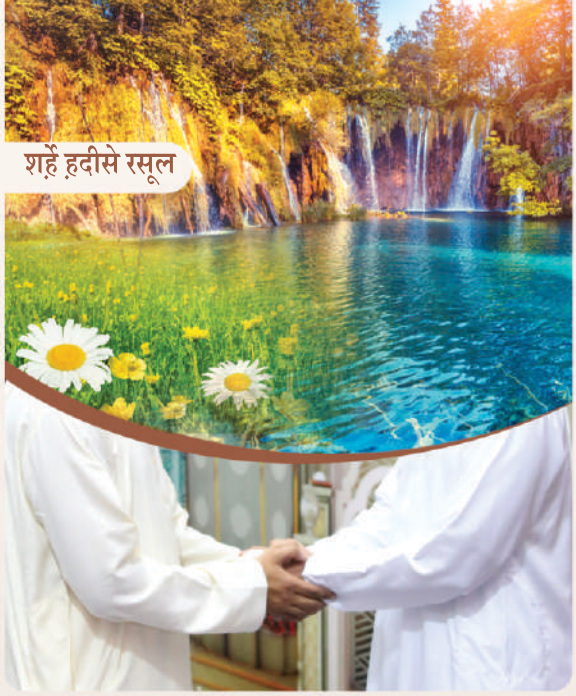
तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और आख़िरत में ख़ुशख़बरी है, अल्लाह की बातें बदलती नहीं, येही बड़ी कामयाबी है।[5]

क़ारेईने किराम ! येह तमाम आयात क़ुरआने करीम का वाज़ेह़ एलान हैं कि कलामे इलाही मुकम्मल हो चुका है और इस में कोई तब्दीली मुम्किन नहीं। तो जब कलामे इलाही मुकम्मल हो गया तो अब किसी नबी का आना उसी एलाने तक्मील के ख़िलाफ़ होगा, और अल्लाह करीम का फ़रमान कभी झूटा नहीं हो सकता, लिहाज़ा जो कोई रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाद भी किसी नबी के पैदा होने का दावा करे या ऐसे मुद्दई को सच्चा माने वोह काफ़िर, मुर्तद, झूटा, मक्कार और अल्लाह के कलाम का मुन्किर है।

नोट : वोह आयाते करीमा जिन में क़ुरआने करीम की ह़क़्क़ानिय्यत का चैलेंज किया गया है, वोह भी अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत की दलील हैं, इस की तफ़्सील अगले माह के शुमारे में اِنْ شَآءَ اللّٰه ।

---

(1) پ6، المائدۃ:3(2) پ8، الانعام:115(3) پ7، الانعام:34(4) پ15، الکہف:27(5) پ11، یونس:64۔



इज़्ज़ते मुस्लिम की हिफ़ाज़त का इन्आम

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مَنْ رَدَّ عَنْ عِرْضِ اَخِيهِ الْمُسْلِمِ كَانَ حَقًّا عَلَى اللّٰهِ اَنْ يَّرُدَّ عَنْهُ نَارَ جَهَنَّمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ यानी जिस ने अपने मुसलमान भाई की इज़्ज़त बचाई अल्लाह पाक उसे क़ियामत के दिन जहन्नम की आग से बचाएगा।[1]

इज़्ज़त बचाने से मुराद

मुसलमान की इज़्ज़त बचाने से मुराद येह है कि उस की ग़ीबत करने, ऐब लगाने और तक्लीफ़ पहुंचाने वाले को रोकना या दिफ़ाअ़ करना है, और येह दिफ़ाअ़ उसे जहन्नम से नजात दिलाएगा। इस की वजह येह है कि इज़्ज़त, ख़ून की तरह है लिहाज़ा इज़्ज़त पामाल करना ख़ून बहाने और इज़्ज़त बचाना ख़ून बचाने की तरह है।[2]

मुआशरे की तरक़्क़ी और बक़ा के लिए अम्नो अमान ज़रूरी है और उस का हुसूल एक दूसरे के हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त किए बग़ैर मुम्किन नहीं येही वजह है कि अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हक़ तल्फ़ी पर वईदें बयान कर के इस से रोका, हिफ़ाज़ते हुक़ूक़ की ताकीद की और इसे पूरा करने वालों को ख़ुशख़बरी सुनाई है, इन्ही में से एक हदीस येह भी है, आइए ! इस अहम तरीन हदीस को मज़ीद समझते हैं :

1 इस्लामी भाईचारा और इस के तक़ाज़े इस हदीस में "**अपने मुसलमान भाई**" का लफ़्ज़ आया है जो कि एहतिरामे मुस्लिम का एहसास दिलाता है, और इस हक़े भाईचारा को अदा करते हुए अपने मुसलमान भाई की इज़्ज़त का दिफ़ाअ़ करने पर जहन्नम से नजात को बतौरे इन्आम व बिशारत ज़िक्र किया गया है। इस्लामी भाईचारे की फ़ज़ीलत और तक़ाज़े पर चन्द अहादीस पढ़ते हैं :

1 हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुसलमान, मुसलमान का भाई है वोह उस पर ज़ुल्म करे न उस को रुस्वा करे, जो शख़्स अपने भाई की ज़रूरत पूरी करने में मश्ग़ूल रहता है अल्लाह पाक उस की ज़रूरत पूरी करता है और जो शख़्स किसी मुसलमान से मुसीबत को दूर करता है तो अल्लाह पाक क़ियामत के दिन उस की आज़माइशों में से कोई मुसीबत दूर फ़रमा देगा और जो शख़्स किसी मुसलमान का पर्दा रखता है क़ियामत के दिन अल्लाह पाक उस का पर्दा रखेगा।[3]

2 हज़रते नोमान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सब मुसलमान एक फ़र्द की तरह हैं, जब उस की आंख में तक्लीफ़ हो तो सारे जिस्म में तक्लीफ़ होगी और अगर सर में दर्द हो तो सारे जिस्म में दर्द होगा।[4]

3 हज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : एक मुसलमान दूसरे मुसलमान के लिए इमारत की तरह है जिस का बाज़ हिस्सा बाज़ को मज़बूत करता है।[5]

2 जहन्नम से बचाने वाला अ़मल ज़बान अगर्चे होती छोटी है, हरकत देने में आ़म तौर पर कोई मशक़्क़त और तक्लीफ़ नहीं उठानी पड़ती मगर इस के ज़रीए नाफ़रमानी बड़ी होती है, जिस्म के दीगर हिस्सों के मुक़ाबिले में ज़बान का असर ज़ियादा है, उ़मूमन ज़ियादा गुनाह भी इसी से सरज़द होते हैं, फ़ित्ने फ़सादात का ज़ियादा

तर दारो मदार भी ज़बान पर है, तक्लीफ़ देने में सब से बड़ा हथियार ज़बान ही है। जैसे ज़बान से बहुत सारे गुनाह किए जाते हैं इसी तरह इस से बहुत ज़ियादा नेकियां भी की जा सकती हैं, इन्ही नेकियों में से बहुत बड़ी नेकी ज़बान के ज़रीए अपने मुसलमान भाई की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करना भी है, ज़बान का येह वोह अ़मल है जो हमें जहन्नम से नजात दिलाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰہُ الْکَرِیْم

मुसलमान की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त कैसे करें ?

जहन्नम से नजात बहुत बड़ा इन्आ़म है, इन्आ़म बड़ा हो तो उस के हुसूल के लिए जिद्दो जहद भी ज़ियादा करनी पड़ती है तो आइए ! इस सिल्सिले में चन्द ऐसे उसूल मुक़र्रर कर लेते हैं जिन को अपना कर हम मुसलमानों की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त कर सकते हैं :

1 मुसलमान भाई की बुराई न सुनने का अ़हद कीजिए अल्लाह करीम ने हमें चट्टानों से मज़बूत और पहाड़ों से बुलन्द अ़ज़्म की नेमत से नवाज़ा है अगर हम मुश्किल से मुश्किल काम करने का पुख़्ता इरादा कर लें और अल्लाह की रह़मत शामिल हो तो اَلْحَمْدُلِلّٰہ वोह काम हो जाता है। अपने मुसलमान भाई की बुराई न सुनने का पुख़्ता अ़ज़्म हो तो फिर ऐसे नाज़ुक मौक़े पर शर्मो झिजक रुकावट नहीं बनती और किसी का रोबो दबदबा त़ारी नहीं होता और किसी की बदज़बानी का डर या मलामत का ख़ौफ़ आड़े नहीं आता। अगर कहीं ज़ियादा मुश्किल सूरतेह़ाल बन भी जाए तो येही पुख़्ता अ़ज़्म ह़िक्मते अ़मली पर मुश्तमिल कई रास्ते दिखाता है, ऐसे हर मौक़े पर मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का येह वाक़िआ़ पेशे नज़र रहना चाहिए चुनान्चे एक मौक़े पर आप ने लोगों से पूछा : जब तुम किसी (बदज़बान) को अपने भाई की इज़्ज़त की धज्जियां उड़ाते देखते हो तब तुम्हें क्या हो जाता है कि उसे रोकते नहीं ? लोगों ने अ़र्ज़ की : हम उस की ज़बान से डरते हैं। फ़रमाया : येह ज़ियादा क़रीब है कि तुम (क़ियामत के दिन) गवाही के लाइक़ न रहो।[6]

2 ख़ामोश ताईद भी हरगिज़ मत कीजिए अगर किसी मुसलमान की ग़ीबत वग़ैरा की जा रही हो तो ऐसे मौक़े पर मुस्कुराना या ख़ामोश रहना भी एक त़रह की ताईद की सूरत है जो सामने वाले की इस कबीरा गुनाह पर ह़ौसला अफ़ज़ाई का ज़रीआ़ बनती है ऐसे मौक़अ़ पर बराहेरास्त रोकना मुम्किन न हो तो नागवार तअस्सुर ज़ाहिर करना मुसलमान की इज़्ज़त बचाने और हल्की बात करने वाले को रोकने का ज़रीआ़ बन जाता है।

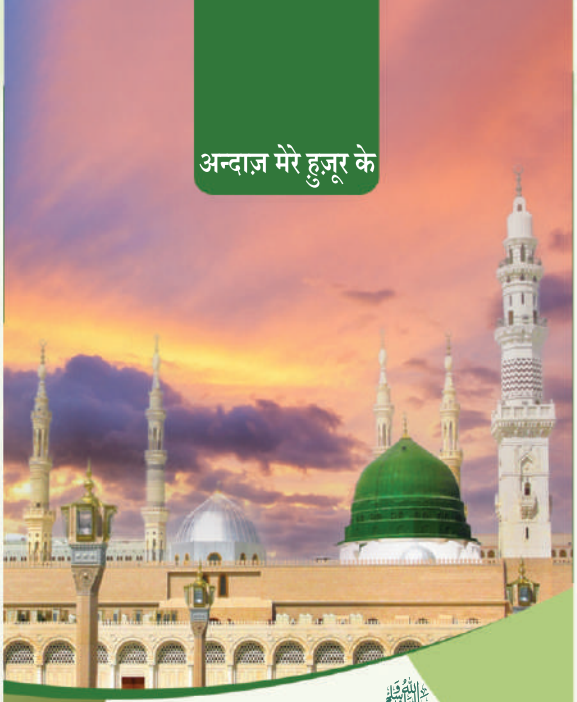
3 मौज़ूअ़ बदल दीजिए किसी फ़र्द की ग़ैर मौजूदगी में "ग़ाइबाना इस्लाह़" का ख़ूबसूरत उ़न्वान दे कर उस की ग़ीबत, ऐब जोई या तोहमत वग़ैरा जैसे ज़बानी गुनाह किए जा रहे हों तो ऐसे गुनाहों के तसल्सुल को तोड़ने के लिए ह़िक्मत व दानाई के साथ मौज़ूअ़ बदल देना बहुत मुफ़ीद रहता है। ऐसी सूरतेह़ाल में लोगों से येह बदतरीन मौज़ूअ़ छुड़वाने के लिए ज़िक्रे ख़ुदा व मुस्त़फा करना, बुज़ुर्गाने दीन के फ़रामीन या वाक़िआ़त सुनाना, लोगों के ज़ाती मुशाहदे, मुत़ालए़ और तजरिबात के बारे में पूछना या बताना, ख़ुश त़बई़ पर मुश्तमिल कोई सबक़ आमोज़ ह़िकायत सुना देना माह़ौल को ख़ुशगवार बनाने का ज़रीआ़ है।

4 समझाना सीख लीजिए कब, कहां, क्या और कैसे बोलना है ? येह आ जाए तो ज़िन्दगी पुरसुकून और मुआ़शरे का माह़ौल ख़ुशगवार हो जाता है, दावते इस्लामी इस ह़वाले से आला तरीन दर्सगाह है जहां से लातादाद लोगों ने समझाना सीखा है और अब वोह पूरी दुनिया के लिए बाइसे ख़ैर बने हुए हैं। येह सब बताने का मक़्सद येह है कि आप भी इज़्ज़ते मुस्लिम की हिफ़ाज़त करने का अ़ज़्म कर चुके हैं तो दावते इस्लामी से वाबस्ता हो कर समझाने का हुनर भी सीख लीजिए येह वोह सलाह़िय्यत है जो आप को दीनो दुनिया में कामयाब व कामरान करवाने का ज़रीआ़ साबित होगी। اِنْ شَآءَاللّٰہُ الْکَرِیْم

अल्लाह करीम हमें एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा नसीब करे और मुसलमानों की इज़्ज़त का मुहाफ़िज़ बना कर दीनो दुनिया की भलाइयां अ़ता फ़रमाए।

---

(1) مسند احمد، 45/524، حدیث:27536 (2) فیض القدیر، 6/175، شرح المصابیح لابن ملک، 5/306، المفاتیح، 5/226، دلیل الفالحین، 4/354 (3) بخاری، 2/126، حدیث:2442 (4) مسلم، ص1071، حدیث:6588 (5) مسلم، ص1071، حدیث: 6585 (6) جامع معمر بن راشد مع مصنف عبد الرزاق، 10/189، حدیث:20429۔



रसूलुल्लाह ﷺ के बैठने का अन्दाज़े मुबारक

(क़िस्त : 01)

अल्लाह पाक के प्यारे आख़िरी नबी, मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी का हर पहलू हमारे लिए रहनुमाई का सरचश्मा है। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चलना, फिरना, उठना, बैठना, खाना पीना, गुफ़्तगू फ़रमाना और लोगों से मिलना जुलना, अल ग़रज़ ज़िन्दगी का कोई गोशा ऐसा नहीं जिस में उम्मत के लिए दर्स मौजूद न हो। येही वजह है कि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने न सिर्फ़ आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इरशादात को याद रखा बल्कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी हैअत, निशस्त व बरख़ास्त और मामूलात को भी निहायत एहतिमाम से महफ़ूज़ फ़रमा कर लोगों तक पहुंचाया।

जब हम रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बैठने के अन्दाज़ का मुतालआ करते हैं तो मालूम होता है कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में तशरीफ़ फ़रमा होते थे। किसी मजलिस में जहां जगह मिलती, वहीं बैठ जाते, बैठने के इन मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में न तकब्बुर था, न बनावट और न ही दुनियावी जाहो जलाल और शानो शौकत का कोई असर बल्कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निशस्त बेमिसाल आ़जिज़ी और सादगी की आईनादार होती थी।

आइए ! नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बैठने के चन्द मुबारक अन्दाज़ मुलाहज़ा कीजिए :

बैठने की कोई मुम्ताज़ जगह मुक़र्रर न फ़रमाते

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक निशस्त व बरख़ास्त आप की बेमिसाल आ़जिज़ी व सादगी की आईनादार होती थी। अल्लाह पाक के महबूब और तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के सरदार होने के बावुजूद आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मजलिस में अपने लिए कोई मुम्ताज़ मक़ाम मुक़र्रर न फ़रमाते। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के दरमियान इस तरह घुल मिल कर बैठते कि आने वाला शख़्स आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अलग से पहचान भी न पाता क्यूंकि आप जब सहाबए किराम के दरमियान तशरीफ़ लाते तो किसी ख़ास और मुम्ताज़ जगह पर न बैठते।[1]

हज़रते अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि एक मरतबा हम नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मस्जिद में बैठे हुए थे कि एक शख़्स ऊंट पर सुवार हो कर आया, फिर सहाबए किराम से पूछा : "तुम में मुहम्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कौन हैं ?" उस वक़्त नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सहाबा के दरमियान तकिया लगाए हुए तशरीफ़ फ़रमा थे। हम ने कहा : "येह सफ़ेद रंगत वाले शख़्स हैं जो तकिया लगाए बैठे हैं।"[2]

ग़ौर कीजिए ! जिस ज़ाते अक़्दस के लिए करोड़ों दिल अ़क़ीदत व महब्बत से सरशार हैं, जो मालिके कौनैन और तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के सरदार होने के बावुजूद न नुमायां तख़्तो ताज रखते थे, न शाहाना पोशाक ज़ेबतन फ़रमाते और न मजलिस में अपने लिए कोई मुम्ताज़ मक़ाम मुक़र्रर फ़रमाते। इसी सादगी को देख कर एक अजनबी शख़्स आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पहचान न सका और उसे पूछना पड़ा : "तुम में मुहम्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कौन हैं ?"

जहां जगह मिलती वहां बैठ जाते

नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दूसरों के हुक़ूक़ और मुआशरती आदाब मल्हूज़ रखते हुए मजलिस में तशरीफ़ आवरी के वक़्त किसी को उठा कर अपनी जगह बनाने या किसी के लिए तंगी पैदा करने के बजाए जहां जगह मिलती, वहीं तशरीफ़ फ़रमा हो जाते।

हज़रते हसन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने मामूंजान हिन्द बिन अबी हाला से रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मजलिस के बारे में पूछा तो उन्हों ने फ़रमाया कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निशस्त व बरख़ास्त हमेशा ज़िक्रे इलाही पर होती और मजलिस में पहुंचते तो जहां जगह मिलती वहीं बैठ जाते और दूसरे लोगों को भी इसी त़रह़ करने का हुक्म देते।[3]

एक मौक़े पर लोगों को बैठने का अदब सिखाते हुए फ़रमाया : कोई शख़्स मजलिस में से किसी को उठा कर ख़ुद उस की जगह पर न बैठे।[4]

मालूम हुवा कि मजलिस में दूसरों के ह़क़ और आराम का लिह़ाज़ रखना भी हुस्ने मुआशरत का अहम ह़िस्सा है। रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने अ़मल और इरशाद दोनों के ज़रीए उम्मत को येह सिखाया कि मजलिस वोही ख़ूबसूरत है जहां हर शख़्स दूसरे के ह़क़ और राह़त का ख़याल रखा जाए।

क़िब्ला रुख़ बैठते

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक अन्दाज़े निशस्त में से एक अन्दाज़ येह भी नुमायां था कि आप उ़मूमन क़िब्ला रुख़ हो कर तशरीफ़ फ़रमा होते।[5]

हमें भी जब मौक़ा मुयस्सर हो और कोई रुकावट न हो तो नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस प्यारी सुन्नत पर अ़मल करने की कोशिश करनी चाहिए, ख़ुसूसन तिलावते क़ुरआने पाक, दीनी मुताल़आ, तस्नीफ़ो तालीफ़, दुआ व अज़्कार और दुरूदो सलाम पढ़ते वक़्त क़िब्ला रुख़ बैठना चाहिए क्यूंकि क़िब्ला रुख़ बैठने में क़िब्ले की ताज़ीमो तकरीम है और उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर बैठना बाइ़से ख़ैरो बरकत है।

क़िब्ला रुख़ बैठने की फ़ज़ीलत के बारे में तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिए :

1. मजालिस में सब से मुकर्रम (यानी इ़ज़्ज़त वाली) मजलिस वोह है जिस में क़िब्ले की त़रफ़ मुंह किया जाए।[6]

2. हर शै के लिए शरफ़ (यानी बुज़ुर्गी) है और मजलिस (यानी बैठने) का शरफ़ येह है कि उस में क़िब्ले की सम्त मुंह किया जाए।[7]

3. हर शै के लिए सरदारी है और मजालिस की सरदारी उस में क़िब्ले को मुंह करना है।[8]

मजलिस में पांव न फैलाते

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बैठने के अन्दाज़ में से येह भी था कि आप अपने हम नशीनों के सामने पांव फैला कर तशरीफ़ फ़रमा न होते थे। हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने अस्ह़ाब के दरमियान कभी पांव फैलाए हुए नहीं देखा गया।[9]

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने हम मजलिसों के सामने अपने पांव नहीं फैलाते थे, बल्कि उन की ताज़ीमो तकरीम के पेशे नज़र ऐसा करने से इज्तिनाब फ़रमाते थे।[10]

इस से मालूम हुवा कि मजलिस में बैठते वक़्त अपने साथ बैठने वालों के अदबो एह़तिराम का ख़याल रखना चाहिए और बिला ज़रूरत उन के सामने पांव फैलाने से बचना चाहिए। बिलख़ुसूस उ़लमाए किराम, वालिदैन, असातिज़ा और बुज़ुर्गों की मजलिस में इस अदब का ज़ियादा एह़तिमाम करना चाहिए। (जारी है)

---

(1) دیکھئے: ابو داؤد، 4/297، حدیث: 4698 (2) دیکھئے: بخاری، 1/39، حدیث: 63 (3) الشمائل المحمدیۃ للترمذی، ص 191، حدیث: 319 (4) بخاری، 4/179، حدیث: 6270 (5) احیاء العلوم، 2/449 (6) معجم اوسط، 6/161، حدیث: 3861 (7) معجم کبیر، 10/320، حدیث: 10781 (8) معجم اوسط، 2/20، حدیث: 2354 (9) ترمذی، 4/221، حدیث: 2498 (10) شرح الطیبی، 11/37۔



मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइद, इ़बादात और मुआ़मलात के मुतअ़ल्लिक़ किये जाने वाले सुवालात के जवाबात अ़त़ा फ़रमाते हैं, उन में से 7 सुवालात व जवाबात ज़रूरी तरमीम के साथ यहां दर्ज किये जा रहे हैं।

1 लिबास में पैवन्द लगाना

सुवाल : क्या लिबास पर पैवन्द लगाना सुन्नत है?

जवाब : जी हां लिबास पर पैवन्द लगाना सुन्नते मुबारका है। ह़दीसे पाक में है : लिबास को उस वक़्त तक पुराना मत समझो जब तक उस में पैवन्द न लगा लो।(1787:حدیث،302/3،ترمذی:دیکھیے) मज़ीद येह कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से भी कपड़ों में पैवन्द लगाना साबित है। (171/59،تاریخ ابن عساکر-108/6،مراٰۃ المناجیح:دیکھیے) पैवन्द लगाना ऐसी सुन्नत नहीं है कि अगर कोई पैवन्द नहीं लगाएगा तो उसे मुजरिम क़रार दिया जाएगा। अब तो ह़ालात भी इतने बदल चुके हैं कि अगर कोई पैवन्द लगाएगा तो हो सकता है लोग उस पर बातें करें कि "इस के पास पैसा बहुत है लेकिन बस दिखाने के लिए पैवन्द लगाए फिरता है" या इस के इ़लावा हो सकता है और भी बहुत कुछ बोला जाए, ह़ालांकि मुसलमानों को बुराइयों, बद गुमानियों और गुनाहों से बचाना भी ज़रूरी है। अगर कोई सुन्नत पर अ़मल की निय्यत से लिबास की फटी हुई जगह पर पैवन्द लगाना ही चाहे तो बहुत अच्छा है कि कपड़े के उस ह़िस्से में लगा ले जहां किसी की नज़र न पड़े, जैसे पाजामे के फटे हुए उस ह़िस्से में पैवन्द लगा ले जो क़मीस में छुप जाता है कि अब येह पैवन्द का पैवन्द हो जाएगा और किसी भी त़रह़ की नुमाइश भी नहीं होगी।

(मदनी मुज़ाकरा, 13 मुह़र्रमुल ह़राम 1443 हि.)

2 नज़रे बद कब तक रहती है?

सुवाल : नज़रे बद का असर कितने अ़र्से तक रहता है?

जवाब : कभी ऐसा होता है कि नज़रे बद का असर ज़ाहिर ही नहीं होता और कभी ज़ाहिर होता है तो फ़ौरन चला जाता है जैसे कभी किसी से दम करवा लिया या ख़ुद ही अपने ऊपर दम कर लिया तो फ़ौरन ही नज़रे बद का असर चला जाता है, कभी ऐसा होता है कि नज़रे बद का असर इन्सान को बिस्तर तक ले जाता है और कभी क़ब्र तक। यूं नज़रे बद का असर ख़त्म होने का कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं है।

(मदनी मुज़ाकरा, 13 मुह़र्रमुल ह़राम 1443 हि.)

3 अमीरे अहले सुन्नत की बहारे शरीअ़त से मह़ब्बत

सुवाल : आप को सब से पहले बहारे शरीअ़त का तआ़रुफ़ कब हुवा?

जवाब : मेरी लड़कपन की उ़म्र थी और इतनी ज़ियादा समझ नहीं थी, हमारे अ़लाक़े की मस्जिद के इमाम साह़िब रोज़ाना एक आध मस्अला बयान किया करते थे जिस में मुझे मज़ा आता था। एक मरतबा ज़ोहर की नमाज़ के बाद किसी ने इमाम साह़िब से मस्अला पूछा तो मैं भी अपने बड़े भाई के साथ वहीं इमाम साह़िब के पास खड़ा था, इमाम साह़िब ने किसी को कहा कि "**बहारे शरीअ़त ले आओ।**" तो वोह बहारे शरीअ़त का कोई ह़िस्सा ले कर आए जिस पर एक ख़ूबसूरत टाइटल था और रंगीन सफ़ह़ा था, इमाम

साहिब ने उस किताब को खोला तो उस में "मस्अला, मस्अला" लिखा हुवा था, येह देख कर मेरे मुंह में पानी आ रहा था हालांकि उस वक़्त मुझे इतना भी शुऊ़र नहीं था कि येह किताब दुकान पर मिल जाती है, उस वक़्त इमाम साहिब ने उस शख़्स को मस्अला बता दिया और मुझे वोह किताब अच्छी लगी लेकिन मैं ग़रीब घराने का एक बच्चा था किताब कहां से ख़रीदता ! ! फिर जब मुझे मज़ीद शुऊ़र आया तो मैं ने बहारे शरीअ़त के 17 हिस्से ख़रीदे। अब येह मुझे याद नहीं कि पूरा सेट एक साथ ख़रीदा या कुछ कुछ हिस्से कर के ख़रीदी। اَلْحَمْدُلِلّٰہ मैं ने "बहारे शरीअ़त" से बहुत ज़ियादा नफ़ा उठाया है यहां तक कि कहने वालों ने तो इतना मुबालग़ा कर दिया कि "**इल्यास क़ादिरी बहारे शरीअ़त का हाफ़िज़ है**" हालांकि ऐसा हरगिज़ नहीं है, मैं न पहले बहारे शरीअ़त का हाफ़िज़ था और न अब हूं, अलबत्ता मुझे बहारे शरीअ़त से महब्बत है मैं इस किताब का दर्स देता था और इस दर्स का एलान ख़ुद लिख कर चार पांच किलो मीटर पैदल चल कर अख़बार के ऑफ़िस जाता था और उन्हें देता था कि येह एलान छाप दो कि फ़ुलां जगह बहारे शरीअ़त का दर्स होगा।

(मदनी मुज़ाकरा, 2 ज़ुल क़ादतुल हराम 1442 हि.)

4 हिन्द में उ़लमाए बिहार की बहार

सुवाल : क्या आप कभी "बिहार" (हिन्द) में तशरीफ़ लाए हैं ?

जवाब : मैं अभी तक "बिहार" (हिन्द) नहीं जा सका। अलबत्ता मुझे येह मालूम है कि "बिहार" पूरे हिन्द को उ़लमा सप्लाई करता है हिन्द के बहुत से उ़लमा बिहार से होते हैं। बिहार के मुसलमान इ़ल्मे दीन से महब्बत करते हैं, अपने बच्चों को उ़लमा व इमाम बनाते हैं। ह़ज़रते मुफ़्ती वक़ारुद्दीन साहिब رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का तअ़ल्लुक़ "बिहार" से है, मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साहिब رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ भी "बिहार" से हैं, ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत मुफ़्ती ज़फ़रुद्दीन बिहारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ जिन्हों ने "सह़ीहुल बिहारी" और "**ह़याते आला ह़ज़रत**" लीखी हैं, इन के फ़तावा का मज्मूआ भी छपा हुवा है, येह भी बिहारी हैं। (मदनी मुज़ाकरा, 7 ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम 1442 हि.)

5 ज़ख़्मी शख़्स की दुआ क़बूल होती है ?

सुवाल : सुना है कि "अगर किसी को चोट लग जाए उस वक़्त दुआ मांगनी चाहिए क्यूंकि उस वक़्त दुआ क़बूल होती है।" येह बात कहां तक दुरुस्त है ?

जवाब : क़ुरआने पाक में है : ﴿اَمَّنْ یُّجِیْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَ یَكْشِفُ السُّوْٓءَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : या वोह बेहतर जो मजबूर की फ़रियाद सुनता है जब वोह उसे पुकारे और बुराई टाल देता है। (پ20، النمل: 62) यानी अल्लाह पाक लाचार, मजबूर, मुज़्तर यानी बेक़रार की दुआ क़बूल फ़रमाता है। किसी शाइ़र ने चोट लगने के बारे में क्या ख़ूब कहा है कि

मरने की त़रफ़ देख न जीने की त़रफ़ देख
जब चोट लगे दिल पे मदीने की त़रफ़ देख

(मदनी मुज़ाकरा, 25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1443 हि.)

6 नौ चन्दी जुमेरात की ह़क़ीक़त

सुवाल : नौ चन्दी जुमेरात की क्या ह़क़ीक़त है ?

जवाब : चांद के महीने की पहली जुमेरात को नौ चन्दी जुमेरात कहते हैं। बुज़ुर्गों से इस के बारे में जो मुख़्तलिफ़ औराद मन्क़ूल हैं कि पहली जुमेरात को येह पढ़ना है और दूसरी जुमेरात को येह पढ़ना है तो उस में कोई ह़रज नहीं है, इसी त़रह़ बाज़ लोग पहली जुमेरात को मज़ाराते औलिया पर ह़ाज़िरी देते हैं इस में भी कोई ह़रज नहीं है, जब कि उन कामों को ज़रूरी न समझे।

(मदनी मुज़ाकरा, 9 ज़ुल क़ादतुल ह़राम 1442 हि.)

7 मकान बेचते वक़्त पंखे उतारना कैसा ?

सुवाल : अगर किसी ने मकान बेचा तो जो पंखे वग़ैरा होते हैं क्या वोह भी उस की मिल्कियत है जिस को मकान बेचा है ?

जवाब : पंखे तो निकाल कर ले जाने का उ़र्फ़ है कि जो मकान बेचता है वोह पंखे निकाल कर ले जाता है, अलबत्ता अगर कोई अपनी मर्ज़ी से पंखे छोड़ देता है या मकान के साथ दे देता है तो येह भी ठीक है। (मदनी मुज़ाकरा, 4 जुमादल ऊला 1442 हि.)



दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दावते इस्लामी) मुसलमानों की शरई राहनुमाई में मसरूफ़े अमल है, तहरीरी, ज़बानी, फ़ोन और दीगर ज़राएअ से हज़ारहा मुसलमान शरई मसाइल दरयाफ़्त करते हैं, जिन में से तीन मुन्तख़ब फ़तावा ज़ैल में दर्ज किये जा रहे हैं।

1 क्या हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ सिर्फ़ ख़िलाफ़ते ज़ाहिरी में पहले नम्बर पर हैं ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि इस तरह का अक़ीदा रखने वाले का क्या हुक्म है कि ज़ाहिरी ख़िलाफ़त में हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ और बातिनी ख़िलाफ़त में हज़रते अली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ पहले नम्बर पर हैं।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

तमाम मुसलमानाने अहले सुन्नत का इज्माअ है कि जिस तरह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ ख़िलाफ़ते ज़ाहिरी में ख़लीफ़ा बिला फ़स्ल और सब से अफ़ज़ल हैं इसी तरह ख़िलाफ़ते बातिनी (विलायत रूहानियत) में भी बिला किसी तख़्सीस व इस्तिसना के आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ख़लीफ़ा बिला फ़स्ल और सब से अफ़ज़ल व अकमल हैं।

ज़ाहिरी व बातिनी ख़िलाफ़त की मज़्कूरा तक़्सीम बिदअती लोगों का मज़हब है, हज़रात ख़ुलफ़ाए अरबअ़ा बित्तरतीब नबिय्ये करीम की ज़ाहिरी व बातिनी हर दो ख़िलाफ़तों के जामेअ थे, और उन को दोनों ख़िलाफ़तें (ज़ाहिरी व बातिनी) हासिल थीं। लिहाज़ा जो शख़्स येह कहता है कि ज़ाहिरी ख़िलाफ़त में हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ और बातिनी ख़िलाफ़त में हज़रते अली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ पहले नम्बर पर हैं उस का येह क़ौल ख़िलाफ़े हक़ है और ऐसा शख़्स अहले सुन्नत से ख़ारिज गुमराह, बद्दीन है उस पर लाज़िम है कि उस से तौबा कर के दोबारा मस्लके हक़्क़ा अहले सुन्नत व जमाअ़त क़बूल करे।

एक इश्तिबाह का इज़ाला :

यहां एक अहम नुक़्ता समझना ज़रूरी है और वोह येह कि तमाम अहले सुन्नत का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि जो मक़ाम विलायत व रूहानिय्यत और क़ुर्बे रब्बानी जनाब सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को हासिल है, वोह मक़ाम, अम्बिया व मुर्सलीन عَلَیْہِمُ السَّلَام के बाद किसी भी इन्सान को हासिल नहीं, और इसी क़ुर्बे रब्बानी व मारिफ़ते नफ़्सानी के सबब जनाब सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ पूरी उम्मत पर अफ़ज़लिय्यते मुतलक़ा रखते हैं, अलबत्ता जनाब मौलल मुस्लिमीन हज़रते अली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को यहां एक जुज़्वी फ़ज़ीलत हासिल है जो दीगर अस्हाब को हासिल नहीं और वोह येह कि विलायत से जो फ़ैज़ान व हिदायत मख़्लूक़ को पहुंची और जो फ़ैज़ान पहुंचेगा, उस हिदायत व फ़ैज़ान के पेशवा मौला मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हैं, और

अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से फ़ैज़ाने विलायत की तक़्सीम आप ही के सिपुर्द है, और येह आप की ख़ुसूसिय्यत और तमाम सह़ाबए किराम पर जुज़्वी फ़ज़ीलत है जो ह़ज़रते सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की अफ़ज़लियते मुत़लक़ा के मनाफ़ी नहीं । इस से अक्सर बदमज़हब लोग सीधे साधें सुन्नियों को धोका देने की कोशिश करते हैं कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ जनाब सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से ख़िलाफ़ते बात़िनी व क़ुर्बे इलाही में अफ़ज़ल थे और जनाब अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ तो फ़क़त सियासी ख़लीफ़ा थे, उन का ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की इस ख़ुसूसिय्यते मरतबा तक्मील व इरशाद को ले कर ह़ज़रात शैख़ैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا पर अफ़ज़लियत का क़ौल करना बात़िल है, कि येह ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की एक जुज़्वी फ़ज़ीलत व ख़ास्सा है जो कि ह़ज़रात शैख़ैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا की अफ़ज़लियते मुत़लक़ा व फ़ज़्ले कुल्ली के बिल्कुल मनाफ़ी नहीं और येह एक ख़ुसूसिय्यत ही क्या ! जनाब अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के कई ऐसे ख़ुसूसी फ़ज़ाइल व कमालात हैं जो दूसरे किसी भी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ में नहीं लेकिन इस सब के बावुजूद जो विलायत व रूह़ानिय्यत व क़ुर्बे ख़ुदावन्दी जनाब सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को ह़ासिल है वोह मौला मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बल्कि तमाम सह़ाबए किराम से ज़ियादा है और येही मदार अफ़ज़लिय्यते मुत़लक़ा है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 एह़राम की ह़ालत में मूंछें काटना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि अगर मोह़रिम ने ह़ालते एह़राम में जान बूझ कर बिला उ़ज़्र अपनी आधी या पूरी मूंछ काट दी तो क्या ह़ुक्म है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

एह़राम की ह़ालत में जान बूझ कर बिला उ़ज़्र अपनी मूंछें काटना नाजाइ़ज़ो गुनाह है, नीज़ इस से एक "सदक़ा" भी वाजिब होता है। लिहाज़ा अगर किसी मोह़रिम ने ह़ालते एह़राम में जान बूझ कर बिला उ़ज़्र आधी, ख़्वाह पूरी मूंछें कटवा दी, तो उस पर उस गुनाह से तौबा करने के साथ साथ एक "**सदक़ा**" भी अदा करना लाज़िम होगा।

नोट : सदक़े की मिक़्दार एक सदक़ए फ़ित्र के बराबर है, यानी निस्फ़ साअ़ (एक किलो नौ सौ बीस ग्राम) गन्दुम या इस का आटा या सत्तू या एक साअ़ (तीन किलो आठ सौ चालीस ग्राम) ख़जूरें, मुनक़्क़ा या जौ या इस का आटा या सत्तू या इन में से किसी एक की क़ीमत किसी फ़क़ीरे शरई़ यानी मुस्तह़िक़्क़े ज़कात शख़्स को दें, चाहे ह़रम शरीफ़ में दे दें या अपने वत़न वापस आ कर यहां के किसी फ़क़ीर को दे दें। अलबत्ता अफ़ज़ल येह है कि ह़रम के फ़क़ीरों को ही दिया जाए। और सदक़ा जहां भी दे, बहरह़ाल क़ीमत उस मक़ाम के ह़िसाब से देनी होगी, जहां सदक़ा अदा करने वाला अदाएगी के वक़्त ख़ुद मौजूद हो।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 महर में चांदी देना मुक़र्रर हुवा हो तो बाद में उस के इ़वज़ रक़म से महर अदा करना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मेरी शादी के वक़्त एक सौ बत्तीस (132) तोला चांदी महर मुक़र्रर हुवा था अब मैं चांदी के बदले पैसे अदा करना चाहता हूं तो क्या येह जाइ़ज़ है ?

अगर जाइ़ज़ है तो निकाह़ के वक़्त चांदी की मालियत के एतिबार से पैसे अदा करने हैं या मौजूदा रेट के मुताबिक़ ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत के मुताबिक़ अगर आप चांदी के बदले पैसों में महर अदा करना चाहते हैं तो बीवी की रिज़ामन्दी से जिस रक़म पर इत्तिफ़ाक़ हो जाए वोह रक़म अदा कर सकते हैं कि महर में जो चीज़ मुक़र्रर हुई बाद में उस के इ़वज़ ख़िलाफ़े जिन्स कोई चीज़ देना सूरतन सुलह़ और मआ़नन बैअ़ में बाहमी रिज़ामन्दी ज़रूरी है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم





अस्लाफ़ के क़लम से

रसूलुल्लाह ﷺ और नमाज़

मुबल्लिग़े इस्लाम, ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत, आ़शिक़े इमामे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह अ़ब्दुल अ़लीम सिद्दीक़ी मेरठी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दीनी दुनियावी उ़लूम के जामेअ़, कई ज़बानों के माहिर, दर्जन से ज़ाइद कुतुब के मुसन्निफ़, शोला बयान ख़तीब, मुतअ़द्दद इदारों के बानी और तालीमाते इस्लाम में गहरी नज़र रखने वाले आ़लिमे दीन थे, आप ने दुनिया के कई ममालिक का सफ़र किया, आप की कोशिशों से साहिबे इक़्तिदार ह़ज़रात समेत तक़रीबन 50 हज़ार ग़ैर मुस्लिम दाइरए इस्लाम में दाख़िल हुए। आप 1310 हि. को मेरठ (यूपी) हिन्द में पैदा हुए और विसाल 22 ज़ुल ह़िज्जा 1374 हि. को मदीनए मुनव्वरा में हुवा, तदफ़ीन जन्नतुल बक़ीअ़ में की गई।[1]

ज़ेरे नज़र मज़्मून "**रसूलुल्लाह और नमाज़**" ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल अ़लीम सिद्दीक़ी मेरठी के उन्ही मआ़रिफ़ और इ़ल्मी जवाहिरात का एक शाहकार है, जिस में आप ने उम्मत के लिए इस अ़ज़ीम तोह़फ़े यानी नमाज़ की अहमियत को निहायत मुअस्सिर और दिलसोज़ अन्दाज़ में क़लमबन्द फ़रमाया है, मुलाह़ज़ा कीजिए!

ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुनिया में अपनी पैग़म्बरी का एलान फ़रमाने से पहले भी अल्लाह के साथ इस क़दर ध्यान लगाते थे कि उस बस्ती को छोड़ कर जहां बुतों के पुजारी दुनिया की हर क़िस्म की गन्दगी में मुब्तला रहते हैं। दो दो तीन दिन का नाश्ता अपने साथ ले कर, एक पहाड़ के ग़ार में तन्हा जा बैठते वहां ठहर कर अपने अल्लाह से ध्यान लगाते और उस से दुआएं करते। इसी ह़ाल में एक दिन वहीं बैठे थे कि ख़ुदा की त़रफ़ से उस के सब से बड़े फ़िरिश्ते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام आस्मान से आए और ह़ुज़ूर से कहा कि पढ़िए आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं पढ़ा हुवा नहीं (चूंकि आप ने न कभी किसी दुनियवी उस्ताद से पढ़ा न किसी से लिखना सीखा) जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने फिर कहा कि "पढ़िए।" आप ने फिर वोही जवाब दिया। जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने येह सुन कर आप को गले लगाया, ख़ूब ज़ोर से दबाया और फिर छोड़ कर ख़ुदा के कलाम की येह आयतें आप को सुनाईं। ﴿اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ۪(۱)﴾ उस रब के नाम से पढ़िए जिस ने पैदा किया। ﴿خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ۪(۲)﴾ इन्सान को ख़ून से बनाया। ﴿اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ۪(۳) الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ۪(۴) عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْ۪(۵)﴾[2] पढ़िए आप का रब तो ऐसा करम करने वाला है कि उस ने क़लम के ज़रीए इन्सान को वोह सब कुछ सिखा दिया जो वोह न जानता था। इन आयतों को सुन कर आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी इसी त़रह उन को पढ़ा, इस के बाद जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने आप को नमाज़ पढ़ने का त़रीक़ा सिखाया, आप ने इसी त़रह नमाज़ पढ़ी, घर तशरीफ़ लाए और अपनी बीबी ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا को येह सारा ह़ाल सुनाया। वोह आप को अपने एक रिश्तेदार वरक़ा

बिन नौफ़ल के पास ले गईं। जो ख़ुदा की अगली किताबों का मुतालआ किया करते थे। उन्हों ने येह हाल सुनते ही कहा कि येह आने वाले जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام वोही हैं जो और नबियों, रसूलों के पास भी आते थे और इसी तरह ख़ुदा का कलाम लाते थे। अनक़रीब आप को ख़ुदा की तरफ़ से हुक्म मिलेगा कि आप ख़ुदा का येह कलाम उस के बन्दों को सुनाएं और ख़ुदा की इबादत का येह तरीक़ा जो अल्लाह ने आप को बताया है, दूसरों को भी सिखाएं। उस वक़्त मक्का के लोग आप को बहुत सताएंगे। इस लिए कि आप उन को बुतों की पूजा से मना फ़रमा कर उन के सर को ख़ुदा के सामने झुकाएंगे। मैं तो बहुत बूढ़ा हो गया हूं काश उस वक़्त तक ज़िन्दा रहता तो आप की मदद करता। आप की बीबी हज़रते ख़दीजा उसी वक़्त मुसलमान हो गईं और आप से नमाज़ का तरीक़ा सीख कर ख़ुदा की इबादत में वोह भी मश्ग़ूल हुईं।

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللّٰه وَسَلَّم عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

बिशारत हो नबी आए हमारे रहनुमा बन कर !
हबीबे किब्रिया हो कर शफ़ीए दोसरा बन कर
कहे येह किस तरह कोई नबी आए ख़ुदा बन कर
मगर हां ! आए उस की ज़ात ही का आईना बन कर
अगर चश्मे बसीरत है रसूलुल्लाह को देखो
हुवा है जल्वा गर नूरे ख़ुदा नूरुल हुदा बन कर
कहां हैं तिश्नगाने दीदे हक़ उन की तसल्ली को
येह आया अक्स नूरे हक़ जमाले मुस्तफ़ा बन कर
मुहम्मद मुस्तफ़ा नूरे ज़ुहूर कन्ज़ मख़्फ़ी हैं
हिदायत के लिए आए नबिय्युल अम्बिया बन कर
गुनहगारो चलो ख़ुश हो बड़ी तक़दीर है अपनी
कि वोह आए शफ़ीउल मुज़्निबीन साहिबे लिवा बन कर
ज़बां खुलती नहीं मुख़्तार की शर्मे मआसी से
दिल महजूर ख़ुद हाज़िर है अर्ज़े मुद्आ बन कर

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللّٰه وَسَلَّم عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

नमाज़ का बयान

आप को इस नमाज़ में ऐसा लुत्फ़ आता था कि सारी सारी रात ख़ुदा की इबादत में गुज़ारते। उस के बहुत दिनों बाद पांच वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ हुईं और हमें तुम्हें पांच वक़्त की नमाज़ के लिए ताकीदी हुक्म दिया गया, मगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की येह हालत थी कि रात भर खड़े हुए नमाज़ पढ़ते। यहां तक कि आप के पैर भी सूज जाते, आज हमें फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ना दुश्वार मालूम होता है जिस के लिए इस क़दर ताकीद की गई कि हदीस में आया : जिस ने जान बूझ कर नमाज़ को छोड़ा उस ने दीन ही छोड़ दिया। उसे ख़ुदा से क्या वासिता रहा हमें फिर भी उस का ख़याल नहीं आता। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुदा की इबादत का येह सब से अच्छा नमूना हमें दिखाया कि ख़ुदा की इबादत इस तरह करो और ख़ुदा से अपना रिश्ता इस तरह जोड़ो।

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللّٰه وَسَلَّم عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

जलवा है ख़ास रहमते हक़ का नमाज़ में !
अनवारे क़ुदस का है नज़ारा नमाज़ में
जब हाथ उठाए बांध के निय्यत तू यूं समझ !
दोनों जहां से हाथ उठाया नमाज़ में
मौला से अपने मिलता है बन्दा नमाज़ में
उठ जाता है जुदाई का पर्दा नमाज़ में
आ पहुंचा ख़ास अपने शहंशाह के हुज़ूर !
जब बन्दा हाथ बांध के आया नमाज़ में
मत कर क़ज़ा नमाज़ खड़ी सर पे है क़ज़ा
सुन मालिके क़ज़ा का तक़ाज़ा नमाज़ में
गर क़ब्र की अन्धेरी से डरता है पढ़ नमाज़
है ज़ुल्मते लहद का उजाला नमाज़ में
बेदिल नमाज़ क्यूं न हो मेराजे मोमिनीन
पाता उरूजो क़ुर्ब है बन्दा नमाज़ में

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللّٰه وَسَلَّم عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

हक़ीक़ते नमाज़

इन्सान के वुजूद में दो चीज़ें हैं, एक जिस्म दूसरी रूह, जिस त़रह जिस्म को ग़िज़ाओं की ज़रूरत इसी त़रह रूह को भी ग़िज़ा की ह़ाजत, जिस्म की ग़िज़ा मुख़्तलिफ़ क़िस्म का खाना जिस का मज़ा सब से पहले ज़बान को मिलता है, इसी त़रह रूह की ग़िज़ा ख़ुदा की इ़बादत और ख़ुदा का ज़िक्र। इस की लज़्ज़त सब से पहले दिल पाता है इस लिए क़ुरआने पाक में फ़रमाया जाता है कि ﴿اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىٕنُّ الْقُلُوْبُ﴾[3] बेशक ख़ुदा के ज़िक्र से दिल इत्मीनान पाते हैं। नमाज़ ही से दिल आराम पाए। रूह को चैन मिले। पांच वक़्त की नमाज़ इसी लिए फ़र्ज़ की गई कि दिन रात में कम अज़ कम पांच बार लाज़िमी त़ौर पर येह ग़िज़ा रूह को पहुंचाई जाए। अगर न पहुंचाई जाएगी तो रूह में भी इसी त़रह कमज़ोरी पैदा होगी जैसी जिस्म को खाना न पहुंचने के सबब होती है। आप को तजरिबा है कि दिन रात में जो औक़ात हम ने खाने के लिए मुक़र्रर किए हैं उन में से एक वक़्त भी अगर खाना न मिले तो हमारा क्या ह़ाल हो जाता है और अगर इस त़रह लगातार चन्द वक़्त बे खाए गुज़र जाते हैं तो क्या नौबत पहुंचती है कि चलना, फिरना, हिलना जुलना भी दुश्वार हो जाता है। इसी त़रह बार बार नमाज़ के छोड़ने और ख़ुदा के ज़िक्र की ग़िज़ा रूह को न पहुंचाने के सबब रूह़ानी फ़ाक़ा से रूह भी इस क़दर कमज़ोर हो जाती है कि किसी नेक काम की क़ुव्वत नहीं मालूम होती। वाज़ में दिल नहीं लगता, वज़ीफ़ा पढ़ने बैठते हैं तो दिल घबराता है। हां गाने बाजे, खेल कूद और फ़ुज़ूल कामों में दिलचस्पी होती है। न नींद है न कस्ल, इस की वजह अस्ल में येही है कि हम ने नमाज़ें छोड़ कर ख़ुदा के ज़िक्र से ग़ाफ़िल रह कर अपनी रूह को कमज़ोर बना दिया है जैसे कमज़ोर बदन भारी काम से घबराता है। कमज़ोरी के सबब अब येह काम रूह पर भी बार मालूम होते हैं।

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَسَلَّمَ عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

ऐ फ़ख़्रे रुसुल शहे हर दो सरा, करो क़ैदे अलम से जल्द रिहा
मुझे रंजो फ़िक्र ने घेर लिया मेरे दर्दे दिल की तुम्हीं हो, दवा
रहे ज़ौक़े इ़बादत दिल में मेरे, इसी शौक़ में हो अन्जाम मेरा
कोई ह़ारिज राहे ख़ैर न हो, करूं गोशे में बैठ के यादे ख़ुदा
न मैं तालिबे दौलते दुनिया हूं, न इमारत व ऐ़श की ख़्वाहिश है
तेरी उल्फ़त में दीवाना रहूँ, मुझे त़ालिबे सादिक़ अपना बना
तेरे इ़श्क़ में ऐ महबूबे ख़ुदा, मेरी उ़म्रे अ़ज़ीज़ गुज़र जाए !
न किसी की महब्बत दिल में रहे, न किसी से तअ़ल्लुक़ होवे मेरा
कोई मूनिस हाले ज़ार नहीं, मेरी जान ह़ज़ीं है और ग़म है
करूं किस से मैं शिक्वा जोरे फ़लक, मेरी कौन सुनेगा तेरे सिवा
मैं बशर हूं भला क्यूं कर झेलूं, ये सितम ये जफ़ा ये रंजो अलम
मुझे चैन से रहना मुश्किल है, मेरा ज़ब्त पे भी क़ाबू न रहा
करो मुझ पे निगाहे करम जो शहा, अभी बिगड़ी हुई बन जाए मेरी
हुवा अशरफ़ी मिस्कीं के लिए दौरान आमादा जो रोजफ़ा[4]

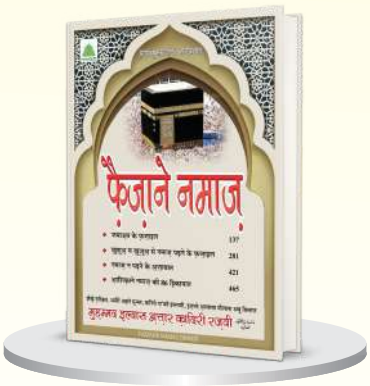
صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَسَلَّمَ عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

---

(1) माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, ज़ुल ह़िज्जा 1438 हि. /सितम्बर 2017 ई, स. 43, मज़्मून : अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए

(2) پ30، العلق:1 تا 5 (3) پ13، الرعد:28

(4) तबर्रुकाते आ़लमी मुबल्लिग़े इस्लाम, स. 29 ता 33



बा जमाअ़त नमाज़ के फ़ज़ाइल, ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ पढ़ने के फ़ज़ाइल और नमाज़ न पढ़ने के अ़ज़ाबात वग़ैरा के बारे में जानने के लिए आज ही मुत़ालआ़ कीजिए।



ज़िन्दगी का बाग़

एक दिन बादशाह ने अपने तीन वुज़रा को दरबार में बुलाया और तीनों को एक एक थैला दे कर हुक्म दिया कि बाग़ में जाओ और वहां से मेरे लिए मुख़्तलिफ़ अच्छे अच्छे फल जमा करो। वुज़रा बादशाह के इस अ़जीब हुक्म पर ह़ैरान थे मगर क्या करते बादशाह का हुक्म था लिहाज़ा थैला पकड़ कर अलग अलग बाग़ में दाख़िल हो गए। पहले वज़ीर ने कोशिश की, कि बादशाह के लिए उस की पसन्द के मज़ेदार और ताज़ा फल जमा करे चुनान्चे उस ने काफ़ी मेह़नत के बाद बेहतरीन और ताज़ा फलों से थैला भर लिया।

दूसरे वज़ीर ने ख़याल किया कि बादशाह एक एक फल का ख़ुद तो जाइज़ा नहीं लेगा कि कैसा है और न ही फलों में फ़र्क़ देखेगा। इस लिए उस ने बग़ैर देखे जल्दी जल्दी हर क़िस्म के ताज़ा कच्चे और गले सड़े फलों से अपना थैला भर लिया।

तीसरे वज़ीर ने सोचा कि बादशाह की तवज्जोह सिर्फ़ भरे हुए थैले पर होगी, उस के अन्दर क्या है, उसे नहीं देखेगा। येही सोच कर वज़ीर ने थैले में घास फूस और पत्ते भर लिए यूं मेह़नत से बच गया और वक़्त भी बचा लिया।

दूसरे दिन बादशाह ने तीनों वुज़रा को अपने थैलों समेत दरबार में ह़ाज़िर होने का हुक्म दिया। जब तीनों दरबार में ह़ाज़िर हुए तो बादशाह ने थैले खोल कर भी न देखे और हुक्म दिया कि तीनों को उन के थैलों समेत एक महीने के लिए दूर दराज़ जेल में क़ैद कर दो। अब उस दूर दराज़ जेल में तीनों के पास खाने पीने के लिए कुछ नहीं था, सिवाए उस थैले के जो उन्हों ने जमा किया था।

अब पहला वज़ीर जिस ने अच्छे अच्छे फल चुन कर जमा किए थे, वोह मज़े से अपने जमा किए हुए फलों पर गुज़ारा करता रहा। यहां तक के एक महीना ब आसानी गुज़र गया। और दूसरा वज़ीर जिस ने बग़ैर देखे ताज़ा ख़राब तमाम फल जमा किए थे, उस के लिए बड़ी मुश्किल पेश आई कुछ दिन तो ताज़ा फल खा लिए लेकिन फिर कच्चे और गले सड़े फल खाने पड़े, जिस से वोह बहुत ज़ियादा बीमार हो गया और उसे बहुत तक्लीफ़ उठानी पड़ी। और तीसरा वज़ीर जिस ने अपने थैले में सिर्फ़ घास फूस ही जमा की थी। वोह कुछ दिन बाद ही भूक से मर गया क्यूंकि उस के पास खाने को कुछ न था।

कहानी से ह़ासिल होने वाला सबक़

हमें अपनी दुनिया की ज़िन्दगी को बेहतर बनाने के लिए सब से पहले अपनी सोच दुरुस्त करनी चाहिए, क्यूंकि इन्सान जैसी सोच रखता है, उ़मूमन वैसे ही फ़ैसले करता है। पहले वज़ीर ने अच्छी सोच के साथ मेह़नत की तो उस ने बेहतरीन फल जमा किए और बाद में उसी का फ़ायदा पाया, जब कि दूसरे और तीसरे वज़ीर की ग़लत सोच ने उन्हें नुक़्सान पहुंचाया। लिहाज़ा हमें भी हर काम को संजीदगी से सोच समझ कर करना चाहिए और वक़्ती आसानी या

फ़ायदे की ख़ातिर ग़लत रास्ता इख़्तियार नहीं करना चाहिए।

❁ इस हिकायत से येह भी सबक़ मिलता है कि मेहनत से बचने की कोशिश बज़ाहिर वक़्ती आराम तो दे सकती है, मगर बाद में नुक़्सान का सबब बन सकती है। तीसरे वज़ीर ने मेहनत से बचने और वक़्त बचाने के लिए थैले में घास फूस भर ली, लेकिन येही आसानी बाद में उस की हलाकत का सबब बन गई। लिहाज़ा हमें ज़िन्दगी में सुस्ती से बचना चाहिए और कामयाबी के लिए मेहनत, कोशिश और ज़िम्मेदारी के साथ अपने काम अन्जाम देने चाहिएं।

❁ हमें अपने आज के कामों के मुस्तक़बिल के नताइज पर भी ग़ौर करना चाहिए। बहुत से काम ऐसे होते हैं जिन में इब्तिदा में मेहनत और मशक़्क़त महसूस होती है, लेकिन बाद में वोही मेहनत फ़ायदा देती है। इस लिए तालीम, रोज़गार, कारोबार और ज़िन्दगी के दूसरे मुआमलात में सिर्फ़ फ़ौरी आसानी को न देखें बल्कि सोचें कि हमारा आज का फ़ैसला कल हमारी ज़िन्दगी पर क्या असर डालेगा।

हम ख़ुद से पूछें कि हम क्या जमा कर रहे हैं? हम इस वक़्त इस बाग़ (यानी दुनिया) में हैं। जहां से हम चाहें तो नेक आमाल अपने लिए जमा कर लें और चाहें तो ख़राब आमाल?

लेकिन जब बादशाहे हक़ीक़ी (अल्लाह पाक) का हुक्म होगा, तो हमें अपनी जेल (यानी क़ब्र) में डाल दिया जाएगा। उस जेल में हम अकेले होंगे जहां हमारे साथ सिर्फ़ हमारे आमाल की थैली होगी।

प्यारे इस्लामी भाइयो! ज़रा ग़ौर कीजिए! बाग़ में फल जमा करने के लिए तीनों वज़ीरों के पास एक ही वक़्त, एक ही बाग़ और एक ही थैला था, मगर हर एक ने अपनी सोच के मुताबिक़ उसे भरा। हमारी ज़िन्दगी भी कुछ ऐसी ही है। अल्लाह पाक ने हम सब को ज़िन्दगी की एक महदूद मुद्दत दी है, हर दिन का एक ही वक़्त दिया है, मगर कोई उसी वक़्त को नेकी में लगा कर अपनी आख़िरत संवार रहा है और कोई उसे बेफ़ायदा कामों में गुज़ार कर ख़ाली हाथ हो रहा है। याद रखिए! सिर्फ़ बड़े बड़े नेक काम ही हमारे आख़िरत के थैले में जमा नहीं होते, बल्कि हमारी रोज़ मर्रा की छोटी छोटी बातें भी इस में शामिल होती रहती हैं। किसी मुसलमान को मुस्कुरा कर देखना, किसी परेशान शख़्स की मदद करना, किसी की ग़लती मुआफ़ कर देना, वालिदैन का दिल ख़ुश कर देना, किसी को अच्छी बात बताना, रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ हटा देना, बल्कि किसी को तक्लीफ़ देने से सिर्फ़ इस लिए रुक जाना कि अल्लाह पाक नाराज़ न हो, येह सब हमारे लिए नेकी का सामान बन सकता है। इसी तरह एक झूट, किसी की बुराई, बिला वजह किसी का दिल दुखाना, फ़ुज़ूल बातों में वक़्त ज़ाएअ करना और गुनाह को मामूली समझना भी हमारे थैले में जमा होता रहता है। इस लिए हमें सिर्फ़ येह नहीं देखना कि हम ने आज क्या किया? बल्कि येह भी देखना चाहिए कि आज हम ने अपने थैले में क्य जमा किया? क्यूंकि दिन गुज़रने के साथ ज़िन्दगी भी कम हो रही है और थैला भी भरता जा रहा है।

इस वाक़िए का एक और बड़ा सबक़ येह है कि इन्सान को अपने कल की फ़िक्र आज ही करनी चाहिए। पहले वज़ीर ने बाग़ में मेहनत की, मगर बाद में उसी मेहनत ने उसे मुश्किल वक़्त में फ़ायदा दिया, दूसरे ने अच्छी और बुरी चीज़ में फ़र्क़ न किया तो बाद में वोही बुरी चीज़ें उस के लिए परेशानी बन गईं, जब कि तीसरे ने मेहनत से बचने के लिए थैला ऐसी चीज़ों से भर लिया जिन का कोई फ़ायदा न था, फिर वक़्त आने पर अपनी जान से भी हाथ धो बैठा। हमारी ज़िन्दगी में भी बहुम से काम ऐसे हैं जिन का फ़ायदा फ़ौरन नज़र नहीं आता, लेकिन क़ियामत के दिन उन की हक़ीक़त सामने आएगी। मुम्किन है आज नमाज़ के लिए कारोबार छोड़ना, गुनाह से बचना, किसी से मुआफ़ी मांग लेना, हराम कमाई से बच जाना या अल्लाह पाक की रिज़ा के लिए अपनी ख़्वाहिश छोड़ देना हमें मुश्किल महसूस हो, लेकिन येही वोह चीज़ें हैं जो आख़िरत में हमारे काम आएंगी। इस के बरअक्स दुनिया में बाज़ गुनाह बहुत मामूली और लज़ीज़ महसूस होते हैं, मगर आख़िरत में उन का बोझ बहुत भारी हो सकता है। इस लिए हर काम से पहले एक लम्हा रुक कर सोचें : अगर येही काम मेरे आख़िरत के थैले में डाल दिया जाए तो क्या मैं क़ियामत के दिन उसे देख कर ख़ुश होउंगा? अगर जवाब **"हां"** है तो उसे कर लीजिए, और अगर जवाब "नहीं" है तो अभी वक़्त है, उसे छोड़ दिजिये। क्युंकि दुनिया में इन्सान अपने आमाल को बदल सकता है, लेकिन जब सांस बन्द हो गई तो फिर थैला बदलने का मौक़अ नहीं मिलेगा। आज दुनिया में नेकियों से अपने नामए आमाल का थैला भरना अगर्चे मुश्किल है मगर हमारी मौत के बाद क़ब्रो हश्र के लिए मुफ़ीद भी है। जब कि गुनाहों से थैला भरना अगर्चे आसान हो मगर मरने के बाद बड़ी परेशानी और दुश्वारी का सबब है।



(क़िस्त : 02)

इस्लाम और शख़्सी निखार

अल्लाह करीम ने इस्लामी तालीमात को ऐसी आ़लमगीर वुस्अ़त, गहराई व गीराई बख़्शी है कि उस में अपने मानने वालों की शख़्सिय्यत के निखार के लिए एक मज़बूत व फ़ायदेमन्द तरबियती निज़ाम मौजूद है, इस निज़ाम में दिल की निगरानी भी है, अ़मल की पाबन्दी भी, नफ़्स की तरबियत भी, सोहबत का इन्तिख़ाब भी, आ़दात की इस्लाह़ भी और मुसल्सल ख़ुद एह़तिसाबी भी। गोया इस्लाम इन्सान को सिर्फ़ मन्ज़िल नहीं बताता बल्कि मन्ज़िल तक पहुंचने के रास्ते भी दिखाता है इस लिए कि शख़्सी निखार इत्तिफ़ाक़न पैदा नहीं होता बल्कि इसे तरबियत के ज़रीए शुऊ़री त़ौर पर पैदा किया जाता है। यानी इस्लाम सिर्फ़ येह नहीं कहता कि अच्छे बन जाओ, बल्कि वोह अच्छा बनने के ज़राएअ़ और रास्ते भी देता है। याद रहे कि शख़्सिय्यत का निखार महज़ एक ख़ूबसूरत ख़्वाहिश नहीं कि इन्सान चाहे और अचानक उस के मिज़ाज, आ़दात और किरदार में इन्क़िलाब आ जाए। शख़्सिय्यत बनती भी है, बिगड़ती भी है और संवरती भी है। इन्सान के रोज़ मर्रा मामूलात, उस की सोहबत, उस की सोच, उस के रद्दे अ़मल, उस के फ़ैसले और बार बार दोहराई जाने वाले आमाल रफ़्ता रफ़्ता उस की शख़्सिय्यत को मुतअ़य्यन करते हैं। इसी लिए अगर कोई शख़्स अपने आप को बेहतर बनाना चाहता है तो उसे सिर्फ़ येह जान लेना काफ़ी नहीं कि अच्छा इन्सान कैसा होता है, बल्कि येह भी जानना ज़रूरी है कि अच्छा इन्सान बनने के लिए अ़मली त़ौर पर क्या किया जाए? बाज़ औक़ात थ्योरी मौजूद होती है और जब उस का प्रैक्टीकल किया जाए तो नतीजा वोह ह़ासिल नहीं होता जिस के लिए प्रैक्टीकल किया गया था, लेकिन इस्लाम को अल्लाह पाक ने ऐसी उजली और निखरी तालीमात अ़ता फ़रमाई हैं कि जब जब, जहां जहां उन्हें अपनाया गया है नतीजा हमेशा दो और दो चार की त़रह़ ऐसा साफ़ वाज़ेह़ नज़र आता है जैसे आफ़ताबे नीमरोज़ रौशन व ज़ाहिर होता है।

सोच और फ़िक्र का निखार

इन्सान की शख़्सिय्यत का सब से अहम पहलू उस की सोच है। इन्सान जैसा सोचता है, वैसा ही देखता, समझता और बिल आख़िर वैसा ही अ़मल करता है। इसी लिए अगर शख़्सिय्यत की तामीर मत़लूब हो तो सिर्फ़ आ़दात और ज़ाहिरी रवय्यों की इस्लाह़ काफ़ी नहीं बल्कि फ़िक्र की इस्लाह़ भी ज़रूरी है। इस्लाम इन्सान को समझ कर मानने, ग़ौर कर के देखने और ह़िक्मत के साथ फ़ैसला करने वाला इन्सान बनाता है। येह इस्लाम ही है कि जो इन्सान को

जज़्बाती, सतही और अन्धी तक़्लीद वाली सोच से निकाल कर वहिए मतलू और वहिए ग़ैर मतलू (यानी क़ुरआनो हदीस) की रहनुमाई में ग़ौरो फ़िक्र, तदब्बुर, बसीरत और हिक्मत वाली शख़्सिय्यत बनाता है। वोह जब जब क़ुरआने पाक की तिलावत करता है तो اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ، اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ، لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ जैसी आयात उस की सोच और फ़िक्र को मज़बूती अ़ता करती और उस में ऐसी बसीरत पैदा करती हैं कि वोह हर चमकती हुई चीज़ को सोना नहीं समझता। हर मक़्बूल व मश्हूर बात को दुरुस्त नहीं मानता। हर वायरल ख़बर को सच नहीं समझता। हर शख़्स की राय को दलील का दर्जा नहीं देता बल्कि सोचता है, परखता है, तह़क़ीक़ करता है और फिर राय क़ाइम करता है। इस्लाम तौहीदो रिसालत की शहादत के ज़रीए सब से पहले मुसलमान के दिल को साफ़ करता है, जब दिल संवरता है तो सोच और फ़िक्र संवरती है, फ़िक्र संवरती है तो अ़मल संवरता है, फिर आ़दत बनती है, आ़दत किरदार बनाती है, किरदार शख़्सिय्यत बनाता है और निखरी हुई शख़्सिय्यात ही निखरे हुए मुआ़शरे तश्कील देती हैं।

अख़्लाक़ का निखार

इस्लामी तालीमात बन्दे को बा किरादर बनाती हैं, शख़्सी निखार अख़्लाक़ी निखार के बग़ैर अधूरा और नामुकम्मल है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: اِنَّمَا بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ صَالِحَ الْاَخْلَاقِ यानी मैं तो भेजा ही इस लिए गया हूं कि अच्छे अख़्लाक़ की तक्मील करूं। (مسند احمد، 14/513، حدیث:8952) याद रहे! अख़्लाक़ी निखार से मुराद इन्सान के अन्दर ऐसे अच्छे औसाफ़, आ़दात और रवय्यों का पैदा होना है जो उसे अपने रब के साथ, अपनी ज़ात के साथ और दूसरे इन्सानों के साथ बेहतर तअ़ल्लुक़ क़ाइम करने के क़ाबिल बनाएं। इस में सिर्फ़ "**अच्छा बरताव**" शामिल नहीं बल्कि इन्सान की पूरी अख़्लाक़ी शख़्सिय्यत शामिल है। अ़क़्लो शुऊ़र रखने वाला हर आदमी जानता है कि इ़ल्म इन्सान को मुम्ताज़ कर सकता है, माल उसे ख़ुशह़ाल बना सकता है, मन्सब उसे बा असर बना सकता है और ज़ाहिरी वजाहत उसे लोगों की निगाहों में नुमायां कर सकती है मगर दिलों में जगह बनाने, एतिमाद ह़ासिल करने और दूसरों के लिए बाइ़से सुकून बनने की सलाह़िय्यत उ़मूमन हुस्ने अख़्लाक़ ही अ़ता करता है। सच्चाई, अमानत, वफ़ाए अ़हद, ह़या, तवाज़ोअ़, ह़िल्म, सब्र, अ़फ़्वो दरगुज़र, सख़ावत, ईसार, रह़म व शफ़क़त, ख़ैरख़्वाही, हुस्ने ज़न, अ़दलो इन्साफ़ और हुक़ूक़ुल इ़बाद की पासदारी जैसे औसाफ़ जब इन्सान के मिज़ाज का ह़िस्सा बन जाते हैं तो उस की शख़्सिय्यत में एक ऐसा निखार पैदा होता है जो ज़ाहिरी आराइश से कहीं ज़ियादा देर पा और मुअस्सिर होता है। अच्छा अख़्लाक़ इन्सान को सिर्फ़ दूसरों के लिए मह़बूब नहीं बनाता बल्कि उसे अपने नफ़्स पर क़ाबू पाने, जज़्बात को मुतवाज़िन रखने और मुख़्तलिफ़ ह़ालात में अपने वक़ार को बरक़रार रखने की सलाह़िय्यत भी अ़ता करता है। येही वजह है कि अख़्लाक़ी निखार को शख़्सी निखार का मह़ज़ एक ह़िस्सा नहीं बल्कि उस का नुमायां तरीन मज़हर कहा जा सकता है क्यूंकि इन्सान का बात़िन कितना ही संवरा हुवा क्यूं न हो उस की ख़ुश्बू दूसरों तक उस वक़्त पहुंचती है जब वोह उस के किरदार, गुफ़्तगू और मुआ़मलात में ज़ाहिर होती है। यूं अख़्लाक़ इन्सान की बात़िनी पाकीज़गी को उस के ज़ाहिर से जोड़ देता है और उस के वुजूद को अपने लिए भी बाइ़से सुकून और दूसरों के लिए भी बाइ़से ख़ैर बना देता है। यूं कह लीजिए कि ईमान इन्सान को अन्दर से संवारता है, इ़बादत उसे तरबियत देती है, और अच्छे अख़्लाक़ उस निखार को दूसरों के सामने किरदार की सूरत में ज़ाहिर करते हैं। इस्लाम ने अ़रब के लड़ाका, दुरुश्त रू, अखड़ और बदमिज़ाज लोगों को कैसे रश्के अ़रबो व अ़जम बनाया, वोह कौन सा निसाब था कि जिस ने उन्हें यक्सर बदल कर रख दिया, येह उजली और निखरी शख़्सियात किस लाहिअए अ़मल के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते थे जो आज ज़माना उन की मिसालें पेश करता है

इसी सरीउ़ल असर निसाब की एक झलक मुलाह़ज़ा कीजिए ताकि हमें इस बात का यक़ीन हो जाए कि अगर हम शख़्सी निखार चाहते हैं तो इस्लामी तालीमात को अपनाना पड़ेगा।

शख़्सी निखार का इस्लामी निसाब

जब नज्जाशी बादशाह ने मुसलमानों से पूछा : वोह कौन सा दीन है जिस की वजह से तुम अपनी क़ौम से बिछड़ गए (यानी हिजरत कर आए) न मेरे दीन में दाख़िल हुए और न ही उन उम्मतों में से किसी का दीन क़बूल किया ? तो मुसलमानों की त़रफ़ से ह़ज़रते जाफ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने नज्जाशी से गुफ़्तगू की और फ़रमाया : ऐ बादशाह ! हम जाहिल थे। बुतों को पूजते, मुर्दार खाते, फ़वाह़िश व बेहूदगी का इर्तिकाब करते थे। क़त़ए रेह़मी व अमान को तोड़ना हमारा शेवा था। त़ाक़तवर, कमज़ोर के ह़ुक़ूक़ ग़स्ब कर लेते थे। हम इन्ही गुमराहियों में भटक रहे थे कि अल्लाह पाक ने हमारे दरमियान एक रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मबऊ़स फ़रमाया। हम उन के नसब, सच्चाई, अमानतदारी और पाकदामनी को ख़ूब अच्छी त़रह़ जानते हैं। उन्हों ने हमें अल्लाह करीम की वह़दानिय्यत व इ़बादत की त़रफ़ बुलाया और ह़ुक्म दिया कि हम सिर्फ़ एक ख़ुदा की इ़बादत करें और उन माबूदों को छोड़ दें जिन की हम और हमारे आबाओ अज्दाद परस्तिश करते थे। नीज़ हमें सच बोलने, अमानत अदा करने, सिलए रेह़मी और पड़ोसी से अच्छा सुलूक करने, ह़राम कर्दा चीज़ों से बाज़ रहने और ख़ून रेज़ी से रुकने का ह़ुक्म दिया, बेह़याई, झूट, यतीम का माल खाने और पाकदामन पर तोहमत लगाने से मना फ़रमाया। उन्हों ने हमें ह़ुक्म दिया कि हम सिर्फ़ अल्लाह पाक की इ़बादत करें, उस के साथ किसी को शरीक न ठहराएं नीज़ उन्हों ने हमें नमाज़ पढ़ने, ज़कात अदा करने और रोज़ा रखने का ह़ुक्म दिया। इसी त़रह़ ह़ज़रते जाफ़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने मुतअ़द्दद इस्लामी उमूर बयान करने के बाद फ़रमाया : पस हम ने इन की तस्दीक़ की और इन पर ईमान ले आए और वोह अह़काम जो अल्लाह की त़रफ़ से लाए उन की इत्तिबाअ़ की। और हम ने सिर्फ़ अल्लाह की इ़बादत की और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराया। जिस चीज़ को उस ने हम पर ह़राम किया हम ने उसे ह़राम जाना और जिस को ह़लाल किया उसे ह़लाल जाना। पस इस बात पर क़ौम हमारी दुश्मन बन गई। उन्हों ने हमें त़रह़ त़रह़ से सताया और दीन के मुआ़मले में आज़माइश से दोचार किया ताकि हम अल्लाह पाक की इ़बादत छोड़ कर झूटे माबूदों को पूजना शुरूअ़ कर दें और ख़बाइस को दोबारा ह़लाल समझें जब उन्हों ने हमें ह़द से ज़ियादा सताया, मज़ालिम ढाए, हमारी राहें तंग कर दीं, हमारे और हमारे दीन के दरमियान ह़ाइल हो गए, तब हम तुम्हारे मुल्क की त़रफ़ निकल आए। ऐ बादशाह ! इस उम्मीद पर कि तेरी पनाह में हम पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा, हम ने दूसरों को छोड़ कर तेरा मुल्क पसन्द किया और तेरे पड़ोस को तरजीह़ दी। ह़ज़रते जाफ़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने मज़ीद भी गुफ़्तगू फ़रमाई जिसे सुन कर नज्जाशी बादशाह ने अपनी एक ख़्वाहिश का यूं इज़्हार किया : मैं गवाही देता हूं कि बेशक ! ह़ज़रत मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) अल्लाह के वोही रसूल हैं जिन की बिशारत ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने इन्जील मुक़द्दस में दी और अगर मैं दस्तूरे सल्तनत के मुताबिक़ तख़्ते शाही पर रहने का पाबन्द न होता तो मैं ख़ुद मक्कए मुकर्रमा जा कर उस आख़िरी नबी (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की नालैन शरीफ़ सीधी करता और उन के मुबारक क़दम धोता।(مسند احمد، 37/170، حدیث: 22498 مختصراً)

ह़ज़रते जाफ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के इस ख़ुत्बे ने इस्लाम का पूरा निसाब बयान कर दिया है कि जो शख़्सी निखार की असास और बुनियाद है इस लिए सोच, फ़िक्र, अख़्लाक़ व किरदार की पाकीज़गी के लिए इस्लामी तालीमात पर अ़मल करें ताकि फ़र्द के निखार के साथ साथ मुआ़शरे में भी निखार आए।

जवानी



जवानी ज़िन्दगी का अहम तरीन हिस्सा है जिस में ज़िन्दगी के अहम तरीन काम सर अन्जाम दिए जाते हैं, जो लोग येह राज़ समझ जाते हैं वोह अपनी दुनिया और आख़िरत दोनों को बेहतर और कामयाब बना लेते हैं, और जो नादान ज़िन्दगी के इस अहम तरीन हिस्से को अहमिय्यत नहीं देता वोह एक तरफ़ अपनी दुनिया तबाह व ख़राब करता है तो दूसरी तरफ़ अपनी आख़िरत दाव पर लगा देता है, आइए ! देखते हैं कि दीने इस्लाम हमें जवानी की अहमिय्यत के बारे में क्या बताता है।

क़ुरआने पाक क्या फ़रमाता है ?

अल्लाह पाक ने जवानी को दो कमज़ोरियों के दरमियान रखा है, इरशादे बारी तआला है : ﴿اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّ شَیْبَةً ؕ یَخْلُقُ مَا یَشَآءُ ۚ وَ هُوَ الْعَلِیْمُ الْقَدِیْرُ(۵۴)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अल्लाह ही है जिस ने तुम्हें कमज़ोर पैदा फ़रमाया फिर तुम्हें कमज़ोरी के बाद क़ुव्वत बख़्शी फिर क़ुव्वत के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया। वोह जो चाहता है पैदा करता है, वोही इल्म वाला, बड़ी क़ुदरत वाला है।[1]

इस आयते मुबारका में इन्सान के मुख़्तलिफ़ अह़वाल को बयान फ़रमाया गया है कि पहले वोह मां के पेट में जनीन था फिर बच्चा हो कर पैदा हुवा और दूध पीता रहा। येह ह़ालतें निहायत कमज़ोरी की हैं, फिर बचपन की कमज़ोरी के बाद जवानी की क़ुव्वत व ताक़त अ़ता फ़रमाई गई, फिर इस क़ुव्वत के बाद एक बार फिर कमज़ोरी दी गई जिसे बुढ़ापा कहा जाता है, यहां जो दरमियानी ह़ालत यानी जवानी है उसे क़ुव्वत से ताबीर किया गया है और इस ह़ालत को दो कमज़ोरियों के दरमियान रखा गया है जिस से उस की अहमिय्यत का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़बैदा फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बालों में सफ़ेदी देखी तो फ़रमाया : ह़िल्म व बुर्दबारी और इ़ल्म को ख़ुश आमदीद और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने मुझे जवानी से सलामती के साथ गुज़ार दिया।[2]

जवानी के मुतअ़ल्लिक़ इरशादाते नबवी

जवानी के मुतअ़ल्लिक़ कसीर इरशादाते रसूल صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मौजूद हैं जिन में से बाज़ यहां दर्ज किए जाते हैं :

1 इरशाद फ़रमाया : اَلشَّبَابُ شُعْبَةٌ مِّنَ الْجُنُوْن यानी जवानी जुनून व पागलपन की एक शाख़ है।[3]

अन्दाज़ा लगा लीजिए कि जवानी को किस क़दर क़ाबू करने की ज़रूरत है, अगर इसे दुरुस्त सम्त में न रखा जाए तो येह पागलपन इन्सान की दुनिया व आख़िरत को तबाह कर देता है, इस जुनून की वजह से इन्सान बेहूदगियों, बेहयाइयों और मुआशरती बुराइयों का शिकार होता और बार बार शरमिन्दगी और अफ़सोस के गहरे गढ़े में गिरता है।

2 इरशाद फ़रमाया : अधेड़ उम्र वाले से अच्छा सुलूक करो और जवान पर रहम करो।[4]

वैसे तो हर इन्सान पर रहम करना और उस के साथ शफ़क़त से पेश आना चाहिए लेकिन जवान के साथ शफ़क़त व रहम का ख़ास सुलूक बरतने का हुक्म दिया गया। जवान की ताक़तो क़ुव्वत, ख़ून का जोश और भरपूर जज़्बा इस बात का तक़ाज़ा करता है कि उसे प्यार व महब्बत से समझाया जाए, ऐसा करेंगे तो नताइज ज़ियादा बेहतर हासिल होंगे क्यूंकि सख़्ती, बेजा रोक टोक और तन्ज़ के तीर जवान को बग़ावत व ना फ़रमानी पर उभारते हैं।

3 इरशाद फ़रमाया : बेहतरीन नौजवान वोह है जो तुम्हारे बूढ़ों से मुशाबहत इख़्तियार करे और बदतरीन बूढ़ा वोह है जो तुम्हारे जवानों से मुशाबहत अपनाए।[5]

यक़ीनन वोह नौजवान अच्छा है जो बूढ़े लोगों की तरह इबादतो रियाज़त और तक़्वा व तहारत की जानिब राग़िब है, लोग तो ज़ियादातर बुढ़ापे में तौबा और नेकियों की तरफ़ आते हैं लेकिन येह अपनी जवानी ही में बुढ़ापे के अन्दाज़ अपनाए हुए है तो ज़बाने रिसालत से ऐसे नौजवान को बेहतरीन क़रार दिय गया।

4 हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सायए अर्श पाने वाले सात अफ़राद का ज़िक्र किया तो उन में से एक येह बयान फ़रमाया : वोह नौजवान जिस की जवानी इबादते इलाही में गुज़री।[6]

5 रहमते आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो अल्लाह तआला की इबादत करते हुए परवान चढ़ा यहां तक कि फ़ौत हो गया अल्लाह तआला उसे 99 सिद्दीक़ीन का सवाब अता फ़रमाता है।[7]

जवानी की इबादत का सवाब ज़ियादा क्यूं है ? बात दर अस्ल येह है कि जवानी में गुनाह की तरफ़ ले जाने वाली क़ुव्वत यानी "नफ़्स व ख़्वाहिश" ताक़तवर होती है जब कि नेकी की तरफ़ ले जाने वाली क़ुव्वत "अक़्ल" कमज़ोर होती है और बुढ़ापे में मुआमला इस के बरअक्स होता है, लिहाज़ा जब नौजवान कमज़ोर क़ुव्वत के ज़रीए ताक़तवर क़ुव्वत को मग़लूब कर के ख़ुद को इबादत में लगा देता है तो उस की इबादत का सवाब बढ़ा दिया जाता है।

जवानी बुज़ुर्गों की नज़र में

सहाबए किराम व बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم ने भी जवानी की अहमिय्यत के पेशे नज़र राहनुमा बातें इरशाद फ़रमाई हैं। चुनान्चे

1 हज़रते उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया : जवानी की आफ़त से बच कर रहो।[8]

2 हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : तौबा अच्छी है मगर जवान के लिए ज़ियादा अच्छी है।[9]

3 हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه जब नौजवानों को देखते तो फ़रमाते : रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वसिय्यत को ख़ुश आमदीद ! रहमते आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें वसिय्यत फ़रमाई है कि "हम तुम्हारे लिए मजलिस में कुशादगी करें और तुम्हें हदीसे पाक समझाएं क्यूंकि तुम हमारे जांनशीन हो और हमारे बाद हदीस के मुहाफ़िज़ हो।"[10]

4 हज़रते अबू सईद رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه जब किसी जवान की तरफ़ मुतवज्जेह होते तो उस से फ़रमाते : ऐ भतीजे ! अगर तुझे किसी बात में शको शुबा हो तो मुझ से पूछ लेना यहां तक कि तुझे यक़ीन हासिल हो जाए क्यूंकि तेरा यक़ीन के साथ लौटना मुझे तेरे शक के साथ लौटने से ज़ियादा पसन्द है।[11]

---

(1) پ21، الروم:54 (2) العمر والشیب، ص68، حدیث:57 (3) مسند الشہاب، 1/100، حدیث:116 (4) کنز العمال، 2/74، الجزء الثالث، حدیث: 6047 (5) معجم کبیر، 22/84، حدیث:202 (6) بخاری، 1/480، حدیث: 1423 (7) معجم کبیر، 8/129، حدیث:7589 (8) سنن کبری للبیہقی، 5/296، حدیث: 9862 (9) کنز العمال، 8/58، الجزء السادس عشر، حدیث:44161 (10) شعب الایمان، 2/275، حدیث:1741 (11) شعب الایمان، 2/275، حدیث:1741۔



नेकी में जल्दी कीजिए !

अल्लाह पाक का सब से बड़ा एहसान येह है कि उस ने हमें मुसलमान बनाया और नेकियां करने और गुनाहों से बचने की क़ुव्वत व ताक़त और तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई। नेक अ़मल करना यक़ीनन बहुत अच्छी बात है लेकिन नेक अ़मल में पहल करना ज़ियादा फ़ज़ीलत का सबब है क्यूंकि नेकी करने में पहल करने वाला नेकी के काम को क़ुव्वतो ताक़त देता है और नेकी की तरफ़ जल्द रग़बत करना फ़ितरत के नेक और अच्छा होने की अ़लामत भी होती है। नेक काम में पहल और जल्दी करने वाला दूसरे लोगों के लिए भी मश्अ़ले राह बन जाता है जिस से मुआशरे में नेकी करने और नेकी की दावत देने का एक सिल्सिला शुरूअ़ हो जाता है।

आइए ! नेक काम में पहल और जल्दी करने के बारे में अहादीसे तय्यिबा पढ़ते हैं:

जन्नत में जाने का शौक़

हज़रते मौला मुश्किल कुशा, अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रिवायत करते हैं : रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो जन्नत में जाने का शौक़ रखता है वोह भलाई के काम में जल्दी करने वाला होता है और जो दोज़ख़ में जाने से डरता है वोह शहवात (यानी ख़्वाहिशात) से बचता है।[1]

अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस रिवायत के तहत फ़रमाते हैं : नेक काम इस लिए किया जाए ताकि उस के सबब क़ुर्ब हासिल किया जा सके और शौक़ अस्ल में दिल की उस बेचैनी और तड़प को कहते हैं जो इन्सान को किसी तरफ़ खींच कर ले जाती है।[2]

नेक आमाल में जल्दी करनी चाहिए

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : नेक आमाल में जल्दी करो।[3]

जितना हो सके नेकी में जल्दी करनी चाहिए ऐसा न हो कि दिल का इरादा बदल जाए और नेकी से महरूमी का सामना हो, लिहाज़ा जब भी नेकी का ज़ेहन बने फ़ौरन कर लेनी चाहिए।

आख़िरत के काम में जल्दी करो

हदीसे पाक में है : इत्मीनानो सुकून हर चीज़ में हो, सिवाए आख़िरत के काम के।[4]

यानी किसी नेकी और ख़ास तौर पर इबादत की अदाएगी का जैसे ही मौक़ा मिले फ़ौरी अदा कर लेनी चाहिए, कि देर लगाने में शायद मौक़ा जाता रहे, बहुत देखा गया कि बाज़ हाजियों को मौक़ा मिला (तो हज) न किया, फिर न कर सके। रब्बे करीम फ़रमाता है : ﴿فَاسْتَبِقُوا الْخَیْرٰتِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो तुम नेकियों में आगे निकल जाओ। (پ2، البقرۃ:148) शैतान कारेख़ैर (यानी नेक काम) में देर लगवा कर आख़िर उस से रोक देता है।

नेकी के काम में देर नहीं करनी चाहिए

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू अ़मरह अन्सारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि उन की वालिदए मोह़तरमा ने (ग़ुलाम) आज़ाद करना चाहा फिर सुब्ह़ तक देर लगाई, फिर वोह फ़ौत हो गईं, ह़ज़रते अ़ब्दुर्रहमान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ कहते हैं कि मैं ने ह़ज़रते क़ासिम बिन मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से पूछा कि अगर मैं उन की त़रफ़ से आज़ाद कर दूं तो क्या उन्हें नफ़ा देगा ? उन्हों ने फ़रमाया कि ह़ज़रते साद इब्ने उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आए और अ़र्ज़ किया : मेरी मां वफ़ात पा चुकी हैं, क्या उन्हें नफ़ा देगा कि मैं उन की त़रफ़ से आज़ाद कर दूं, तो रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हां।[5]

यानी ह़ज़रते अ़ब्दुर्रहमान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की वालिदा साह़िबा ने शाम के वक़्त लौंडी या ग़ुलाम आज़ाद करने का इरादा किया मगर सुब्ह़ तक टाल दिया और रात में अचानक फ़ौत हो गईं (यूं उन की येह नेकी रह गई)[6]

फ़ित्नों के ज़ुहूर से पहले नेक आमाल में जल्दी करो

रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उन (आने वाले) फ़ित्नों से पहले नेक आमाल कर लो जो अन्धेरी रात के ह़िस्सों की त़रह़ होंगे कि इन्सान सवेरा पाएगा मोमिन हो कर, शाम करेगा काफ़िर हो कर और शाम करेगा मोमिन हो कर, सवेरा पाएगा काफ़िर हो कर, मामूली दुनियवी सामान के इ़वज़ अपना दीन फ़रोख़्त कर देगा।[7]

सोना रोके रखना नापसन्द किया

ह़ज़रते उ़क़्बा बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे मदीने शरीफ़ में अ़स्र की नमाज़ पढ़ी। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सलाम फेर कर तेज़ी से ख़ड़े हो गए लोगों की गर्दनें फलांगते हुए अपनी बीबियों के ह़ुजरों में से एक ह़ुजरे की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तेज़ी के साथ जाने पर लोग घबरा गए, जब आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो लोगों को तअ़ज्जुब और ह़ैरत में देख कर फ़रमाया : मुझे याद आया कि कुछ सोना हमारे पास है मैं ने उसे पसन्द नहीं किया कि वोह क़ियामत के दिन मुझे रोके, इस लिए मैं ने उसे तक़्सीम करने का ह़ुक्म दे दिया।[8]

मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस से मुस्तफ़ाद (यानी येह नतीजा ह़ासिल) होता है कि ज़कात, फ़ित्रा, सदक़े का माल रोकना अच्छा नहीं, जिस क़दर हो सके जल्द मुस्तह़िक़ (यानी ह़क़दार) को दे दिया जाए।[9]

नेकी में इतनी देर न करो कि मौत का वक़्त आ जाए

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि एक शख़्स हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! कौन से सदक़े में ज़ियादा सवाब है ? इरशाद फ़रमाया : तुम्हारा सदक़ा करना इस ह़ाल में कि तुम तन्दुरुस्त और माल के ह़रीस हो, तुम्हें तंगदस्ती का ख़ौफ़ हो और मालदारी की उम्मीद हो और तुम सदक़ा करने में इतनी देर मत करो कि सांस ह़लक़ तक पहुंच जाए (यानी मौत का वक़्त क़रीब आ पहुंचे) फिर तुम कहो कि फ़ुलां के लिए इतना और फ़ुलां के लिए इतना, ह़ालांकि वोह फ़ुलां (यानी वारिसों) का हो ही चुका था।[10]

हमें हर नेक काम में जल्दी करनी चाहिए, ताकि कोई नेकी हम से न रह जाए और मौत का परवाना आ जाए, बाज़ आमाल की तो अह़ादीसे मुबारका में जल्दी करने की तरग़ीब भी दिलाई गई है, चुनान्चे तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़िए और नेक काम में जल्दी करने की आ़दत बनाइए :

1 तीन कामों में देर न करो : (1) नमाज़ जब उस का वक़्त आ जाए (2) जनाज़ा जिस वक़्त ह़ाज़िर हो और (3) लड़की का जब रिश्ता मिल जाए।[11] 2 सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से बरी है।[12] 3 सदक़ा देने में जल्दी करो कि बला सदक़े से आगे नहीं बढ़ सकती।[13]

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हमें हर त़रह़ के छोटे बड़े गुनाहों से बचते रहना चाहिए और कोई नेकी ख़्वाह छोटी हो या बड़ी बजा लाने से पीछे नहीं हटना चाहिए, अल्लाह पाक हमें ख़ूब नेक काम करते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, आमीन।

---

(1)شعب الایمان، 7/370، حدیث:10618(2)فیض القدیر، 6/82، تحت الحدیث:8442(3)ابن ماجہ، 2/5، حدیث:1081(4)ابوداؤد، 4/335، حدیث: 4810(5)مشکاۃ، 1/624، حدیث:3403(6)مرقاۃ المفاتیح، 6/576، تحت الحدیث: 3403، ملخصاً(7)مسلم، ص69، حدیث313(8)بخاری، 1/296، حدیث:851(9)نزہۃ القاری، 2/498(10)بخاری، 1/479، حدیث:1419 (11)ترمذی، 1/216، حدیث:171(12)شعب الایمان، 6/433، حدیث:8786 (13)جامع الاصول للجزری، 6/535، حدیث:4645۔

अह़कामे तिजारत



ग़ैर मुस्लिमों के मज़हबी तेहवारों की पोस्ट बनाना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मैं ग्राफ़िक डिज़ाइनिंग (Graphic Designing) का काम करता हूं, जिस में तसावीर की एडीटिंग (Editing) और मुख़्तलिफ़ नौइ़यत की डिजीटल पोस्टें तय्यार करता हूं। बाज़ औक़ात कस्टमर्ज़ ग़ैर मुस्लिमों के मज़हबी तेहवारों की मुबारकबाद पर मब्नी पोस्ट बनाने का कहते हैं। दरयाफ़्त त़लबे अम्र येह है कि क्या ग़ैर मुस्लिमों के मज़हबी तेहवारों की मुबारकबाद पर मुश्तमिल पोस्ट बनाना शरअ़न जाइ़ज़ है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : ग़ैर मुस्लिमों के मज़हबी तेहवारों की मुबारकबाद देना, नाजाइ़ज़ो ह़राम है बल्कि बाज़ सूरतों में कुफ़्र है। लिहाज़ा आप का ग़ैर मुस्लिमों के मज़हबी तेहवार की मुबारकबाद पर मुश्तमिल पोस्ट बना कर देना, कम अज़ कम ह़राम ज़रूर है क्यूंकि येह "تعاون علی الاثم" यानी गुनाह के काम में मदद फ़राहम करना है, जो कि नाजाइ़ज़ो गुनाह है और अल्लाह करीम ने क़ुरआने पाक में इस से मना फ़रमाया है।

दुनियावी फ़ायदे के लिए ग़ैर मुस्लिमों की ग़ैर इस्लामी मरासिम पर इ़आनत नाजाइ़ज़ो गुनाह है। चुनान्चे आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इरशाद फ़रमाते हैं : "मरासिम कुफ़्र की इ़आनत और उन में शिर्कत मम्नूअ़ व नाजाइ़ज़ो गुनाह और मुख़ालिफ़त हुक्मे इलाह है। قال الله تعالٰی: "وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ" तर्जमा : अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न करो। ह़दीस में इरशाद हुवा : "من سود مع قوم فهو منهم وفی لفظ من كثر سواد قوم فهو منهم" यानी जो किसी क़ौम की जमाअ़त में शरीक हो कर उन का गिरोह बढ़ाए, वोह उन्हीं में से है... फिर अगर येह बातें शामते नफ़्स और त़मए दुनिया से हों, तो सिर्फ़ इस्तिह़क़ाक़े जहन्नम है और अगर किसी रस्मे कुफ़्र के पसन्द व रिज़ा के साथ हों, तो खुला कुफ़्र है।"

(फ़तावा रज़विय्या, 21/186 मुल्तक़त़न)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अफ़्यून की तिजारत करना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि अफ़्यून की तिजारत करना कैसा ? येह बहुत सारी दवाओं में भी इस्तिमाल होती है।

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : अफ़्यून की तिजारत का हुक्म येह है कि अगर ख़रीदार के बारे में मालूम हो कि वोह उसे नशा, या किसी और नाजाइ़ज़ काम के लिए ले रहा है, तो ऐसे शख़्स को अफ़्यून बेचना जाइ़ज़ नहीं, क्यूंकि येह गुनाह पर मदद है। और अगर कस्टमर का मक़्सद मालूम

न हो या येह बात मालूम हो कि वोह उसे जाइज़ तिब्बी ज़रूरत के लिए इस्तिमाल करेगा, जैसे बैरूनी इस्तिमाल की दवा या मरहम बनाएगा, या खाने वाली दवा में इतनी क़लील मिक़्दार मिलाएगा जिस से नशा न हो और न अ़क़्लो ह़वास पर असर पड़े, तो उस की ख़रीदो फ़रोख़्त मम्नूअ़ नहीं बल्कि जाइज़ है। अलबत्ता अफ़्यून की इस जाइज़ तिजारत से भी इज्तिनाब बेहतर है।

नोट : बाज़ ममालिक के क़ानून के मुताबिक़ अफ़्यून की काश्त और तिजारत मम्नूअ़ है, अलबत्ता सिर्फ़ तिब्बी, साइन्सी या सन्अ़ती मक़ासिद के लिए क़ानून में मुक़र्ररा त़रीक़एकार के मुताबिक़ उस की महदूद इजाज़त मौजूद है लिहाज़ा जिस सूरत को जाइज़ लिखा गया है उस में क़ानूनी तक़ाज़े पूरे करना भी ज़रूरी है।

अफ़्यून की तिजारत से मुतअ़ल्लिक़ आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ लिखते हैं: ”ان بیع الافیون و البنج و امثا لھما ایضا مکروہ الا ممن علم انہ لا یشتریھا للمعصیۃ“ यानी अफ़्यून और भंग और इन जैसी दीगर चीज़ों की ख़रीदो फ़ोख़्त मकरूह है, सिवाए ऐसे शख़्स के हाथ ख़रीदो फ़रोख़्त करना जिस के बारे में मालूम है कि येह गुनाह के लिए नहीं ख़रीद रहा। (جد الممتار، 7/78)

सदरुश्शरीअ़ा मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ इरशाद फ़रमाते हैं : “अफ़्यून का खाना, नाजाइज़, मगर जब कि किसी दवा में इतनी क़लील मिलाई गई कि उस दवा के खाने से ह़वास पर असर न पड़े तो जाइज़ है... इस की बैअ़ व शरा जाइज़ है, अलबत्ता उस की बैअ़ ऐसे शख़्स से करना जो उसे नाजाइज़ त़ौर पर खाता हो, मम्नूअ़ है कि येह मासियत पर इअ़ानत है।” (फ़तावा अमजदिय्या, जिल्द 3, सफ़ह़ा 182)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ठेके पर काम ले कर आगे किसी और को ठेका देना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मैं एक ठेकेदार हूं और मेरे पास मज़दूरों की एक मुकम्मल टीम है जो मेरी हिदायात के मुताबिक़ तामीराती काम करती है। बाज़ औक़ात ऐसा होता है कि मुझे कहीं से काम की पेशकश आती है और कस्टमर इस काम की अच्छी पैमेन्ट भी दे रहा होता है, लेकिन मैं अपनी मौजूदा टीम के साथ कहीं और मसरूफ़ होने की वजह से उस नए काम को अन्जाम नहीं दे सकता। ऐसे में ख़ुद कस्टमर से ज़ियादा मज़दूरी त़ै कर लेता हूं और फिर वोही काम किसी दूसरे ठेकेदार से कम मज़दूरी में करवा देता हूं। इस त़रह़ कस्टमर से त़ै शुदा मज़दूरी और दूसरे ठेकेदार को दी गई मज़दूरी के दरमियान जो डिफ़रेन्स होता है वोह मैं अपने पास रख लेता हूं। सुवाल येह है कि क्या ऐसा करना शरई़ त़ौर पर दुरुस्त है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में अगर ठेका देते वक़्त कस्टमर की जानिब से येह शर्त़ आ़इद न की गई हो कि येह काम आप ख़ुद अपने हाथ से अन्जाम देंगे, बल्कि मुआ़हदा सिर्फ़ काम की तक्मील और मुतअ़य्यन मेयार के मुताबिक़ काम करने का हो, तो ऐसी सूरत में आप के लिए येह जाइज़ है कि आप येह काम किसी दूसरे ठेकेदार से त़ै शुदा मेयार के मुताबिक़ कम उजरत पर करवा लें। नीज़ इस सूरत में कस्टमर से त़ै शुदा उजरत और ठेकेदार को दी गई उजरत के दरमियान जो रक़म बचे, वोह आप के लिए ह़लाल होगी। लेकिन अगर कस्टमर की जानिब से येह शर्त़ हो कि काम आप को ही करना है, तो फिर किसी दूसरे ठेकेदार से वोह काम करवाना जाइज़ नहीं, बल्कि आप ही पर वोह काम करना लाज़िम है।

मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ बहारे शरीअ़त में फ़रमाते हैं : “जिस से काम कराना है अगर उस से येह शर्त़ कर ली है कि तुम को ख़ुद करना होगा या कह दिया कि तुम अपने हाथ से करना, इस सूरत में ख़ुद उसी को करना ज़रूरी है। अपने शागिर्द या किसी दूसरे शख़्स से काम कराना, जाइज़ नहीं... **और अगर येह शर्त़ नहीं है कि वोह ख़ुद अपने हाथ से काम करेगा दूसरे से भी करा सकता है, अपने शागिर्द से कराए या नौकर से कराए या दूसरे से उजरत पर कराए, सब सूरतें जाइज़ हैं।”** (बहारे शरीअ़त, 3/119 मुल्तक़त़न)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم



हिजरते नबवी में घरानए सिद्दीक़ी का किरदार

मर्दों में सब से पहले इस्लाम क़बूल करने की सआ़दत पाने वाले ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हैं आप अपनी पूरी ह़यात में निहायत ख़ामोशी, गहराई और वालिहाना वाबस्तगी के साथ सरचश्मए नुबुव्वत के पानी से ईमान व ह़िक्मत, यक़ीन व अ़ज़ीमत और तक़्वा व इख़्लास के अनमोल मोती चुनते रहे। इस त़वील सोह़बत और बेमिसाल रफ़ाक़त के नतीजे में सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का दामने ह़यात तक़्वा व परहेज़गारी, ज़िक्र व बेदारी, मह़ब्बत व वफ़ा शिआ़री, अ़ज़ीमत व ज़िम्मेदारी, और इख़्लास व फ़रमां बरदारी के गिरां क़दर समरात से मालामाल हो गया। और येह समरात सिर्फ़ ह़ज़रते सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ज़ात तक मह़दूद न रहे बल्कि सिद्दीक़ी घराने के दीगर अफ़राद भी इस से बरकतें पाते रहे हैं, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हिजरते मदीना की रवानगी का वक़्त सिर्फ़ मौला अ़ली, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और आले सिद्दीक़ी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم जानते थे,[1] इस लिए इस अ़ज़ीम मौक़े पर इन ह़ज़रात की जांनिसारी और वफ़ादारी एक अ़ज़ीम दास्तां बयान करती है। आइए हिजरते मदीना के मौक़अ़ पर सिद्दीक़ी घराने की क़ुरबानियों के कुछ वाक़िआ़त पढ़ते हैं।

हिजरते मदीना और इन्तिज़ारे सिद्दीक़ हिजरते ह़बशा के बाद, जब मक्कए मुकर्रमा के ह़ालात मुसलमानों के लिए मज़ीद नासाज़गार हुए तो हिजरते मदीनए मुनव्वरा का तारीख़ी वक़्त आ पहुंचा। दीगर सह़ाबए किराम की त़रह़ सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के दिल में भी येह ख़्वाहिश बेदार हुई लिहाज़ा कई बार रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मदीना की त़रफ़ हिजरत करने की इजाज़त चाही, आख़िरेकार सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें रोकते हुए येह इरशाद फ़रमाया : لَا تَعْجَلْ لَعَلَّ اللّٰہَ یَجْعَلُ لَکَ صَاحِبًا जल्दी न करो, शायद अल्लाह पाक तुम्हें मेरी सोह़बत में हिजरत नसीब फ़रमाए। येह सुनते ही अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ (ने अपनी ख़्वाहिश को क़ुरबान किया और) इस बात की तमन्ना करने लगे कि काश ! उन्हें काएनात की सब से अ़ज़ीम हस्ती प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त में सफ़रे हिजरत की सआ़दत ह़ासिल हो जाए।[2]

मुज़्दए रफ़ाक़त पर अश्के मसर्रत हिजरते नबवी के अ़ज़ीम मर्ह़ले को उम्मुल मोमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا यूं बयान फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह मामूल था कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रोज़ाना सुब्ह़ या शाम के वक़्त हमारे घर तशरीफ़ लाया करते थे। लेकिन जब हिजरत का हुक्म नाज़िल हुवा, तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मामूल के बरअ़क्स दोपहर के वक़्त हमारे हां तशरीफ़ लाए। घर में दाख़िल हो कर रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हिजरत का हुक्म आ गया है। सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने तड़प कर अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मुझे आप की

रफ़ाक़त चाहिए ? नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुज़्दा सुनाया : हां, तुम भी हमारे ही साथ चलोगे। रफ़ाक़त का येह मुज़्दए जां फ़ज़ा सुन कर अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की आंखों से ख़ुशी के आंसू जारी हो गए और वोह रोने लगे। बीबी आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : आज से पहले मुझे इस बात का इल्म ही न था कि कोई इन्सान हद से ज़ियादा ख़ुशी में भी रो सकता है।[3]

दो ऊंटनियां पेश कीं सफ़रे हिजरत का मुज़्दा सुनते ही सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़ौरन दो ऊंटनियां रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में पेश कीं और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! हिजरत ही के तारीख़ी दिन के लिए मैं ने येह दो ऊंटनियां ख़ास तौर पर पाल रखी थीं और उन्हें तय्यार किया था।[4]

माली क़ुर्बानी इस के बाद सफ़र की हिक्मते अ़मली के तहत बनू दैल बिन बक्र के एक फ़र्द अ़ब्दुल्लाह बिन उरैक़त को रास्ते की रहनुमाई के लिए उजरत पर मुक़र्रर किया गया। येह शख़्स रास्तों का माहिर और क़ाबिले एतिमाद था। चुनान्चे येह दोनों ऊंटनियां उस के हवाले कर दी गईं ताकि वोह वक़्ते मुक़र्ररा तक उन की देख भाल करे और उन्हें महफ़ूज़ रखे।[5]

ग़ारे सौर की तरफ़ रवानगी फिर एक दिन रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मदीना की तरफ़ रवानगी का पुख़्ता इरादा फ़रमाया और अपने काशानए अक़्दस से निकल कर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के घर तशरीफ़ लाए, फिर रात होने तक वहीं क़ियाम पज़ीर रहे।[6]

बिनाते सिद्दीक़ी की ख़िदमात सिद्दीक़ी घराने ने भी इस सफ़र के लिए ख़िदमात का एक लाजवाब बाब रक़म किया। चुनान्चे उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आइशा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं कि हम ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और वालिदा मोहतरम अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के लिए बेहतरीन तरीक़े से सामाने सफ़र किया जिस में बकरी का पका हुवा गोश्त भी शामिल था। तोशा तय्यार कर के एक थेले में रख दिया गया, लेकिन थैले का मुंह बांधने के लिए घर में कोई रस्सी या कपड़ा न मिला उस नाज़ुक मौक़े पर बड़ी बहन हज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا ने कमर पर (काम काज के दौरान बांधा जाने वाला) कपड़ा खोला, उसे दरमियान से फाड़ कर दो टुकड़े किए और एक टुकड़े से पानी का मश्कीज़ा और दूसरे से तोशे का थैला मज़बूती से बांध दिया। उन की इसी फ़हमो फ़िरासत और ख़िदमत की बिना पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें **"ذات النطاقین"** का अ़ज़ीम लक़ब अ़ता किया और फ़रमाया : अल्लाह तुझे उस के बदले दो जन्नती कपड़े अ़ता करे।[7] जब रात का अन्धेरा छा गया तो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه घर की पुश्त पर मौजूद एक छोटे दरवाज़े से बाहर निकले और वहां से सीधे मक्का के ज़ेरीं अ़लाक़े में वाक़ेअ़ पहाड़ सौर के एक ग़ार की तरफ़ रुख़ किया।[8]

ग़ारे सौर के रास्ते में वालिहाना जां निसारी रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ ग़ारे सौर की जानिब बढ़ते हुए हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه पर अ़जीब वारफ़्तगी की कैफ़ियत तारी थी। वोह रास्ते में कभी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आगे चलने लगते और कभी पीछे चलते, कभी दाएं जानिब आ जाते और कभी बाएं तरफ़ आ जाते, सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की इस बेचैनी को महसूस किया और पूछी : ऐ अबू बक्र ! येह क्या माजिरा है कि तुम कुछ देर मेरे आगे चलते हो और कुछ देर पीछे, कभी दाएं चलते हो तो कभी बाएं ? आशिक़े सादिक़ सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! जब मुझे येह ख़याल आता है कि लोग आप को तलाश कर रहे हैं तो आप के पीछे चलने लग जाता हूं और जब येह ख़ौफ़ सताता है कि कोई दुश्मन आगे घात लगाए न बैठा हो, तो मैं आप के आगे आ जाता हूं (ताकि आप तक पहुंचने वाली हर मुसीबत पहले मुझ पर आए) फिर दाएं और बाएं चलता हुं ताकि आप की हिफ़ाज़त के बारे में मुत्मइन रहूं। येह सुन कर मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू बक्र ! क्या तुम येह पसन्द करते हो कि अगर कोई तक्लीफ़ पहुंचे तो वोह तुम्हें पहुंचे और मैं महफ़ूज़ रहूं ? सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने तड़प कर अ़र्ज़ की : जी हां, अल्लाह पाक की क़सम ! मैं तो येही पसन्द करता हूं कि हर क़िस्म की तक्लीफ़ो मुसीबत मुझे

पहुंचे और आप को कुछ भी न हो।[9]

अपने कन्धों पर उठा लिया महब्बत, जांनिसारी और फ़िदाकारी के मराहिल अभी ख़त्म न हुए थे आगे भी कई अदवार आने वाले थे रात के अन्धेरे में ग़ारे सौर की त़रफ़ बढ़ते हुए रसूले मुकर्रम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने मुबारक पैरों की उंगलियों के बल चल रहे थे। और इस एहतियात का मक़्सद सिर्फ़ येह था कि तआ़क़ुब करने वाले क़ुरैश क़दमों के निशानात न पा सकें यहां तक कि मक्का की संगलाख़ वादियों में इस त़रह चलने से रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमैने मुबारक ज़ख़्मी हो गए। यारे ग़ार ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه ने जब अपने मह़बूब के पैरों की येह तक्लीफ़ देखी तो जज़्बए इ़श्क़ से रहा न गया फ़ौरन झुक कर काएनात के वाली प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने कन्धों पर उठा लिया और चलते हुए ग़ारे सौर के दहाने तक पहुंच कर नीचे उतार दिया।

सांप ने डस लिया फिर सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللهُ عَنْه ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! ग़ार में पहले मैं दाख़िल होता हूं, अगर अन्दर कोई मूज़ी जानवर या ख़त़रा हुवा, तो वोह आप से पहले मुझे नुक़्सान पहुंचाएगा। सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللهُ عَنْه अन्दर गए, तसल्ली की और फिर अपने आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इन्तिहाई ताज़ीम के साथ उठा कर ग़ार के अन्दर ले आए। इस अन्धेरे ग़ार में एक ऐसा सूराख़ था जहां ज़हरीले बिच्छू और सांप थे। सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللهُ عَنْه को ख़ौफ़ हुवा कि कहीं कोई मूज़ी शै निकल कर रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तक्लीफ़ न पहुंचाए, लिहाज़ा उन्हों ने जान की परवा किए बग़ैर अपना क़दम उस सूराख़ पर रख दिया। सूराख़ में मौजूद सांप ने सय्यिदुना सिद्दीक़े अक़बर के क़दम पर बार बार डसा। ज़हर जिस्म में सरायत करने लगा, तक्लीफ़ ह़द से बढ़ी तो चश्मे पुर नम से आंसू छलक पड़े और रुख़्सारे मुबारक पर बहते हुए रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर पर जा गिरे। दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेदार हुए, और पूछा : ऐ अबू बक्र ! क्या बात है ? अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! सांप ने डस लिया है। फिर रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने यारे ग़ार को तसल्ली देते हुए फ़रमाया : ऐ अबू बक्र ! ग़म न करो, बेशक अल्लाह पाक हमारे साथ है। मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इन अल्फ़ाज़े मुबारका का अदा होना था कि अल्लाह पाक ने सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللهُ عَنْه के तड़पते दिल पर सकीनत और इत्मीनान नाज़िल फ़रमा दिया। एक रिवायत में है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه के इस ह़िस्से पर अपना लुआ़बे दहन (यानी थूक शरीफ़) लगाया तो फ़ौरन आराम मिल गया।[10]

क़ुरैश का ग़ैज़ो ग़ज़ब और बीबी अस्मा की इस्तिक़ामत दूसरी जानिब अबू जहल ने कुछ ग़ैर मुस्लिमों को साथ लिया और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه के घर पहुंच कर दरवाज़ा खटखटाया, अन्दर से साह़िबज़ादी ह़ज़रते बीबी अस्मा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا बाहर निकलीं तो अबू जहल ने ग़ुस्से में पूछा : तुम्हारा बाप अबू बक्र कहां है ? ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا ने जुरअत से जवाब दिया : मुझे उन का इ़ल्म नहीं कि वोह इस वक़्त कहां हैं। येह सुन कर ज़ालिम इन्सान अबू जहल ने ह़ज़रते बीबी अस्मा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا के मुंह पर ऐसा ज़ोरदार त़मांचा रसीद किया जिस की शिद्दत से उन के कान की बाली टूट कर नीचे जा गिरी। इस ज़ुल्म के बावुजूद सय्यिदा अस्मा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا ने राज़दारी का दामन हाथ से न छोड़ा, और किसी को कुछ न बताया कि अल्लाह के ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उन के रफ़ीक़े ख़ास सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللهُ عَنْه कहां तशरीफ़ ले गए हैं।[11]

फ़रज़न्दे सिद्दीक़ी की ड्यूटी सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه के लख़्ते जिगर, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबू बक्र رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا इन्तिहाई ज़हीन, होशियार और फ़हमो फ़िरासत के मालिक नौजवान थे, उन की ड्यूटी येह थी कि वोह रात के वक़्त ग़ारे सौर में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और अपने वालिदे माजिद के पास पहुंच जाते और रात वहीं गुज़ारते। फिर आख़िरी शब मुंह अन्धेरे वहां से निकल कर मक्कए मुकर्रमा वापस आ जाते, और क़ुरैश के लोगों में इस त़रह़ शामिल हो जाते कि जैसे उन्हों ने रात मक्का ही में गुज़ारी है।

अहले मक्का की जासूसी इस के बाद साहिबज़ादे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ दिन भर क़ुरैशे मक्का के माबैन उठते बैठते और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ जो भी साज़िशें, मश्वरे या बातें होतीं, उन्हें अच्छी त़रह़ ज़ेहन नशीन कर लेते थे, जैसे ही रात की तारीकी छाती, वोह तमाम ख़बरें ले कर ग़ारे सौर पहुंच जाते और दोनों मुबारक हस्तियों को मक्का के ह़ालात से बाख़बर कर देते। इस त़रह़ क़ुरैशे मक्का को कानों कान ख़बर न हो पाती कि ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के साहिबज़ादे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मक्का से बाहर गए हैं।[12]

ग़ुलामे सिद्दीक़ी की ख़िदमात और दिफ़ाई़ ह़िक्मते अ़मली न सिर्फ़ आले अबू बक्र बल्कि इन के आज़ाद कर्दा वफ़ादार ग़ुलाम भी इस अ़ज़ीम मिशन का अहम ह़िस्सा थे। चुनान्चे ह़ज़रते आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ग़ारे सौर वाले पहाड़ के आस पास दिन भर बकरियां चराया करते थे। रात के वक़्त जब क़ुरैश की आमदो रफ़्त थम जाती, तो बकरियां ले कर ग़ार के पास पहुंचते और ताज़ा दूध निकाल कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ख़िदमत में पेश करते। दोनों मुबारक हस्तियां येह दूध पी कर रात आराम से गुज़ारतीं। इस के बाद ह़ज़रते आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रात के अन्धेरे में बकरियों को हांकते हुए मक्का वापस आ जाते। इन तीन रातों में ह़ज़रते आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ इसी त़रह़ करते रहे।

ह़ज़रते आ़मिर ख़ादिम की ह़ैसिय्यत से शामिल हुए फिर जब हिजरत का सफ़र बाक़ाइदा शुरूअ़ हुवा तो ह़ज़रते आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ भी ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की सुवारी पर पीछे बैठ कर इस क़ाफ़िले के साथ हो लिए ताकि दोनों मुक़द्दस हस्तियों की ख़िदमत के फ़राइज़ सर अन्जाम दे सकें। इस त़रह़ येह मुबारक क़ाफ़िला चार अफ़राद पर मुश्तमिल था, जिस में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا और रास्ते की राहनुमाई करने वाला अ़ब्दुल्लाह बिन उरैक़त़ शामिल थे। इब्ने उरैक़त़ इस क़ाफ़िले को क़ुरैश के तआ़क़ुब से बचाने के लिए आ़म रास्तों के बजाए साह़िली रास्ते से ले कर रवाना हुवा।[13]

याद रहे कि प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ यकुम रबीउ़ल अव्वल जुमेरात की रात को मक्कए मुकर्रमा से निकल कर ग़ारे सौर में मुक़ीम हुए, तीन रातें यानी जुमुआ हफ़्ता और इतवार की रातें ग़ार में क़ियाम फ़रमाया, फिर वहां से पीर की रात 5 रबीउ़ल अव्वल मुत़ाबिक़ 622 ईसवी को आ़ज़िमे मदीना हुए और 12 रबीउ़ल अव्वल बरोज़ पीर चाश्त के वक़्त मदीनए मुनव्वरा में जल्वा फ़रमा हुए।[14]

---

(1)سیرت ابن ہشام، ص194 (2)سیرت ابن ہشام، ص191 (3)بخاری، 2/29، حدیث:2138- سیرت ابن ہشام، ص193 (4)سیرت ابن ہشام، ص193 (5)سیرت ابن کثیر، 2/234 (6)سیرت ابن ہشام، ص194- طبقات ابن سعد، 1/177 (7)بخاری، 2/304، حدیث:2979- سیرت حلبیہ، 2/44 (8)سیرت ابن ہشام، ص194 (9)دلائل النبوۃ للبیہقی، 2/476- سبل الہدیٰ والرشاد، 3/240 (10)دلائل النبوۃ للبیہقی، 2/477- مشکاۃ المصابیح، 2/417، حدیث:6034 (11)سیرت ابن ہشام، ص194 (12)بخاری، 2/593، حدیث: 3905 (13)بخاری، 2/593، حدیث:3905- سیرت حلبیہ، 2/57 (14)سیرت سید الانبیاء، ص231۔



मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा, यारे ग़ार व यारे मज़ार ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की पाकीज़ा सीरत के बारे में जानने के लिए आज ही अपने क़रीबी मक्तबतुल मदीना से किताब **"फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अकबर"** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिए या दावते इस्लामी के वेबसाइट के ज़रीए़ डाउनलोड कर के पढ़िए और दूसरों को शेयर भी कीजिए।



शहर तुसतर

हज़रते सय्यिदुना रَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا मुहम्मद बिन जाफ़र

कम उम्री में जिन ख़ुशनसीब बच्चों को अल्लाह पाक के आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िरी का शरफ़ मिला उन में हज़रते अबुल क़ासिम मुहम्मद बिन जाफ़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا भी शामिल हैं, आइए ! उन के बचपन के बारे में पढ़ कर अपने दिलों को महब्बते सहाबए किराम से रौशन करते हैं :

हज़रते मुहम्मद बिन जाफ़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا

मुख़्तसर तआरुफ़ : आप हज़रते जाफ़र बिन अबू तालिब और हज़रते अस्मा बिन्ते उमैस رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا के बेटे, हज़रते अली رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ के भतीजे और मशहूर सहाबी हज़रते अब्दुल्लाह बिन जाफ़र के भाई हैं, आप की विलादत रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में हबशा में हुई, आप ग़ज़वए ख़ैबर के मौक़े पर अपने वालिदैन के साथ मदीनए मुनव्वरा आए, आप उस वक़्त छोटे बच्चे थे, मुसलमान मुहाजिरीन में सब से पहले आप का नाम **"मुहम्मद"** रखा गया।[1] **हुज़ूर ने आप को अपनी रान पर बिठाया :** (हज़रते जाफ़र बिन अबी तालिब رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ की शहादत के बाद) रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के घर तशरीफ़ लाए और आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के भाई हज़रते अब्दुल्लाह और हज़रते मुहम्मद बिन जाफ़र को अपनी रान पर बिठाया और फ़रमाया : मुहम्मद मेरे चचा अबू तालिब के हम शक्ल है।[2]

आले जाफ़र पर हुज़ूर की करम नवाज़ी : हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं दुनिया और आख़िरत में उन बच्चों (यानी हज़रते अब्दुल्लाह बिन जाफ़र और हज़रत मुहम्मद बिन जाफ़र) का वली (यानी सरपरस्त) हूं।[3]

विसाल : आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने तुस्तुर में शहादत पाई।[4]

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बेहिसाब मग़फ़िरत हो। اٰمِیۡن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) اسد الغابہ، 5/85-اصابہ فی تمییز الصحابہ، 6/7(2) دیکھئے: المستخرج من کتب الناس للتذکرۃ، ص3(3) دیکھئے: مسند امام احمد، 3/279، حدیث:1750 (4) الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، 3/424۔



सर्दी से बचने के तरीक़ों और दीगर बहुत सारी मुफ़ीद मालूमात पढ़ने के लिए दावते इस्लामी की वेबसाइट से डाउनलोड कीजिए।


मक़ामे जबले क़ासियून

मुहद्दिसे शाम इमाम ज़ियाउद्दीन मुक़द्दसी

इमाम ज़ियाउद्दीन मुक़द्दसी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की विलादत 16 जुमादल उख़रा 569 हि. मुताबिक़ 11 जनवरी 1174 ई को दैर मुबारक जबले क़ासियून (दिमश्क़, शाम) में हुई।

नामो नसब ज़ियाउद्दीन मुहम्मद बिन अ़ब्दुल वाहिद बिन अहमद बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन इस्माईल बिन मन्सूर सअ़दी मुक़द्दसी ह़म्बली।

कुन्यत व लक़ब कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह और लक़ब ज़ियाउद्दीन है।[1]

आप का तअ़ल्लुक़ ख़ानदाने मुक़ादिसा से था जो एक अ़र्से से इ़ल्मो कमाल, ज़ोहदो तक़्वा और इ़बादतो रियाज़त में मश्हूरो मारूफ़ था। इस ख़ानदान में बड़े बड़े उ़लमा और ह़दीस के बड़े हुफ़्फ़ाज़ गुज़रे हैं।

तह़सीले इ़ल्म आप ने अपने दीनदार घराने के इ़ल्मी माह़ौल में परवरिश पाई, बचपन ही में क़ुरआने करीम ह़िफ़्ज़ कर लिया और इ़ल्मे ह़दीस की मजलिसों में शिर्कत करने लगे। सात साल की छोटी उ़म्र में शैख़ इब्ने सय्यिदा अबुल मआ़ली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ वग़ैरा अकाबिर मुह़द्दिसीन से ह़दीस का इ़ल्म ह़ासिल किया। इमाम ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल ग़नी मुक़द्दसी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की सोह़बत में बड़ा अ़र्सा रहे और इन्हीं से इ़ल्मे ह़दीस वग़ैरा की तक्मील की और अपने मामूं इमाम अबू उ़मर मुहम्मद मुक़द्दसी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से भी ख़ूब इस्तिफ़ादा किया।[2] आप ने इ़ल्म के ह़ुसूल के लिए बहुत से सफ़र किए, बड़े बड़े उ़लमा और मुह़द्दिसीन से इक्तिसाबे फ़ैज़ किया। आप ने ह़ुसूले इ़ल्म के लिए मिस्र, बग़दाद (इ़राक़), हमदान (ईरान), नाबुलुस (फ़िलिस्तीन), अस्फ़हान (ईरान), नेशापूर (ईरान), हिरात (अफ़ग़ानिस्तान), मर्व (तुर्कमानिस्तान), ह़ल्ब, ह़िरान, मूसल (इ़राक़), मक्कए मुअ़ज़्ज़मा और मदीनए मुनव्वरा वग़ैरा का सफ़र किया।[3]

असातिज़ा आप ने जिन अहले ह़ज़रात से इ़ल्म ह़ासिल किया है उन की तादाद एक क़ौल के मुताबिक़ पांच सौ से ज़ाइद है।[4] उन में से कुछ नामवर शख़्सियात के नाम येह हैं : इमाम अ़ब्दुल ग़नी मुक़द्दसी, इमाम मूफ़िक़ुद्दीन इब्ने क़ुदामा ह़म्बली, अ़ज़ीम मुह़द्दिस इमाम अबू ताह़िर सलफ़ी, शैख़ इब्राहीम बिन अ़ब्दुल वाह़िद मुक़द्दसी, शैख़ अबू उ़मर मुहम्मद बिन अह़मद बिन मुहम्मद बिन क़ुदामा मुक़द्दसी, मुह़द्दिस अबुल क़ासिम हिबतुल्लाह बिन अ़ली बूसीरी, फ़क़ीह इब्ने नजीह, शैख़ उ़मर बिन अ़ली जुवैनी, अबू जाफ़र सैदलानी, शैख़ अ़ब्दुल बाक़ी बिन उ़स्मान, शैख़ शाफ़िया अबुल मुज़फ़्फ़र इब्ने समआ़नी, मुस्नद ख़ुरासान इमाम मुवैद तूसी, इमाम अ़ब्दुर्रहमान इब्ने जौज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم।[5]

सीरत व किरदार ह़ज़रते इमाम ज़हबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : आप लोगों के साथ बहुत भलाई करने वाले और उन के हमदर्द थे, तहज्जुद गुज़ार थे, लोगों को भलाई का ह़ुक्म देने वाले थे, ख़ुश शक्ल और पुरवक़ार बुज़ुर्गी वाले थे, अपने पराए सब आप को पसन्द करते थे।[6] ह़ज़रते इमाम इब्ने ह़ाजिब رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : आप उ़लमाए रब्बानी में से थे। इ़बादत के लिए ख़ूब कोशिश करने वाले और ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रहने वाले थे। ह़ज़रते इमाम इब्ने नज्जार رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : आप ज़ाहिद, मुत्तक़ी और परहेज़गार इन्सान थे। ह़लाल खाने के मुआ़मले में मोह़तात़ और राहे ख़ुदा में जिहाद करने वाले थे। मैं ने आप जैसा बाकिरदार और तह़सीले इ़ल्म में अच्छे त़रीक़े वाला कोई नहीं देखा।[7] इमाम इब्ने कसीर رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : आप बड़े इ़बादत गुज़ार, ज़ोहदो तक़्वा के पैकर और भलाई के कामों में मुम्ताज़ थे।[8]

दारुल ह़दीस का क़ियाम आप ने इ़ल्मे ह़दीस की इशाअ़त के लिए जामेअ़ मुज़फ़्फ़री में एक मद्रसे की बुनियाद रखी और बाज़

अहले ख़ैर ह़ज़रात ने इस में आप के साथ तआ़वुन भी किया। आप ने उसे दारुल ह़दीस बनाया और अपनी किताबें उस मद्रसे के लिए वक़्फ़ फ़रमा दीं। आप के वक़्फ़ फ़रमाने के बाद दीगर जलीलुल क़द्र उ़लमा ने भी उस मद्रसे के लिए अपनी किताबें वक़्फ़ फ़रमाईं जिन में इमाम शैख़ मौफ़िक़, ह़ज़रते बहा अ़ब्दुर्रहमान, ह़ज़रते इमाम ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल ग़नी, ह़ज़रते इमाम इब्ने ह़ाजिब, ह़ज़रते इमाम इब्ने सलाम, ह़ज़रते इब्ने हामिल और ह़ज़रते शैख़ अ़ली मूसली رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہِم के नाम क़ाबिले ज़िक्र हैं।[9]

तलामिज़ा आप से इ़ल्म ह़ासिल करने वालों की तादाद बहुत ज़ियादा है। उन में से चन्द के नाम येह हैं : इमाम इब्ने नुक़्ता, मुह़द्दिसे इ़राक़ इमाम इब्ने नज्जार, इमाम शरफ़ुद्दीन इब्ने नाबुलुसी, इमाम सैफ़ुद्दीन इब्ने मज्द, इमाम ज़कियुद्दीन बरज़ाली, इमाम इब्ने बक़ा मलक़्ल, शैख़ अ़ब्दुल्लाह बिन अबू ताहिर मुक़द्दसी, इमाम इब्ने अज़हर सरीफ़ीनी, ह़ाफ़िज़ अबुल अ़ब्बास इब्ने ज़ाहिरी, इमाम इब्ने ह़ाजिब, इमाम इब्ने सलाम رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہِم।[10]

अ़स्करी ज़िन्दगी इ़ल्मी व दीनी मसरूफ़ियात के बावुजूद आप इस्लाम की जंग में भी शरीक हुए और सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की क़ियादत में सलीबियों के ख़िलाफ़ जंग में ह़िस्सा लिया।[11]

तारीफ़ी कलिमात 1 ह़ज़रते इमाम ज़कियुद्दीन बरज़ाली رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : आप ह़दीस के ह़ाफ़िज़, सिक़ह, इ़ल्म के पहाड़, दीनदार और भलाई के पैकर थे।[12] 2 इमाम शैख़ इ़ज़ुद्दीन इब्ने अ़ज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इमाम दारेक़ुतनी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के बाद हमारे शैख़ ज़ियाउद्दीन मुक़द्दसी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ जैसा कोई नहीं आया।[13] 3 इमाम ह़ाफ़िज़ अबुल ह़ज्जाज मज़री رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने आप जैसा नहीं देखा, आप इ़ल्मे ह़दीस और इ़ल्मे अस्माउर्रिजाल में मुह़द्दिसे कबीर ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल ग़नी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ से भी बढ़ कर थे और आप के वक़्त में आप जैसा कोई नहीं था।[14] 4 ह़ाफ़िज़े ह़दीस इमाम यूसुफ़ बिन बद्र رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अल्लाह पाक शैख़ ज़ियाउद्दीन मुक़द्दसी पर रह़म फ़रमाए आप ह़िफ़्ज़े ह़दीस और रिजाले ह़दीस की मारिफ़त में अ़ज़ीमुश्शान के ह़ामिल थे। ह़दीस के सह़ीह़ और ज़ई़फ़ होने में आप की जानिब इशारा किया जाता था, मेरी आंख ने आप जैसा नहीं देखा।[15] 5 इमाम ज़हबी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने इन अलफ़ाज़ से आप की तारीफ़ फ़रमाई : शैख़, इमाम, ह़ाफ़िज़, मुह़क़्क़िक़, ह़ुज्जत, बक़िय्यतुल सलफ़।[16] 6 इमाम शैख़ उ़मर बिन ह़ाजिब رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हमारे शैख़ ज़ियाउद्दीन मुक़द्दसी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ इ़ल्म, ह़िफ़्ज़े ह़दीस, सक़ाहत और दीनदारी में यगाना रोज़गार शख़्सिय्यत थे।[17] 7 इमाम इब्ने रजब رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ाफ़िज़ कबीर अबू अ़ब्दुल्लाह ज़ियाउद्दीन رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ मुह़द्दिसे अ़स्र और यक्ता ज़माना थे। आप की शोहरत मोह़ताजे बयान नहीं।[18]

तसानीफ़ आप ने गिरां क़दर तसानीफ़ यादगार छोड़ीं। चन्द किताबों के नाम येह हैं : 1 فضائل الاعمال 2 الاحادیث المختارہ 3 فضائل الشام 4 فضائل القرآن 5 سیر المقادسہ 6 مناقب اصحاب الحدیث 7 النھی عن سب الاصحاب 8 الحجہ 9 صفۃ الجنۃ 10 صفۃ النار 11 ذکر الحوض 12 قتال الترک 13 فضل العلم 14 ذم المسکر 15 کلام الاموات 16 الموبقات 17 الرواۃ عن البخاری 18 دلائل النبوۃ 19 الامر باتباع السنن واجتناب البدع 20 مسند فضالہ بن عبید 21 شفاء العلیل 22 تحریم الغیبہ 23 اطراف الموضوعات 24 الموافقات 25 الارشاد الی بیان ما اشکل من المرسل فی الاسناد۔[19]

इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने आप की किताब अल अह़ादीस अल मुख़्तारह को सिह़ाह़ के दर्जे में बयान फ़रमाया है।[20]

वफ़ात आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की वफ़ात बरोज़े पीर 28 जुमादल उ़ख़रा 643 हि. बमुताबिक़ 1245 ई में हुई और आप का मज़ार दिमश्क़ में जबले क़ासियून पर है।[21]

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बेह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(1)سیر اعلام النبلاء،23/126-الاعلام للزرکلی،6/255(2)گستاخان صحابہ کا انجام،حالات مصنف،ص10 (3)تاریخ الاسلام للذہبی،47/209(4)ذیل طبقات الحنابلہ،3/516 (5)تذکرۃ الحفاظ،4/133-محدثین عظام حیات وخدمات،ص545(6)سیر اعلام النبلاء، 23/128(7)تاریخ الاسلام للذہبی،47/211(8)البدایۃ والنہایۃ،9/52(9)تاریخ الاسلام للذہبی،47/212(10)سیر اعلام النبلاء،23/129(11)گستاخان صحابہ کا انجام، حالات مصنف،ص10(12)سیر اعلام النبلاء،23/128(13)سیر اعلام النبلاء،23/128 (14)تاریخ الاسلام للذہبی،47/211(15)سیر اعلام النبلاء،23/128(16)سیر اعلام النبلاء،23/126(17)سیر اعلام النبلاء،23/129(18)ذیل طبقات الحنابلہ،3/515 (19)تاریخ الاسلام للذہبی،47/212-سیر اعلام النبلاء،23/126-ذیل طبقات الحنابلہ، 3/520(20)دیکھئے: فتاوی رضویہ،4/210(21)تاریخ الاسلام للذہبی،47/214-الاعلام للزرکلی،6/255۔


मज़ार दीवान शाह अ़ब्दुल बाक़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه


मज़ार ह़ज़रते पीर सय्यिद इमाम अ़ली शाह गीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه


मज़ार ह़ज़रते मौलाना ह़सन रज़ा ताजी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये

जुमादल उ़ख़रा इस्लामी साल का छठा महीना है। इस में जिन सह़ाबए किराम, उ़लमाए इस्लाम और औलियाए उ़ज़ाम का विसाल हुवा, उन में से 134 का मुख़्तसर ज़िक्र माहनामा फ़ैज़ाने मदीना जुमादल उ़ख़रा 1438 हि. ता 1447 हि. के शुमारों में किया जा चुका है, मज़ीद 13 का तआ़रुफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان

1 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन ख़लफ़ क़रशी जमह़ी رَضِیَ اللهُ عَنْه क़ुरैश के क़बीले बनू जम्ह़ से हैं, आप ने फ़त्ह़े मक्का के मौक़ेअ़ पर इस्लाम क़बूल किया और ह़ुज्जतुल वदाअ़ में शिर्कत की। आप ने जंगे जमल में जुमादल उ़ख़रा 36 हि. को जामे शहादत नोश फ़रमाया।[1]

2 ह़ज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन साइब मख़्ज़ूमी رَضِیَ اللهُ عَنْه क़बिलए क़ुरैश की शाख़ बनु मख़्ज़ूम से हैं, येह भी फ़त्ह़े मक्का और ह़ुज्जतुल वदाअ़ में शरीक़ हुए और जंगे जमल में जुमादल उ़ख़रा 36 को शहादत पाई।[2]

औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم

3 मक़्बूल ख़ासो आ़म ह़ज़रते सय्यिद ह़ैदर वलियुल्लाह क़ादिरी गीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश बग़दाद इराक़ में ख़ानदान ग़ौसुल आज़म में हुई और 3 जुमादल उ़ख़रा 1033 हि. को विसाल फ़रमाया, मज़ार नीलंगा, अह़सनाबाद, कर्नाटक, हिन्द में मर्जए ख़लाइक़ है। आप वलिय्ये कामिल, साह़िबे तसर्रुफ़ व करामत और जाज़िब नज़र शख़्सिय्यत के मालिक थे, सल्तनत बीजापूर के सुल्तान इब्राहीम आ़दिल शाह सानी आप का मुरीद था।[3]

4 दीवाने शाह अ़ब्दुल बाक़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه वलिय्ये कामिल और सिल्सिलए क़ादिरिय्या से मुन्सलिक थे। विसाल 18 जुमादल उ़ख़रा 1072 हि. को हुवा। येह दीवान ह़ुज़ूरी शैख़ अ़ब्दुल्लाह क़ादिरी सौहावी के ख़लीफ़ा थे। शैख़ अ़ब्दुल वाह़िद आप के साह़िबज़ादे और जांनशीन मुक़र्रर हुए।[4]

5 शैख़े त़रीक़त शैख़ सय्यिद अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन इ़लाल ह़सनी यम्लह़ी वज़ानी फ़ासी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश फ़ास, मग़रिब (मराकिश) के इ़ल्मी व रूह़ानी घराने में हुई। आप फ़ारिग़ुत तह़सील आ़लिमे दीन व फ़क़ीह, कसीरुल इ़बादत, सिल्सिलए वज़ानिया के शैख़े त़रीक़त और मक़्बूले ख़ासो आ़म थे। विसाल 29 जुमादल उ़ख़रा 1335 हि. को हुवा, तदफ़ीन रौज़ा बाब उ़जैसा, फ़ास में हुई।[5]

6 ह़ज़रते पीर सय्यिद इमाम अ़ली साह गीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश कफ़्री, वादी सून सकेसर में हुई और 16 जुमादल उ़ख़रा 1344 हि को 105 साल की उ़म्र में विसाल फ़रमाया। मज़ार जबी

शरीफ़ में है। आप मुरीदो ख़लीफ़ा ख़्वाजा सुलैमान तूंसवी, आ़बिदो ज़ाहिद, बानिए आस्ताना आ़लिया जबी शरीफ़ कसरत से तिलावत करने वाले और मुस्तजाबुद्दावात थे। ज़िन्दगी के आख़िरी साल भी बावुजूद ज़ोफ़ व कमज़ोरी माहे रमज़ान के पूरे रोज़े रखे।[6]

7 प्रोफ़ेसर आ़बिद ह़सन फ़रीदी जमाअ़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दीनी व दुनियावी तालीम से आरास्ता, प्रोफ़ेसर व सदर शोबा फ़ारसी सेन्ट जॉन्सन कॉलेज आगरा, मुरीदो ख़लीफ़ा अमीरे मिल्लत, मुत्तबेअ़ सुन्नत, जज़्बए तरवीजे इस्लाम से सरशार और साहिबे कश्फ़ बुज़ुर्ग थे, विसाल 4 जुमादल उ़खरा 1364 हि. को फ़रमाया, तदफ़ीन मज़ार सय्यिद अबुल उ़ला के क़रीब आगरा, यूपी हिन्द में की गई।[7]

8 ह़ज़रते मौलाना पीर सूफ़ी किफ़ायत अ़ली क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश बिलमिराम, यूपी हिन्द में हुई और 2 जुमादल उ़खरा 1389 हि. मे विसाल फ़रमाया, मज़ार क़ादिरी मस्जिद से मुत्तसिल है। आप सय्यिद जम्मन मियां शाहजान पूरी के मुरीदो ख़लीफ़ा, निहायत मुत्तक़ी व परहेज़गार, मुसन्निफ़ कुतुबो रसाइल, मतवाज़ेअ़ व मुतवक्किल और निहायत मुन्कसिरुल मिज़ाज थे, कसीर मुरीदों में जस्टिस मुफ़्ती सय्यिद शुजाअ़त अ़ली क़ादिरी और मौलाना सय्यिद सआ़दत अ़ली क़ादिरी भी हैं।[8]

उ़लमाए इस्लाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام

9 इमाम अबू उ़स्मान अम्र बिन आ़सिम कलाबी क़ैसी बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इमाम हिमाम बिन यह़या अज़दी बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से ह़दीस का सिमाअ़ किया। आप रिवायाने सह़ीह़ बुख़ारी से हैं। आप का विसाल बसरा में जुमादल उ़खरा 212 या 213 हि. को हुवा।[9]

10 शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते अबू इस्ह़ाक़ इब्राहीम फ़ीरोज़आबादी शीराज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादत 393 हि. को फ़ीरोज़ाबाद (सूबा फ़ारस) ईरान में हुई और 21 जुमादल उ़खरा 476 हि. को बग़दाद में विसाल फ़रमाया, तदफ़ीन बाबे अबरज़ बग़दाद इ़राक़ में हुई। आप फ़िक़्हे शाफ़ेई़ के मुज्तहिद, अमीरुल मोमिनीन फ़िल फ़िक़ह, मुसन्निफ़े कुतुबे कसीरा, अख़्लाक़े ह़सना से मुत्तसिफ़, फ़साह़तो बलाग़त के जामेअ़ और मुदर्रिस मद्रसए निज़ामिया बग़दाद थे। اَلنُّكَتُ فِي الْمَسَائِلِ الْمُخْتَلَف आप का इ़ल्मी यादगार है।[10]

11 उस्ताज़ुल हुफ़्फ़ाज़ मौलाना ह़ाफ़िज़ ग़ुलाम ह़बीब नक़्शबन्दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश दरबट्टा नज़्द लावह में हुई और 10 जुमादल उ़खरा 1384 हि. को विसाल फ़रमाया, आप जय्यिद ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, बेहतरीन मुदर्रिस, मुरीद ह़ज़रते पीर शाह मुह़म्मद नक़्शबन्दी (आस्तानए आ़लिया दन्दाशाह बिलावल), आ़शिक़े क़ुरआन, कसीरुत्तलामिज़ा, ग़ैरतमन्द व सख़ी और बग़ैर लौमते लाइम ह़क़ साथ देने वाले थे।[11]

12 क़ाइदे मिल्लत ह़ज़रते मौलाना ह़सन रज़ा ताजी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश 1366 हि. को रौशनपूर ज़िला अमेठी यूपी हिन्द में हुई और आप आ़लिमे दीन, फ़ाज़िले जामिआ़ अ़रबिया सुल्तान पूर, शागिर्द सद्रुल उ़लमा अ़ल्लामा सय्यिद ग़ुलाम जीलानी मेरठी, मुरीद बाबा अ़ब्दुस्समद ताजी, ख़लीफ़ा आस्तानाए आ़लिया बरेली शरीफ़ और बानी मद्रसा ताजुल उ़लूम समदिया, क़ासिमपूरा, गांधीनगर जाइस, ज़िला अमेठी हैं। वफ़ात 22 जुमादल उ़खरा 1439 हि. को हुई और तदफ़ीन मज़्कूरा मद्रसे के सेह़न में की गई।[12]

13 ह़ज़रते शैख़ रादीन अस्नावी बिन अ़ब्दुल्लाह क़ुदस जावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश 1281 हि. को क़र्या दमारान नज़्द क़ुदस, सेन्ट्रल जावा इन्डोनेशिया के इ़ल्मी घराने में हुई और 25 जुमादल उ़खरा 1378 हि. को विसाल फ़रमाया। आप आ़लिमे कबीर, अ़ल्लामा अ़स्र, फ़ाज़िले मस्जिदुल ह़राम मक्कए मुकर्रमा, उस्ताज़ुल उ़लमा, सूफ़िए बासफ़ा, मुजाहिदे तह़रीके आज़ादी वत़न, बानिए मद्रसा महदुल इस्लामी क़ुदस और बानी रुक्ने जम्इ़यत नहज़तल उ़लमा इन्डोनेशिया थे।[13]

---

(1)الاصابہ،4/3(2)الاصابہ،4/260(3)تذکرۃ الانساب،ص122، 123 (4)گوجر خان کے سہروردی مشائخ ص 25،26(5)معجم الشیوخ المسمی ریاض الجنہ، ص 58 تا 60 (6) سرزمین اولیاء، ص 173 تا 178 (7)تذکرہ خلفائے امیر ملت،ص137تا139(8)تذکرہ اولیائے سندھ،ص269،270(9)الہدایہ والرشاد، 2/548- اسامی شیوخ البخاری للصغانی،ص172(10)سیر اعلام النبلاء، 14/7 تا 12 (11) تذکرہ علمائے اہل سنت ، ص 245 ، 246 (12) قائد ملت،حیات وخدمات،ص19تا40(13)المختصر الحاوی،ص131،132۔





ख़रगोश का गोश्त (Rabbit meat)

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ह़ज़रत मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बकरी, दुम्बा, भेड़, ऊंट, ख़रगोश, मुर्ग़, बटेर और मछली का गोश्त तनावुल फ़रमाया है।[1] आइए ! ख़रगोश के गोश्त से मुतअ़ल्लिक़ रिवायात व फ़वाइद वग़ैरा मुलाह़ज़ा करते हैं :

ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़रगोश की रान का गोश्त क़बूल फ़रमाया :

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : हम ने मर्रज़्ज़हरान के मक़ाम पर ख़रगोश को दौड़ते पाया तो लोगों ने उसे पकड़ने की कोशिश की, तो लोग थक गए, मैं ने उस को देखा तो पकड़ लिया। मैं उस को ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه के पास लाया, तो उन्हों ने उस को ज़ब्ह़ किया और ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ उस की सुरीन या रानों का गोश्त भेजा। रावी फ़रमाते हैं : उस की रानों का गोश्त भेजा और उस में कोई शक नहीं कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को क़बूल फ़रमाया। मैं ने पूछा : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस में से खाया था ? तो रावी फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस में से खाया था, फिर बाद में कहा कि क़बूल फ़रमाया।[2]

मर्रज़्ज़हरान ह़रमैन शरीफ़ैन के दरमियान मक्कए मुअज़्ज़मा के क़रीब एक बस्ती है वहां ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه ने ख़रगोश ज़िन्दा पकड़ लिया था (और मज़्कूरा वाक़िआ पेश आया)।[3]

ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते आइशा को ख़रगोश का गोश्त खिलाया :

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ख़रगोश तोह़फ़े में भेजा, उस वक़्त मैं सोई हुई थी, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस का पिछला (यानी रान वाला) ह़िस्सा मेरे लिए रख दिया, जब मैं जागी तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह मुझे खिलाया।[4]

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन सफ़्वान رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमात हैं कि वोह दो ख़रगोश हाथ में लटकाए हुए रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास से गुज़रे, अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने येह दो ख़रगोश शिकार किए हैं, लेकिन मुझे कोई ऐसी लोहे की चीज़ (छुरी वग़ैरा) नहीं मिली कि जिस से मैं उन को ज़ब्ह़ करता तो

मैं ने उन्हें एक सफ़ेद (तेज़दार) पत्थर से ज़ब्ह किया है, क्या मैं उन्हें खा सकता हूं ? हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : खा लो।[5]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक आराबी रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास एक भुना हुवा ख़रगोश, चटनी और सालन ले कर आया, और आप के सामने रख दिया, तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने आप को रोके रखा ख़ुद नहीं खाया, और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم को हुक्म दिया कि वोह खा लें।[6]

रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़रगोश का गोश्त खाने के ह़वाले से मुहक़्क़िक़ीन का कुछ इख़्तिलाफ़ है अलबत्ता उ़लमा व फ़ुक़हाए अह़नाफ़ का वाज़ेह़ मौक़िफ़ दलाइल के साथ येही है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़रगोश का गोश्त तनावुल फ़रमाया है जैसा कि फ़िक़्हे ह़नफ़ी की मश्हूरो मारूफ़ किताब "अल हिदाया" में है : ख़रगोश का गोश्त खाने में कोई ह़रज नहीं है, इस लिए कि जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में भुना हुवा ख़रगोश पेश किया गया तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस में से खाया और अपने सह़ाबा رَضِیَ اللهُ عَنْهُم को उस में से खाने का हुक्म दिया।[7]

ख़रगोश के गोश्त के फ़वाइद

❁ कहा जाता है कि ख़रगोश के गोश्त की त़बीअ़त गर्म और ख़ुश्क है। ❁ ख़रगोश का गोश्त हल्का नम्कीन और लज़ीज़ होता है। ❁ ख़रगोश के गोश्त में विटामिन, प्रोटीन और ग़िज़ाइयत बकरे के गोश्त से भी ज़ियादा होती है। ❁ एक तह़क़ीक़ के मुताबिक़ सब से ज़ियादा प्रोटीन ख़रगोश के गोश्त में मौजूद हैं जो कि 33 फ़ीसद हैं। ❁ ख़रगोश का गोश्त ज़ूद हज़्म होता है। ❁ ख़रगोश का गोश्त सांस की तक्लीफ़ में फ़ायदेमन्द है। ❁ अमराज़े जिगर में ख़रगोश का गोश्त खाना बहुत मुफ़ीद है। ❁ ख़रगोश के गोश्त में आयरन की मिक़्दार ज़ियादा होती है जो ख़ून की कमी के मरीज़ों के लिए अहम है। ❁ ख़रगोश का गोश्त ह़ामिला ख़वातीन की सेह़त के लिए मुफ़ीद है। ❁ ख़रगोश का गोश्त ब्लड प्रेशर को कम करने में मदद करता है, अगर ब्लड प्रेशर के मरीज़ गोश्त में ख़रगोश का इस्तिमाल करें तो इस बीमारी पर क़ाबू पाया जा सकता है। ❁ ख़रगोश के गोश्त में मेग्नेशियम पाया जाता है जो कि मुदाफ़ेअ़ती निज़ाम और बीमारियों से लड़ने के लिए बहुत फ़ायदेमन्द है। ❁ ख़रगोश का गोश्त जिस्म से सफ़रावी माद्दों के इख़राज को बढ़ाता है।[8]

नोट : तमाम मरीज़ अपने त़बीब (डॉक्टर या ह़कीम) के मश्वरे से इस्तिमाल कीजिए। इस मज़्मून की त़िब्बी तफ़तीश ह़कीम रिज़्वान फ़िरदौस अ़त्तारी ने की है।

---

(1) دیکھیے: سیرتِ مصطفیٰ، ص586 (2) بخاری، 2/167، حدیث: 2572
(3) دیکھیے: مراٰۃ المناجیح، 5/661 (4) دار قطنی، 5/524، حدیث: 4788
(5) ابن ماجہ، 3/587، حدیث: 3244 (6) دیکھیے: مسند امام احمد بن حنبل، 14/154، حدیث: 8434 (7) ھدایہ، جزء4، 2/352 (8) مختلف ویب سائٹ سے ماخوذ۔



मुख़्तलिफ़ बीमारियों के घरेलू त़िब्बी इलाज जानने के लिए किताब "घरेलू इलाज" आज ही दावते इस्लामी की वेबसाइट से डाउनलोड कीजिए, ख़ुद भी पढ़िए और दूसरों को शेयर भी कीजिए।



(NAFLD) फ़ैटी लीवर

पेट के दाएं जानिब पस्लियों के नीचे वाक़े जिगर इन्सानी जिस्म का निहायत अहम अन्दरूनी उ़ज़्व है, जिसे जिस्म की **"कीमियाई फ़ैक्ट्री"** भी कहा जाता है। येह हमारी ख़ूराक को तवानाई में बदलने, चिक्नाई को हज़म करने के लिए "सफ़रा" नामी सैय्याल बनाने और ख़ून से ज़हरीले माद्दों को साफ़ करने के साथ ढेरों ज़रूरी काम अन्जाम देता है। इस की सब से ह़ैरत अंगेज़ बात येह है कि अगर इस का कुछ ह़िस्सा ख़राब या काट भी दिया जाए तो येह ख़ुद को दोबारा मुकम्मल त़ौर पर बनाने की सलाह़ियत रखता है। ताहम, दीगर आज़ा की त़रह़ येह भी बीमारियों का शिकार हो सकता है, जिन में सब से आ़म मस्अला "**फ़ैटी लीवर**" यानी जिगर पर चर्बी का जमा होना है। येह दो त़रह़ का होता है : एक आल्कोह़ल (शराब) के इस्तिमाल से, और दूसरा आल्कोह़ल के बग़ैर, जिसे त़ब्बी ज़बान में Non-alcoholic fatty liver disease (NAFLD) कहा जाता है। आ़म ह़ालत में जिगर में मामूली चर्बी का होना क़ुदरती है, लेकिन जब येह मिक़्दार जिगर के कुल वज़्न के 5 फ़ीसद से बढ़ जाए तो इस ह़ालत बल्कि यूं कह लीजिए कि इस बीमारी को त़िब्बी ज़बान में फ़ैटी लीवर कहा जाता है।

मुम्किना वुजूहात

1. **मोटापा :** बढ़ता हुवा वज़्न भी उ़मूमन इस का सबब हो सकता है ख़ास त़ौर पर पेट और कमर के इर्द गिर्द ज़ाइद चर्बी का जमा होना।

2. **डायबिटीज़ (टाइप 2 शूगर) :** इन्स्युलीन की मुज़ाह़मत (Insulin Resistance) जिगर में चर्बी जमा करने का बाइ़स बनती है कि जब ख़लियात इन्स्युलीन को सह़ीह़ इस्तिमाल नहीं करते तो जिस्म इज़ाफ़ी चर्बी ख़ून में छोड़ देता है, जिसे जिगर अपने अन्दर ज़ख़ीरा कर लेता है।

3. **ग़ैरमुतवाज़न ग़िज़ा :** प्रोसेस शुदा खाने,[1] बाज़ारी खाने, फ़ास्टफ़ूड, मिठाइयां, कूकिंग ऑयल का कसरत से इस्तिमाल और मीठे मशरूबात इस में अच्छा भला ह़िस्सा मिलाते हैं।

4. **सुस्त त़र्ज़े ज़िन्दगी :** वर्ज़िश न करना और दिन भर बैठ कर काम करने की आ़दत भी आप के जिगर में फ़ैट का सबब बन सकती है।

5. **कोलेस्ट्रॉल और ट्राई ग्लेसराइडज़ :** ख़ून में नुक़्सान देह चर्बी की मिक़्दार का ज़ियादा होना।

मराह़िल / अ़लामात

इब्तिदाई मर्ह़ले में जिगर पर सिर्फ़ चर्बी जमा होती है जो बग़ैर किसी अ़लामत के ख़ामोशी से बढ़ती है, ताहम बाज़ औक़ात पेट के दाएं जानिब ऊपर हल्का भारी पन या थकावट महसूस हो सकती है, इस मर्ह़ले पर परहेज़ और वर्ज़िश से मुकम्मल बेहतरी हो सकती है लेकिन अगर इस पर ध्यान न दिया जाए तो चर्बी की कसरत से जिगर में सोज़िश और वरम पैदा हो जाता है। वक़्त के साथ येह सोज़िश जिगर को सख़्त कर के सुकड़ने पर मजबूर कर देती है, और अगर अब भी इ़लाज न किया जाए तो जिगर मुकम्मल त़ौर पर काम करना छोड़ देता है जिसे "Liver Failure" कहा जाता है।

अल्लाह करीम इस त़रह़ के जान लेवा अमराज़ से सब की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन

बचाव और क़ुदरती इ़लाज

ख़ुश क़िस्मती से अगर इब्तिदाई मराह़िल में फ़ैटी लीवर का पता

(1) यानी वोह ग़िज़ा जिसे मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मराह़िल से गुज़ार कर उस की अस्ल क़ुदरती ह़ालत बदल दी गई हो।

चल जाए तो बग़ैर किसी महंगी दवा के, सिर्फ़ अपने रोज़ मर्रा के अन्दाज़े ज़िन्दगी में मुन्दरजा ज़ैल तब्दीली ला कर जिगर को दोबारा 100 सेहतमन्द बनाया जा सकता है।

1 **वज़्न में कमी :** अपने जिस्मानी वज़्न का सिर्फ़ 7% से 10% कम करने से जिगर की चर्बी में नुमायां कमी आती है।

2 **ग़िज़ा में तब्दीली :** फ़ास्टफ़ूड, तली हुई अश्या, चीनी और प्रोसेस शुदा खाने और मैदे वाली चीज़ों से मुकम्मल परहेज़ करें। अपनी ख़ूराक में सब्ज़ियां, फल, दालें और फ़ाइबर (रेशा) शामिल करें।

3 **रोज़ाना वर्ज़िश :** रोज़ाना कम अज़ कम 30 मिनट तेज़ पैदल वॉक या हल्की वर्ज़िश जिगर से चर्बी घुलाने में इन्तिहाई मददगार साबित होती है।

4 **पानी का वाफ़िर इस्तिमाल :** दिन में 8 से 10 ग्लास पानी पिएं ताकि जिस्म से फ़ासिद मादे निकल सकें।

फ़ैटी लीवर को मामूली समझ कर नज़र अन्दाज़ करना आगे चल कर एक बड़ा तिब्बी मस्अला बन सकता है। अगर आप को अपने अल्ट्रा साउन्ड में फ़ैटी लीवर का पता चले तो घबराने के बजाए आज ही से अपनी ग़िज़ा और रूटीन को बेहतर बनाएं और किसी मुस्तनद डॉक्टर से मश्वरा करें।

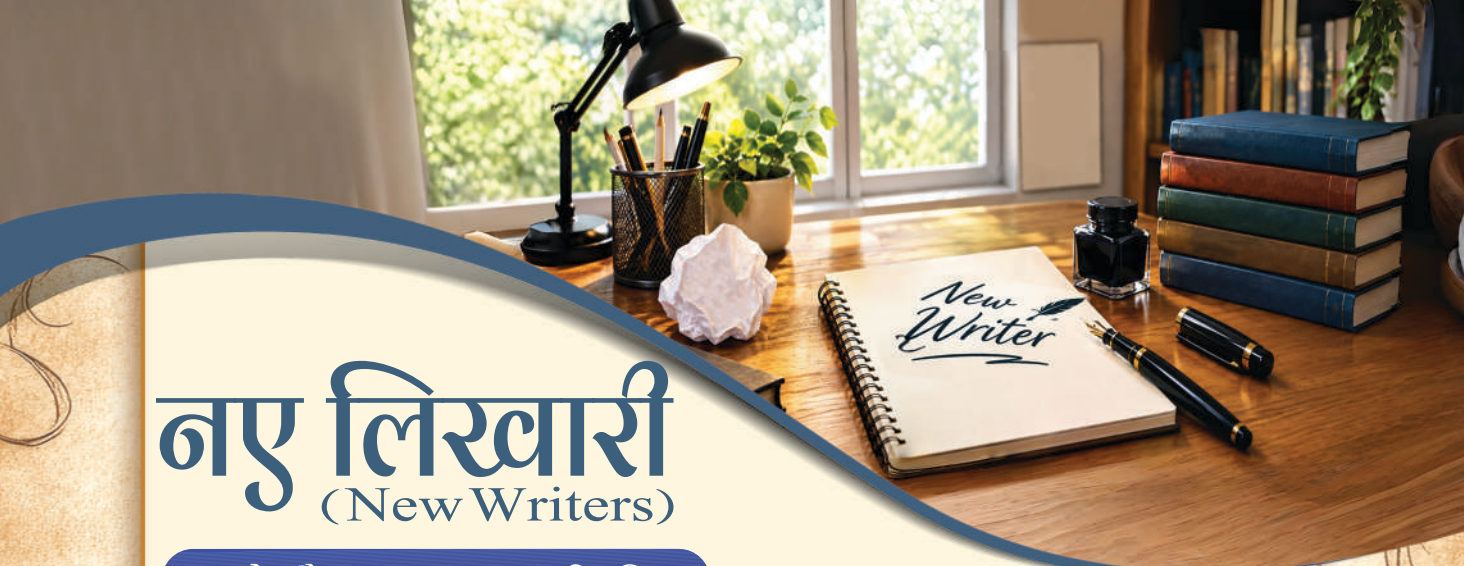
जिगर की हिफ़ाज़त के मुतअ़ल्लिक़ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का एक मुख़्तसर मज़्मून फ़वाइद के पेशे नज़र शामिल किया गया है :

कई लोग रात को देर से घर पहुंचते, खा पी कर फ़ारिग़ होते ही कुछ देर चलने फिरने के बजाए फ़ौरन ही बिस्तर पर लेट जाते हैं, त़िब्बी एतिबार से इन की येह आ़दत इन के लिए नुक़्सान का बाइ़स है, इस से पेट फूलता, कोलेस्ट्रॉल बढ़ता, शूगर प्रोबलम हो जाता, जिस्म के मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों में दर्द होता, वज़्न बढ़ता, कमर की हड्डी में तक्लीफ़ पैदा होती और न जाने क्या क्या बीमारियां जिस्म में दाख़िल हो जाती हैं। वज़्न बढ़ाने में मज़्कूरा बे एह़तियाती के साथ साथ येह चीज़ें मिठास, मैदा और जमने वाली चिक्नाहट जिस में चर्बी, घी और बाज़ तेल भी शामिल हैं। इन के ज़ियादा इस्तिमाल नीज़ बैठ कर देर तक लिखने पढ़ने या दफ़्तरी काम करने, पैदल चलने के बजाए सिर्फ़ स्कूटर या कार वग़ैरा में सफ़र करने, चारज़ानू यानी चौकड़ी मार कर बैठ कर खाने, टेबल कुर्सी पर पांव लटका कर खाने, खाना ज़ियादा खाने, ज़ियादा गर्म खाने, बदन का वज़्न अक्सर बाएं (यानी Left) त़रफ़ डालने मसलन बैठे हुए या खाना खाते हुए बायां (यानी Left) हाथ ज़मीन पर टेकने, दीवार वग़ैरा पर बाएं (यानी Left) त़रफ़ सहारा लेने, पानी पी कर फ़ौरन सो जाने का भी वज़्न बढ़ाने में बड़ा दख़्ल है। ऐसों की एक तादाद है जिन के जिगर पर चर्बी हो जाती है ह़ालांकि बन्दा जिगर के बल पर ज़िन्दा रहता है, बेशक दिल भी बदन का अहम तरीन ह़िस्सा है मगर जिगर भी कम अहम नहीं, ऐसे अफ़राद को चाहिए कि पहली फ़ुर्सत में अपने कलेजे यानी जिगर की ख़बर लें और इस का टेस्ट करवाएं, और अगर कुछ निकल आए तो मत घबराएं, किसी अच्छे ह़कीम से मश्वरा कर के रोज़ाना पाबन्दी से एक करेले का जूस पिएं और सुब्ह़ सुब्ह़ दरमियानी रफ़्तार से एक घन्टा या कम अज़ कम पौन घन्टा (यानी 45 मिनट) पैदल चलें, बल्कि तन्दुरुस्त हो या मरीज़ जो पैदल चल सकता हो तो मेरी गुज़ारिश है कि वोह चले और कुछ न कुछ वर्ज़िश भी करे, इस से जिगर की चर्बी पिघलेगी, एक आध महीना इस नुस्ख़े पर अ़मल कर के आप दोबारा टेस्ट करवाएंगे तो अगर चर्बी ख़त्म न भी हुई होगी तो कमी ज़रूर आई होगी اِنْ شَآءَاللّٰه الْكَرِيْم फिर इस नुस्ख़े पर अ़मल जारी रखेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه आप का जिगर क्लियर हो जाएगा। लेकिन येह याद रखिए कि "सौ दवा की एक दवा परहेज़ है।" लिहाज़ा डॉक्टर आप को बोले इस से पहले मेरी बात मान लीजिए और अपनी सेह़त का इस लिए ख़याल रखिए ताकि बेहतर त़रीक़े से इ़बादत की जा सके। नीज़ जिन का वज़्न बढ़ा हुवा है उन के लिए मक्तबतुल मदीना की किताब **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** के दो अबवाब **"आदाबे त़आ़म"**, **"पेट का क़ुफ़्ले मदीना"** और रिसाला **"वज़्न कम करने का त़रीक़ा"** का मुत़ालआ़ बहुत ही मुफ़ीद है।

अल्लाह पाक हमें ज़ाहिरी व बात़िनी बीमारियों से नजात अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(माहनामा फ़ैज़ाने मदीना जन्वरी 2023 ई. बैक टाइटल)

(**नोट :** इस मज़्मून की त़िब्बी तफ़्तीश डॉक्टर जुनैद ह़नीफ़ ने की है।)



नए लिखारी
(New Writers)

ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْہِ السَّلَام का क़ुरआनी तज़्किरा

मुह़म्मद कैफ़ अ़त्तारी
(दर्जए सादिसा जामिअ़तुल मदीना)

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में अम्बियाए किराम (के वाक़िआ़त को मह़ज़ तारीख़ बयान करने के लिए नहीं बल्कि इ़ब्रत, नसीह़त और ईमान की तक़्वियत के लिए ज़िक्र फ़रमाया है। इन्ही बरगुज़ीदा हस्तियों में एक नाम ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْہِ السَّلَام का भी है, जिन का वाक़िआ़ सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 259 में निहायत दिलनशीं अन्दाज़ में बयान हुवा है। अगर्चे इस आयत में नाम की सराह़त नहीं, ताहम अक्सर मुफ़स्सिरीने किराम के नज़्दीक इस से मुराद ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْہِ السَّلَام ही हैं।

क़ुरआने मजीद में येह वाक़िआ़ कुछ यूं बयान हुवा है कि एक बस्ती, जिसे अक्सर मुफ़स्सिरीन बैतुल मुक़द्दस से ताबीर करते हैं, अपनी छतों के बल गिरी पड़ी थीं, इस के मकीन हलाक हो चुके थे। इस वीरान व बरबाद बस्ती से गुज़रते हुए उस बुज़ुर्ग हस्ती की ज़बान से बेसाख़्ता येह कलिमात निकले कि अल्लाह तआ़ला इस मुर्दा बस्ती को मौत के बाद कैसे ज़िन्दा करेगा। येह सुवाल इन्कार की बिना पर नहीं बल्कि ऐनुल यक़ीन की बिना पर था। इस पर अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْہِ السَّلَام की रूह़ क़ब्ज़ फ़रमा दी। जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿اَوْ كَالَّذِیْ مَرَّ عَلٰى قَرْیَةٍ وَّ هِیَ خَاوِیَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى یُحْیٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : या (क्या तुम ने) उस शख़्स को (न देखा) जिस का एक बस्ती पर गुज़र हुवा और वोह बस्ती अपनी छतों के बल गिरी पड़ी थी तो उस शख़्स ने कहा : अल्लाह उन्हें उन की मौत के बाद कैसे ज़िन्दा करेगा ? तो अल्लाह ने उसे सौ साल मौत की ह़ालत में रखा फिर उसे ज़िन्दा किया। (پ3، البقرۃ:259)

सौ बरस गुज़रने के बाद अल्लाह तआ़ला ने उन्हें दोबारा ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाई और फ़रमाया कि कितनी मुद्दत यहां ठहरे। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि एक दिन या इस से भी कम अ़र्सा। इरशाद हुवा :

﴿قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَ شَرَابِكَ لَمْ یَتَسَنَّهْ ۚ وَ انْظُرْ اِلٰى حِمَارِكَ وَ لِنَجْعَلَكَ اٰیَةً لِّلنَّاسِ وَ انْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ كَیْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : अल्लाह ने फ़रमाया : (नहीं) बल्कि तू यहां सौ साल ठहरा है और अपने खाने और पानी को देख कि अब तक बदबूदार नहीं हुवा और अपने गधे को देख (जिस की हड्डियां तक सलामत न रहीं) और येह (सब) इस लिए (किया गया है) ताकि हम तुम्हें लोगों के लिए एक निशानी बना दें और उन हड्डियों को देख कि हम कैसे उन्हें उठाते (ज़िन्दा करते) हैं फिर उन्हें गोश्त पहनाते हैं। (پ3، البقرۃ:259)

चुनान्चे अल्लाह तआ़ला ने उन की आंखों के सामने ही उस गधे की बिखरी हड्डियों को जोड़ कर उन पर गोश्त पोश्त चढ़ाया और उसे दोबारा ज़िन्दा कर दिया। येह मन्ज़र देख कर उन की ज़बान से बे साख़्ता निकला कि ﴿اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ (۲۵۹)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : मैं ख़ूब जानता हूं कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (پ3، البقرۃ:259)

येह वाक़िआ दर ह़क़ीक़त क़ियामत के दिन दोबारा ज़िन्दा किए जाने के यक़ीन और अल्लाह तआ़ला की क़ुदरते कामिला पर एक वाज़ेह़ दलील के त़ौर पर पेश किया गया है, ताकि हर दौर का इन्सान इस से सबक़ ले कि जिस ज़ात ने मुर्दा हड्डियों को दोबारा ज़िन्दगी बख़्शी, वोही ज़ात क़ियामत के दिन तमाम मख़्लूक़ को दोबारा उठाने पर भी क़ादिर है।

ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْہِ السَّلَام का दूसरा तज़्किरा सूरतुत्तौबा की आयत नम्बर 30 में मिलता है, जहां यहूद के एक गुमराह गिरोह के इस बात़िल अ़क़ीदे का ज़िक्र है कि वोह ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْہِ السَّلَام को अल्लाह का बेटा क़रार देते थे, जैसे नसारा ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के बारे में ग़ुलू का शिकार थे। क़ुरआने मजीद ने उस बात़िल अ़क़ीदे की सख़्ती से तरदीद फ़रमाई और इसे उन लोगों के मुंह की बेबुनियाद बातें क़रार दिया जो पहले क़ाफ़िरों के अक़्वाल की मुशाबहत रखती हैं। चुनान्चे इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿وَقَالَتِ الْیَهُوْدُ عُزَیْرُ ابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِیْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ یُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى یُؤْفَكُوْنَ(۳۰)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और यहूदियों ने कहा : उ़ज़ैर अल्लाह का बेटा है और ईसाइयों ने कहा : मसीह़ अल्लाह का बेटा है। येह उन की अपने मुंह से कही हुई बात है, येह पहले के क़ाफ़िरों जैसी बात करते हैं। अल्लाह उन्हें मारे, कहां औंधे जाते हैं? (پ10، التوبۃ:30)

येह आयत इस बात की त़रफ़ वाज़ेह़ रहनुमाई करती है कि किसी नबी या बुज़ुर्ग हस्ती की मह़ब्बत व अ़क़ीदत में इस ह़द तक ग़ुलू करना कि उसे उलूहिय्यत या अल्लाह की औलाद में शुमार कर लिया जाए, सरासर शिर्क व कुफ़्र है। ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْہِ السَّلَام ख़ुद इस बात़िल नज़रिए से यक्सर बरी और अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब व बरगुज़ीदा बन्दे थे।

इन दोनों मक़ामात पर ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْہِ السَّلَام के तज़्किरे से उम्मते मुस्लिमा के लिए दो बुनियादी सबक़ मिलते हैं :

पहला येह कि अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत पर मुकम्मल यक़ीन रखना चाहिए, चाहे अ़क़्ल किसी अम्र की ह़क़ीक़त को फ़ौरी त़ौर पर समझने से क़ासिर हो, क्यूंकि जो ज़ात मुर्दा को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है वोही ज़ात क़ियामत के दिन दोबारा उठाने पर भी क़ादिर है।

दूसरा येह कि अम्बिया व औलिया की मह़ब्बत में एतिदाल ज़रूरी है, और किसी भी नेक हस्ती के बारे में ऐसा अ़क़ीदा रखना जो अल्लाह तआ़ला की वह़दानिय्यत की मुनाफ़ी हो, शिर्क है। येही वजह है कि क़ुरआने मजीद ने ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْہِ السَّلَام का ज़िक्र दो अलग अलग मक़ामात पर, दो अलग अलग पहलूओं से फ़रमा कर उम्मते मुह़म्मदिया को अ़क़ीदे की दुरुस्तगी और यक़ीने आख़िरत की मज़बूती का सबक़ अ़ता फ़रमाया।

अल्लाह पाक हमें क़ुरआने करीम पढ़ कर दुरुस्त अ़क़ीदा रखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

अ़फ़्वो दर गुज़र की नबवी तालीमात

अब्दुर्रह़मान अमजद
(दर्जए साबिआ़ जामिअ़तुल मदीना)

अ़फ़्वो दरगुज़र (मुआ़फ़ करना और चश्मपोशी करना) इस्लामी अख़्लाक़ियात का वौह रौशन सुतून है जिस के ज़रीए नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक उजड़े हुए और जंग ज़दा मुआशरे को अम्न, मह़ब्बत और उख़ुव्वत का गहवारा बना दिया। आप عَلَیْہِ السَّلَام की सीरते त़य्यिबा का येह पहलू रहती दुनिया तक के इन्सानों के लिए मश्अ़ले राह है।

अ़फ़्वो दरगुज़र का लुग़वी और इस्ति़लाही माना : अ़फ़्व के लुग़वी माना मिटाने या छोड़ देने के हैं, जब कि इस्ति़लाह में इस से मुराद बदला लेने की त़ाक़त रखने के बावुजूद किसी की ग़लती को मुआ़फ़ कर देना है। दरगुज़र का मत़लब है मलामत न करना और दिल में मैल न रखना।

क़ुरआने मजीद में अल्लाह तआ़ला ने आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया : ﴿خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِیْنَ(۱۹۹)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : ऐ ह़बीब ! मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का ह़ुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो। (پ9، الاعراف:199)

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने न सिर्फ़ इस क़ुरआनी ह़ुक्म पर ख़ुद अ़मल कर के दिखाया बल्कि अपनी अह़ादीस और अ़मली

ज़िन्दगी के ज़रीए उम्मत को भी उस का दर्स दिया।

आइये अ़फ़्व व दरगुज़र के मुतअ़ल्लिक़ नबवी तालीमात पढ़िये:

1 इ़ज़्ज़त में इ़ज़ाफ़ा : इन्सानी नफ़्स येह समझता है कि मुआ़फ़ करने से इन्सान कमज़ोर या बे इ़ज़्ज़ती का शिकार होता है, लेकिन रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस जाहिलाना तसव्वुर को रद करते हुए फ़रमाया: مَا نَقَصَتْ صَدَقَةٌ مِنْ مَالٍ وَمَا زَادَ اللّٰهُ عَبْدًا بِعَفْوٍ اِلَّا عِزًّا وَمَا تَوَاضَعَ اَحَدٌ لِلّٰهِ اِلَّا رَفَعَهُ اللّٰهُ तर्जमा : सदक़ा देने से माल कम नहीं होता, और अल्लाह तआ़ला बन्दे के मुआ़फ़ करने की वजह से उस की इ़ज़्ज़त ही बढ़ाता है और जो कोई अल्लाह के लिए आ़जिज़ी इख़्तियार करता है, अल्लाह उस का मरतबा बुलन्द फ़रमा देता है। (مسلم، ص1071، حدیث:6592)

2 जो रहम नहीं करता उस पर रहम नहीं किया जाता : ह़ज़रते जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: لَا يَرْحَمُ اللّٰهُ مَنْ لَا يَرْحَمُ النَّاسَ तर्जमा : जो लोगों पर रहम नहीं करता, अल्लाह भी उस पर रहम नहीं फ़रमाता। (بخاری، 4/531، حدیث:7376)

3 अ़फ़्वो दरगुज़र की फ़ज़ीलत : ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन अनस जुहनी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: مَنْ كَظَمَ غَيْظًا وَهُوَ قَادِرٌ عَلٰى اَنْ يُنْفِذَهُ دَعَاهُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ عَلٰى رُؤُوسِ الْخَلَائِقِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتّٰى يُخَيِّرَهُ اللّٰهُ مِنَ الْحُورِ الْعِينِ مَا شَاءَ तर्जमा : जिस शख़्स ने ग़ुस्सा पिया बावुजूद इस के कि वोह उसे नाफ़िज़ करने (बदला लेने) पर क़ादिर था, अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसे तमाम मख़्लूक़ के सामने बुलाएगा यहां तक कि उसे इख़्तियार देगा कि वोह जिस ह़ूर को चाहे चुन ले। (ابوداؤد، 4/325، حدیث:4777)

4 कितनी दफ़ा दरगुज़र किया जाए? : ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا बयान करते हैं कि एक शख़्स नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं अपने ख़ादिम (या मातह़त) को कितनी बार मुआ़फ़ करूं ? आप ख़ामोश रहे। उस ने दोबारा पूछा, तो आप ने फ़रमाया : كُلَّ يَوْمٍ سَبْعِينَ مَرَّةً यानी उसे रोज़ाना सत्तर (70) बार मुआ़फ़ (व दरगुज़र) कर दिया करो। (ترمذی، 3/381، حدیث:1956)

अ़फ़्वो दरगुज़र की नबवी तालीमात हमें येह सबक़ देती हैं कि मुआ़शरती अम्न का क़ियाम इन्तिक़ाम से नहीं बल्कि दरगुज़र से मुम्किन है। आज हमारे मुआ़शरे में जो तल्ख़ी, अ़दमे बरदाश्त और लड़ाई झगड़े पाए जाते हैं, उन का वाह़िद इ़लाज इस नबवी सिफ़त को अपनाने में है।

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त हमें इस सिफ़त को अपनाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मुत़ालआ़ए ह़वाशी की अहमिय्यत और फ़वाइद

सय्यिद उसैद
(दर्जए सादिसा मर्कज़ी जामिअ़तुल मदीना)

मुत़ालआ़ एक ऐसा सफ़र है जिस में कभी तो रास्ता हमवार मिलता है तो कभी मुश्किल, ख़ास कर जब किसी फ़न्नी किताब का मुत़ालआ़ किया जा रहा हो तो बाज़ मक़ामात ऐसे आते जैं जो फ़हम से बालातर होने के सबब क़ारी को कश्मकश में डाल देते हैं ऐसे में ह़ाशिया एक रौशन चराग़ की त़रह़ क़ारी के लिए उन तारीक राहों को मुनव्वर कर देता है।

ह़ाशिये से मुराद : लुग़वी एतिबार से ह़ाशिये का लफ़्ज़ इब्तिदाअन किताब के किनारों के लिए इस्तिमाल होता था, फिर येही लफ़्ज़ उन किनारों पर लिखी जाने वाली तह़रीर के लिए बोला जाने लगा और बाद में येह तह़रीरी सिल्सिला इस क़दर बढ़ गया कि उसे एक मुस्तक़िल तस्नीफ़ की शक्ल ह़ासिल हो गई, जिसे "**तअ़लीक़**" के नाम से भी जाना जाता है। (دیکھیے: کشف الظنون، 1/623)

ह़ाशिया निगारी का आग़ाज़ : ह़ाशिया निगारी का आग़ाज़ सातवीं सदी हिजरी में हुवा, सब से पहले मुह़श्शी नज्मुल उ़लमा अ़ली बिन मुह़म्मद बिन अह़मद बिन अ़ली (मुतवफ़्फ़ा : 667 हि.) हैं। आप ने हिदाया के मुश्किल मक़ामात पर फ़वाइद के नाम से ह़ाशिया लिखा है। (इमाम अह़मद रज़ा की ह़ाशिया निगारी, 2/27)

ह़क़ीक़त येह है कि ह़ाशिये उस्ताद की इस तक़रीर की मानिन्द है जो सबक़ के साथ जारी हो जिस त़रह़ उस्ताद की तक़रीर ग़फ़लत से

सुनना इ़ल्मी इस्तिफ़ादा में कमी का बाइ़स बनता है, इसी त़रह़ ह़ाशिये से सर्फ़े नज़र करना भी क़ारी को बहुत से इ़ल्मी फ़वाइद से महरूम कर सकता है। ह़ाशिये की इस अहमिय्यत को सामने रखते हुए येह जानना भी ज़रूरी है कि उस के मुत़ालए से क़ारी को किन इ़ल्मी फ़वाइद से बहरामन्द होने का मौक़अ़ मिलता है। लिहाज़ा ज़ैल में ह़ाशिये पढ़ने के चन्द फ़वाइद बयान किए जा रहे हैं मुलाह़ज़ा कीजिए:

1 **मुश्किल मक़ामात की तस्हील :** कभी ऐसा होता है कि इ़बारत इस क़दर दक़ीक़ आ जाती है कि क़ारी के लिए समझना दुश्वार होता है यहां ह़ाशिया इस मुश्किल मक़ाम को आसान अलफ़ाज़ में समझा देता है।

2 **फ़हम पर ताईद :** बहुत दफ़ा त़ालिबे इ़ल्म मतन पढ़ कर ख़ुद एक मफ़हूम अख़्ज़ करता है, और जब ह़ाशिया इसी मफ़हूम की तस्दीक़ करता है तो उस के फ़हम पर ताईद हो जाती है, चूंकि मतन मुख़्तसर और जामेअ़ होता है जो बहुत से मफ़ाहीम को समेटे हुए होता है, इस लिए ह़ाशिया इस मुराद को वाज़ेह़ करता है जो मुसन्निफ़ के पेशे नज़र होती है।

3 **दफ़्ए एतिराज़ :** बाज़ मक़ामात पर इ़बारत महल्ले एतिराज़ होती है, यानी उस पर किसी ज़ाविये से एतिराज़ क़ाइम किया जा सकता है। ऐसे में मुह़श्शी इस एतिराज़ को दफ़ा कर के मतन का दिफ़ाअ़ करता है, ताकि मतन की सेह़त और माना पर कोई ह़र्फ़ न आए।

4 **मसादिर व मराजेअ़ तक रसाई :** मुह़श्शी कभी मतन में ज़िक्र की गई इ़बारत के ह़वालाजात पेश कर देता है, जिस से क़ारी को माख़ज़ व मराजेअ़ तक रसाई ब आसानी मिल जाती है।

5 **तआ़रुफ़े शख़्सियात :** बसा औक़ात ह़ाशिया मतन में मज़्कूर किसी शख़्सिय्यत का तआ़रुफ़ पेश करता है, जिस के सबब क़ारी को इ़बारत समझने में ख़ासी आसानी हो जाती है।

6 **तम्बीहे अग़लात़ :** बाज़ दफ़ा मातिन से तसामोह़ वाक़ेअ़ हो जाता है, ऐसी सूरत में ह़ाशिये क़ारी की राहनुमाई करता है इस त़रह़ कि उसे इस ग़लती पर मुत्तलअ़ कर के दुरुस्तगी की राह दिखाता देता है।

7 **इ़ज़ाफ़ए ज़ख़ीरए अलफ़ाज़ :** ह़वाशी का मुसल्सल मुत़ालआ़ रफ़्ता रफ़्ता त़ालिबे इ़ल्म के ज़ख़ीरए अलफ़ाज़ में इ़ज़ाफ़ा करता है, यूं वोह नई इस्तिलाह़ात से भी आश्ना होता चला जाता है।

मुख़्तसर बस येह कि जिस त़रह़ रहनुमा के बग़ैर मुसाफ़िर रास्ता भटक सकता है, इसी त़रह़ ह़ाशिये से बेनियाज़ क़ारी भी इ़ल्मी मक़ामात पर ठोकर खा सकता है। लिहाज़ा मतन के साथ ह़ाशिये का भी बग़ौर मुत़ालआ़ किया जाए, ताकि किताब से पूरा पूरा फ़ायदा ह़ासिल हो सके।

अल्लाह पाक हमें गहराई से मुत़ालआ़ करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم





बच्चों के लिए प्यारी ह़दीस

अल्लाह से महब्बत करो

अल्लाह पाक के प्यारे और आख़िरी नबी मुहम्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَحِبُّوا اللّٰهَ यानी अल्लाह पाक से महब्बत करो। (ترمذی، 5/434، حدیث:3814)

प्यारे बच्चो ! इस ख़ूबसूरत ह़दीस में हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें सिखा रहे हैं कि हमें अपने सच्चे रब से दिल से महब्बत करनी चाहिए।

ग़ौर तो कीजिए ! हम अपने प्यारे अल्लाह से महब्बत क्यूं न करें ? अल्लाह पाक हमारा ख़ालिक़, और हमारा मालिक है, हम उस के बन्दे हैं, उसी ने हमें पैदा किया, दुनिया में भेजा, हमें कोई मामूली जानवर नहीं बनाया, बल्कि सब से ख़ूबसूरत शक्ल वाला इन्सान बनाया। देखने के लिए आंखें, सुनने के लिए कान, चलने फिरने के लिए पांव, हमें अ़क़्ल और समझ दी, सोचने और समझने की सलाह़िय्यत दी जिस के ज़रीए हम अच्छे बुरे की पहचान करते हैं और दीगर हज़ार त़रह़ की जिस्मानी नेमतें अ़त़ा कीं। अल्लाह तआ़ला ने हमें इन्सान बनाने के साथ साथ मुसलमान बनाया, अपने प्यारे मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत में शामिल किया।

तो हम अल्लाह पाक से महब्बत क्यूं न करें कि जिस ने हमारे लिए चांद, सूरज, सितारे, पहाड़, दरख़्त, दरिया, समुन्दर, खेत, फ़स्लें, फल, मेवे और न जाने कैसी कैसी नेमतें पैदा फ़रमाईं और हम दिन रात उन नेमतों से फ़ायदे उठाते हैं। क़ुरआने पाक की बहुत सी आयात में इन नेमतों का ज़िक्र मौजूद है।

प्यारे बच्चो ! बाक़ी सारी नेमतें तो एक त़रफ़, हम सिर्फ़ एक नेमत **"गन्दुम"** को ही देखें तो ह़ैरान रह जाते हैं कि अल्लाह पाक ने एक छोटे से दाने से हमारे लिए कितनी बड़ी नेमत पैदा की और कैसे पैदा की, चुनान्चे बहुत बड़े आ़लिमे दीन इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं कि गन्दुम के एक दाने को उगाने के लिए अल्लाह पाक ने कितना बड़ा निज़ाम चलाया है। उस दाने को मिट्टी में बोया जाता है, हवा को चलाने के लिए अल्लाह हवाओं को हुक्म देता है, मिट्टी को गर्म रखने के लिए सूरज को हुक्म देता है और मौसमों को बदलता है, फिर बादलों को पानी से भारी कर के हवा के ज़रीए दूर दराज़ अ़लाक़ों तक पहुंचाता है और बूंद बूंद कर के बारिश बरसाता है ताकि बस्तियां ग़र्क़ न हों, पहाड़ों में पानी ज़ख़ीरा करता है जो आहिस्ता आहिस्ता चश्मों की सूरत में निकलता है, अल्लाह के हुक्म से रात को चांद की ठन्डी रौशनी फलों को पकाती और रंगीन

करती है। (देखिये: احیاء علوم الدین، 4/142، 143)

अ़ज़ीज़ बच्चो ! सोचें, गन्दुम के एक दाने के लिए ज़मीन, हवा, बादल, बारिश, सूरज और चांद सब मिल कर काम कर रहे हैं ! हमारे ऊपर येह अल्लाह पाक का कितना बड़ा एहसान है।

हर वक़्त सांस लेते हैं, येह क़ीमती ऑक्सीजन जो कि अस्पतालों में मरीज़ों को हज़ारों, लाखों रुपिये ख़र्च करने पर मिलती है लेकिन हमें दरख़्तों के ज़रीए हवा में बिल्कुल मुफ़्त मिलती है।

हम ऐसे करम वाले रब से महब्बत क्यूं न करें जिस ने हमारे पीने के लिए साफ़ और ठन्डा पानी रखा, खाने के लिए मज़ेदार और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खाने बनाए, पहनने के लिए ख़ूबसूरत कपड़े और रहने के लिए प्यारा घर दिया, येह घर हमें सर्दी, गर्मी और बारिश से बचाता है, हमें प्यार करने वाले अम्मी अब्बू और बहन भाई दिए जो हर वक़्त हमारा ख़याल रखते हैं।

अच्छे बच्चो ! जिस अल्लाह पाक ने हमारे ऊपर नेमतों की इतनी मूसलाधार बारिश बरसाई है हमारा भी हक़ बनता है कि हम अपने प्यारे रब से दिलो जान से महब्बत करें, अल्लाह और रसूल को राज़ी करने वाले काम करें।

हमें अपने अच्छे आमाल से साबित करना होगा कि हम अल्लाह से सच्ची महब्बत करते हैं : पांच वक़्त की नमाज़ अदा कर के अल्लाह पाक से महब्बत का सुबूत दें, रोज़ाना क़ुरआने पाक की तिलावत करें, अपने अम्मी अब्बू की बात मानें और उन का अदबो एहतिराम करें, ग़रीब और ज़रूरतमन्द बच्चों की मदद करें, किसी भूके को खाना खिलाएं, येह सब महब्बते इलाही की निशानियां हैं। इसी तरह अल्लाह की नाफ़रमानियों से बचना और दीगर गुनाह वाले कामों से बचना भी महब्बते इलाही की निशानी है।

जब हम येह अच्छे काम करेंगे और बुरे कामों से बचेंगे तो हमारा प्यारा अल्लाह हम से राज़ी होगा और हमें दुनिया और आख़िरत में बहुत बड़ा इन्आ़म देगा। اِنْ شَآءَاللہ

अल्लाह पाक हमें अपनी सच्ची महब्बत अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

हफ़्तावार रसाइल की कारकर्दगी (अगस्त 2026 ई)

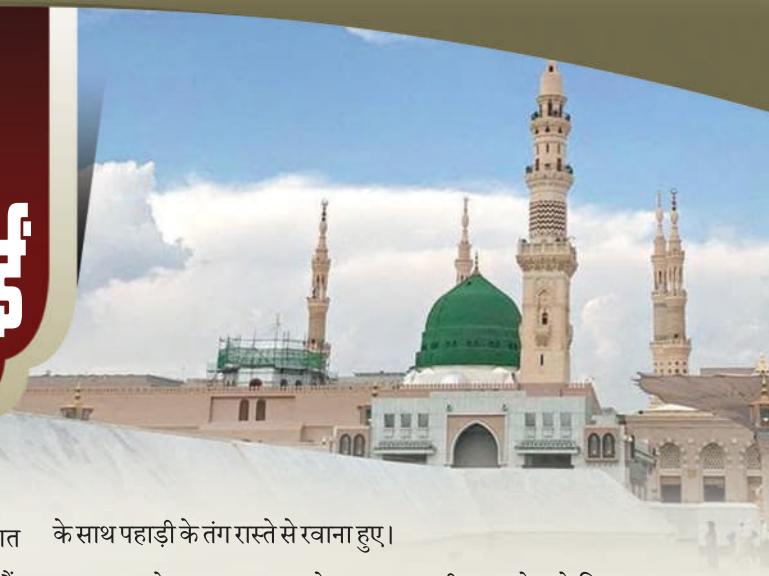
शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ हर हफ़्ते एक मदनी रिसाला पढ़ने / सुनने की तरग़ीब दिलाते और पढ़ने / सुनने वालों को दुआओं से नवाज़ते हैं। अगस्त 2026 ई में दिए गए 4 मदनी रसाइल के नाम और उन की कारकर्दगी पढ़िए :

1. अल्लाह वालों के 12 वाक़िआ़त (क़िस्त : 1) : 14 लाख, 93 हज़ार 648
2. इमाम ग़ज़ाली की सुनहरी बातें (क़िस्त : 02) : 14 लाख, 92 हज़ार 628
3. अच्छा बोलने सुनने के फ़ायदे : 14 लाख, 84 हज़ार 81
4. अरबईने अ़त्तार (क़िस्त : 4) : 16 लाख, 44 हज़ार 665



आख़िरी नबी का प्यारा मोजिज़ा

उंगलियां रौशन हो गईं



प्यारे बच्चो ! हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मोजिज़ात में अल्लाह पाक की क़ुदरत की निशानियां भी नज़र आती हैं, अल्लाह पाक की त़रफ़ से आप की हिफ़ाज़त का ख़ुदावन्दी एहतिमाम भी पता चलता है और रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिक्मत व रह़मत भी मालूम होती है। आज ऐसा ही एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ पढ़ते हैं जिस में रात की तारीकी में आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुवारी से गिरने वाले सामान की बआसानी तलाश के लिए हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मोजिज़ाना शान से सह़ाबिए रसूल की उंगलियां रौशन हो गईं। वाक़िए की तफ़्सील येह है कि

एक मरतबा हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दूर कहीं से सफ़र करते हुए सह़ाबए किराम के साथ मदीना शरीफ़ आ रहे थे। रास्ते में दुश्मन मुनाफ़िक़ीन ने प्रोग्राम बनाया कि उस रास्ते में थोड़ा सा रास्ता ऐसा भी है जो ऊंचाई पर भी है और काफ़ी पतला भी, वहां रात के अन्धेरे में हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उस ऊंटनी को छेड़ कर परेशान करेंगे जिस पर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुवार होंगे ताकि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पहाड़ से नीचे गिर जाएं (مَعَاذَاللہ)। अल्लाह पाक ने हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इन मुनाफ़िक़ों के प्लान का बता दिया तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बाक़ी सारे लोगों को पहाड़ के नीचे वाले मह़फ़ूज़ आसान और खुले रास्ते से जाने का फ़रमाया और ख़ुद ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर और ह़ज़रते हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا के साथ पहाड़ी के तंग रास्ते से रवाना हुए।

दुश्मन थोड़ा दूर रह कर हुज़ूरे अकरम का पीछा करने लगे फिर एक जगह उन्हों ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को घेरने की कोशिश की और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ऊंटनी को भी छेड़ा ताकि वोह तेज़ चले और अपने जिस्म को झटके दे कर सुवार को गिरा दे, रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुवारी से कुछ सामान गिर गया, ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهُ मुनाफ़िक़ों को वहां से धुत्कारने और उन की सुवारियों के चेहरों पर मारने लगे दूसरी त़रफ़ रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी बुलन्द आवाज़ से इन पर ग़ुस्से और नाराज़ी का इज़्हार फ़रमा रहे थे जिस से उन्हें अन्दाज़ा हो गया कि हमारा प्लान रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मालूम हो चुका है लिहाज़ा वोह तेज़ी से नीचे की त़रफ़ भाग गए और दूसरे लोगों में शामिल हो गए।

इसी दौरान ह़ज़रते ह़म्ज़ा बिन अ़म्र अस्लमी رَضِیَ اللهُ عَنْهُ भी वहां हुज़ूरे अकरम से आ मिले थे, वोह कहते हैं कि मैं ने रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुवारी से गिरने वाले सामान को जमा करना चाहा तो मेरी पांचों उंगलियां रौशन हो गईं जिन की रौशनी में मैं ने कोड़ा, रस्सी और जो सामान भी गिर गया था ढूंड कर जमा कर लिया। (دیکھیے: سبل الھدی والرشاد، 5/466-سیرۃ الحلبیہ، 3/201)

प्यारे बच्चो ! ह़ज़रते ह़म्ज़ा बिन अ़म्र अस्लमी رَضِیَ اللهُ عَنْهُ की पांचों उंगलियों का रौशन हो जाना हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक अ़ज़ीम मोजिज़ा है। इस वाक़िए से हमें बहुत सी अच्छी बातें

सीखने को मिलती हैं :

- अल्लाह पाक अपने महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिफ़ाज़त फ़रमाता है। मुनाफ़िक़ों ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नुक़्सान पहुंचाने का मन्सूबा बनाया, मगर अल्लाह पाक ने अपने महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उन का मन्सूबा बता दिया, अल्लाह की अ़ता से आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ग़ैब की बातें मालूम होती थीं।
- मुश्किल वक़्त में घबराने के बजाए ख़ुद पर क़ाबू रखना चाहिए और हिक्मते अ़मली से मुश्किल का सामना करना चाहिए।
- एहतियात से काम लेते हुए तदबीर इख़्तियार करना तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं।
- अच्छा राहनुमा सिर्फ़ अपनी ही नहीं बल्कि अपने साथियों की हिफ़ाज़त का भी इन्तिज़ाम करता और उन के लिए आसानियां करता है।
- अपने बड़ों की ख़िदमत करना और उन की चीज़ों की हिफ़ाज़त करना सआ़दत मन्दों का काम है।
- अगर किसी की तरफ़ से तक्लीफ़ पहुंचने का डर हो तो बहुत मोहतात रहना चाहिए और अपनी हिफ़ाज़त के लिए हुजूम का सहारा लेने न लेने में हिक्मत व दानाई से काम लेना चाहिए, कभी हुजूम ख़तरों से बचाता है और कभी हुजूम में ख़तरा बढ़ जाता है।
- मुसीबत में दूसरों के काम आना बड़ी नेकी है।
- हमें रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरत से हिक्मत अपनाना और वक़्त के मुताबिक़ सहीह फ़ैसला करना सीखना चाहिए।
- इस्तिमाल की ज़रूरी चीज़ें बज़ाहिर कितनी ही मामूली क्यूं न हों ज़रूरत के वक़्त बहुत काम आती हैं लिहाज़ा इन की क़द्र और हिफ़ाज़त करनी चाहिए और अगर वोह इधर उधर हो जाएं तो उन्हें नज़र अन्दाज़ नहीं करना चाहिए।

हुरूफ़ मिलाइये !

प्यारे बच्चो ! सलाम करना हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ूबसूरत सुन्नत है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुसलमानों को आपस में सलाम को आ़म करने की तरग़ीब दी है। सलाम करने से दिलों में महब्बत बढ़ती और दूरियां कम होती हैं। हमें अपने दोस्तों, रिश्तेदारों, असातिज़ा और बड़ों सब से सलाम में पहल करनी चाहिए। सलाम में पहल करने से तकब्बुर ख़त्म होता है। जैसा कि नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : पहले सलाम करने वाला तकब्बुर से बरी (आज़ाद) है। (شعب الایمان، 6/433، حدیث:8786) सलाम करने वाले पर 90 रहमतें और जवाब देने वाले पर 10 रहमतें नाज़िल होती हैं। (कीमियाए सआ़दत, 1/394) जो हमें सलाम करे, हमें उस से बेहतर या कम अज़ कम वैसा ही जवाब देना चाहिए। اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ कहने से 10 नेकियां मिलती हैं। साथ में وَرَحْمَةُ اللهِ भी कहेंगे तो 20 नेकियां हो जाएंगी और وَبَرَكَاتُهٗ , शामिल करेंगे तो 30 नेकियां हो जाएंगी। (ابو داؤد، 4/449، حدیث:5195)

प्यारे बच्चो ! आज से निय्यत कीजिए कि हम हर मुसलमान से महब्बत के साथ सलाम करेंगे और इस ख़ूबसूरत सुन्नत को ज़िन्दा रखेंगे।

ح	غ	و	ت	ب	ح	م	ھ	ة
خ	ر	ت	ے	ل	چ	پ	و	ئ
ل	چ	ں	ی	ت	م	ح	ر	م
ش	ت	ب	ک	ی	ن	د	س	ح
ن	ک	ق	ز	ی	م	ا	ل	س
ط	ب	ن	ا	ر	ب	ژ	ف	ہ
د	ر	ض	ح	ڈ	ص	ث	ب	غ
ل	ک	چ	ح	ذ	ل	ہ	پ	ص

आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर पांच अलफ़ाज़ तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़ "नेक" तलाश कर के बताया गया है। तलाश किए जाने वाले 5 अलफ़ाज़ येह हैं : ❶ मुहब्बत ❷ रहमतें ❸ तकब्बुर ❹ पहल ❺ सलाम।



बच्चों के सुवालात को संजीदगी से लीजिए

बच्चों की जिस्मानी परवरिश के साथ साथ उन की ज़ेहनी, अख़्लाक़ी और दीनी तरबियत भी वालिदैन की अहम ज़िम्मेदारी है। बच्चों की तरबियत में एक ऐसा पहलू है जिसे अक्सर नज़र अन्दाज़ कर दिया जाता है, और वोह है **बच्चों के सुवालात को संजीदगी से लेना।**

बाज़ वालिदैन बच्चों के सुवालात को फ़ुज़ूल समझ कर नज़र अन्दाज़ कर देते हैं, उन्हें डांट देते हैं या येह कह कर ख़ामोश करवा देते हैं कि "**ज़ियादा सुवाल न करो।**" इस त़र्ज़े अमल से बच्चा आहिस्ता आहिस्ता सुवाल करना छोड़ देता है। फिर वोह अपने सुवालों के जवाब कहीं और तलाश करता है, जहां हर जवाब दुरुस्त और मह़फ़ूज़ हो, येह ज़रूरी नहीं।

अगर वालिदैन मह़ब्बत, तह़म्मुल और तवज्जोह के साथ बच्चों की बात सुनें, उन के सुवालात के जवाबात उन की उ़म्र के मुताबिक़ आसान अलफ़ाज़ में दें, या अगर जवाब मालूम न हो तो किसी मोतबर ज़रीए से मालूम कर के उन्हें बताएं, तो बच्चे का एतिमाद अपने वालिदैन पर बढ़ता है। वोह हर अहम मुआ़मले में सब से पहले अपने मां बाप की त़रफ़ रुजूअ करता है, और येही मज़बूत तअ़ल्लुक़ उस की बेहतरीन तरबियत की बुनियाद बनता है।

इस मज़मून में बच्चों के सुवालात के तअ़ल्लुक़ से वालिदैन की तवज्जोह चन्द बातों की त़रफ़ मबज़ूल करवाई जा रही है ताकि वालिदैन उन पर अ़मल कर के बच्चों की तरबियत का सामान कर सकें।

बच्चे के सुवाल का मज़ाक़ न उड़ाएं

बाज़ बच्चे बहुत मासूम या अ़जीब सुवाल पूछते हैं जिस पर घर के बड़े हंस पड़ते हैं, बहन भाई मज़ाक़ बनाते हैं और बच्चा शर्मिन्दा हो जाता है।

वालिदैन को इस बात का ख़ास ख़याल रखना चाहिए कि बच्चे के सुवाल को ख़ानदान की मह़फ़िल में मज़ाक़ का मौज़ूअ न बनाया जाए। क्यूंकि आज जिस सुवाल पर आप हंसे हैं, मुम्किन है कल जब उसे कोई संजीदा मस्अला दरपेश हो तो वोह आप से पूछने के बजाए ख़ामोश रहना पसन्द करे और येह बच्चे की तरबियत में नुक़्सान देह साबित हो सकता है।

कभी बच्चे का सुवाल दरअस्ल शिकायत होता है

बच्चे कभी कभी अपनी शिकायत सीधे अन्दाज़ में बयान नहीं करते बल्कि वोह सुवाल की शक्ल में अपने दिल की बात कहते हैं।

मसलन : "**आप भाई को मुझ से ज़ियादा प्यार करते हैं ?**" इस सुवाल का जवाब फ़ौरन येह नहीं होना चाहिए : "**फ़ुज़ूल बातें न करो !**" बल्कि वालिदैन को सोचना चाहिए कि बच्चे को ऐसा मह़सूस क्यूं हुवा ? क्या वाक़ेई दोनों बच्चों के साथ रवय्ये में कोई फ़र्क़ है ? क्या एक बच्चे की ज़रूरिय्यात पूरी करते हुए दूसरे बच्चे को नज़र अन्दाज़ किया जा रहा है ? क्या बार बार किसी एक बच्चे की तारीफ़ और दूसरे पर तन्क़ीद हो रही है ? अल ग़रज़ बच्चे के एह़सास को ग़लत़ साबित करने से पहले उसे समझना ज़रूरी है।

यहां वालिदैन यूं कह सकते हैं : "नहीं बेटा ! हम दोनों से मह़ब्बत करते हैं। अगर तुम्हें कभी ऐसा मह़सूस हुवा है तो हमें बताओ, ताकि हम तुम्हारे इस एह़सास को दूर कर सकें।" येह जवाब बच्चे के दिल में एतिमाद पैदा करेगा।

बच्चों के सुवालात में उन की तरबियत के मवाक़ेअ़ तलाश करें

बच्चों के सुवालात को नज़र अन्दाज़ करने के बजाए उन के हर सुवाल को तरबियत का एक मौक़ा बनाया जा सकता है।

मसलन वालिदैन में से किसी ने बतौरे मदद किसी को कुछ पैसे दिए तो बच्चा पूछता है : "अब्बू ! आप ने उस शख़्स को पैसे क्यूं दिए ?" यहां वालिदैन सिर्फ़ येह न कहें : "**क्यूंकि वोह ज़रूरत मन्द है ।**" बल्कि उसे समझाया जा सकता है कि अल्लाह पाक ने हमें जो नेमतें दी हैं, उन में दूसरों का भी ख़याल रखना चाहिए। अगर किसी ज़रूरतमन्द की मदद की जाए तो इस से हमारे अन्दर रहम, शुक्र, और इन्सानियत का जज़्बा पैदा होता है। इस के इलावा किसी की ज़रूरत पूरी करना बहुत बड़े सवाब का काम है, नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने भाई की हाजत पूरी करता रहता है, अल्लाह उस की हाजत पूरी करता रहता है।(مسلم، ص1069، حدیث:6578)

इसी तरह बच्चे को अगर किसी का मज़ाक़ उड़ाने से रोका जाए तो वोह बाज़ औक़ात पूछता है कि : "**हमें किसी का मज़ाक़ क्यूं नहीं उड़ाना चाहिए ?**" येह एक बेहतरीन मौक़ा है कि उसे बताया जाए कि हर इन्सान की इज़्ज़त होती है, किसी की शक्ल, लिबास, रंग, ज़बान, ग़ुर्बत या किसी कमज़ोरी को मज़ाक़ का ज़रीआ नहीं बनाना चाहिए। यूं एक मामूली सा सुवाल अख़्लाक़ी तरबियत का सबक़ बन जाता है।

जब बच्चा पूछे : "**हम इतने अमीर क्यूं नहीं ?**" येह सुवाल आम तौर पर उस वक़्त पैदा होता है जब बच्चे अपने इर्द गिर्द दूसरों को महंगे मोबाइल, बड़े घर, अच्छी गाड़ियां या क़ीमती खिलौने इस्तिमाल करते देखते हैं। वालिदैन को ऐसे सुवाल पर शर्मिन्दा होने या बच्चे को डांटने के बजाए उसे बेहतर अन्दाज़ में समझाना चाहिए। उसे बताया जा सकता है कि हर बन्दे के हालात मुख़्तलिफ़ होते हैं। किसी के पास एक चीज़ ज़ियादा है तो किसी के पास दूसरी। और येह अल्लाह पाक की तक़्सीम है। हमें अल्लाह पाक की तक़्सीम पर राज़ी रहना चाहिए। अल्लाह की तक़्सीम पर राज़ी रहना बरकत का सबब और राज़ी न होना बे बरकती का सबब है। हदीसे पाक में है : अल्लाह तआला अपने बन्दे को जो कुछ अता करता है उस के ज़रीए अपने बन्दे को आज़माता है, पस जो उस पर राज़ी हो जाता है जो अल्लाह ने उस के लिए हिस्सा मुक़र्रर फ़रमाया तो अल्लाह उस हिस्से में अपने उस बन्दे के लिए बरकत देता है, और उस में वुस्अत देता है, और जो कोई राज़ी नहीं होता उस के लिए बरकत नहीं दी जाती। (مسند احمد، 33/403، حدیث:20279)

हस्सास सुवालात पर वालिदैन का रवय्या बहुत अहम है

एक ख़ास उम्र के बाद बच्चों के सुवालात ज़ियादा हस्सास हो सकते हैं। वोह जिस्मानी तब्दीलियों, बलूग़त, शादी, पैदाइश, मर्दो औरत, मौत, बीमारी और मुआशरती मसाइल के बारे में सुवाल कर सकते हैं। येह वोह मर्हला है जहां वालिदैन की ज़िम्मेदारी मज़ीद बढ़ जाती है।

अगर वालिदैन हर सुवाल पर ग़ुस्सा करेंगे तो बच्चा ख़ामोश तो हो सकता है, लेकिन उस की जुस्तजू ख़त्म नहीं होगी। वोह मालूमात कहीं न कहीं से हासिल करेगा। आज के दौर में मोबाइल और इन्टरनेट तक रसाई ने येह मस्अला मज़ीद अहम बना दिया है। इस लिए वालिदैन को चाहिए कि बच्चे की उम्र और ज़ेहनी सत्ह के मुताबिक़ दुरुस्त महफ़ूज़, बावक़ार और मुनासिब मालूमात ख़ुद फ़राहम करें।

अगर कोई बात अभी तफ़्सील से बताना मुनासिब न हो तो उसे डांटने के बजाए कहा जा सकता है : "येह एक अहम मौज़ूअ है। मैं तुम्हें इस के बारे में तुम्हारी उम्र के मुताबिक़ समझाता हूं, और जो बात अभी तफ़्सील से समझना ज़रूरी नहीं उसे बाद में समझेंगे।"

वालिदैन के अमल में तज़ाद पर सुवाल

बाज़ औक़ात बच्चा वालिदैन के अमल में तज़ाद देखता है तो वोह उस पर सुवाल करता है। मसलन

"**जब झूट बुरी बात है तो आप ने झूट क्यूं बोला ?**"

"आप कहते हैं ग़ुस्सा नहीं करना चाहिए, फिर आप ख़ुद ग़ुस्सा क्यूं करते हैं ?"

"आप कहते हैं मोबाइल कम इस्तिमाल करो, लेकिन आप ख़ुद हर वक़्त मोबाइल क्यूं इस्तिमाल करते हैं ?"

"आप कहते हैं वक़्त की पाबन्दी करो, फिर आप ख़ुद देर से क्यूं आते हैं ?"

इस तरह के सुवालात को संजीदा लेते हुए वालिदैन को अपने अमल का दिफ़ाअ करने के बजाए अगर वाक़ेई ग़लती हुई है तो उसे तस्लीम करने में शर्म महसूस नहीं करनी चाहिए। यहां येह कहना चाहिए कि "हां, मुझ से ग़लती हुई है। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था, اِنْ شَآءَاللّٰه الْكَرِيْم मैं अपने रवय्ये को बेहतर करने की कोशिश करूंगा।" येह जुम्ला भी बच्चे की तरबियत का हिस्सा बन सकता है।

अल्लाह पाक हमें अपने बच्चों की इस्लामी उसूलों के मुताबिक़ तरबियत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन



बेटियों की तरबियत

बेटियों को घरदारी सिखाएं

घर का निज़ाम चलाने के लिए वसाइल की फ़राहमी मर्द की ज़िम्मेदारी है तो इन वसाइल के ज़रीए घर के मुआमलात को मुनज़्ज़म अन्दाज़ में तरतीब देना औरत पर मुन्हसिर है लिहाज़ा ज़रूरत इस बात की है कि हम अभी से अपनी बेटियों की इसी तर्ज़ पर तरबियत करें कि वोह आइन्दा जिस घर की भी रौनक़ बनें तो अपनी अख़्लाक़ी और शरई ज़िम्मेदारी को ख़ुश उस्लूबी और ख़ुद एतिमादी के साथ अन्जाम दे सकें।

और इस ज़िम्मेदारी को बख़ूबी निभाने मे जो चीज़ बहुत अहमिय्यत की ह़ामिल है वोह है "**रोज़ मर्रा उमूर की मुनज़्ज़म त़ौर पर अन्जाम दही।**"

जो औरत अपने रोज़ मर्रा कामों को जितना मुनज़्ज़म अन्दाज़ से चलाना जानती होगी उस का घर उतना ही निखरा हुवा, संवरा हुवा और पुरसुकून होगा।

लिहाज़ा एक मां को चाहिए कि वोह बेटा और बेटी दोनों को बचपन ही से घर के छोटे मोटे कामों की आ़दत डलवाए मसलन चीज़ें तरतीब से रखें, अपनी अल्मारियां साफ़ रखें, अपने जूते कपड़े तरतीब से रखें, चाय, लस्सी, शरबत वग़ैरा बनाना सीखें, छोटी बच्चियों से थोड़े बहुत बरतन धुलवाना, हल्की फुल्की झाड़ू लगवाना, छोटे मोटे कपड़े जैसे टोपी, मोज़े, रूमाल, स्काफ़ वग़ैरा धुलवाना।

सब्ज़ी बनाते हुए उन्हें साथ बिठाना चाहिए ताकि पालक, भिन्डी वग़ैरा साफ़ करने और काटने की आ़दत पड़े, लहसन, अदरक छीलना, पीसना आए।

और जब लड़कियां 14, 15 साल की हो जाएं तो बस उन्हें खाना पकाना सिखाना शुरूअ़ कर देना चाहिए।

येही उ़म्र होती है जिस में हर नया काम करने और सीखने की धुन होती है। बच्चियों को प्यार मह़ब्बत से समझाना चाहिए कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की लाडली बेटी शहज़ादिए कौनैन बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا अपने घर के काम काज ख़ुद किया करती थीं। इस से मालूम हुवा कि घर के काम काज अपने हाथ से करना, झाड़ू पोचा वग़ैरा कोई इ़ज़्ज़त घटाने वाले काम नहीं हैं, बल्कि येह तो शहज़ादिए कौनैन का मुबारक त़रीक़ा है और अगर आप उन के त़रीक़े पर अ़मल की निय्यत से येह काम करेंगी तो सवाब की भी ह़क़दार होंगी।

घर को बग़ैर किसी ज़ेहनी दबाव के बआसानी साफ़ और मुनज़्ज़म रखने के लिए बच्चियों को दर्जे ज़ैल छोटी छोटी आ़दतों को मुस्तक़िल अपनाने का ज़ेहन दिया जाए।

1 सुब्ह़ उठते ही सब से पहले अपना बिस्तर दुरुस्त कर लें। यक़ीन कीजिए कि दो मिनट के इस मामूली काम की बदौलत आप का कमरा 80 फ़ीसद साफ़ सुथरा मन्ज़र पेश करने लगता है। जब कि बिखरा बिस्तर, पूरे कमरे की बेतरतीबी की अ़लामत बन जाता है।

हमारे शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत अ़ल्लामा मुहम्मद इल्यास अ़त्तारी क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की त़रफ़ से हमें जो 63 नेक आमाल का रिसाला दिया गया है उस में एक नेक अ़मल येह भी है।

क्या आप सफ़ाई सुथराई के आ़दी और सलीक़ामन्द हैं ?

2 सफ़ाई को टालते रहने से गन्दगी जमा हो जाती है इस लिए छोटे छोटे काम फ़ौरी करना मसलन बाथरूम या बावर्ची ख़ाने की सिन्क इस्तिमाल करते ही उसे साफ़ कर लें । वरना पानी और साबुन के धब्बे ख़ुश्क हो कर जम जाते हैं ।

3 हर चीज़ के लिए एक मख़्सूस जगह बनाना ताकि अश्या बिखरी न रहें मसलन मैले कपड़ों को ज़मीन या कुर्सी वग़ैरा पर डालने के बजाए फ़ौरी त़ौर पर लॉन्ड्री की टोकरी में डालें।

4 ग़ैर ज़रूरी चीज़ों को जमा करने से बचना और बाक़ाइ़दगी से अश्या को अलग करना। एक अन्दर एक बाहर का उसूल अपनाएं मसलन नया लिबास, नया जूता या नया बरतन ख़रीदते ही अब पुरानी चीज़ किसी ज़रूरतमन्द को दे दें या रीसायकल कर दें इस त़रह घर में ग़ैर ज़रूरी अश्या की तादाद नहीं बढ़ती। उस के लिए घर के एक कोने में एक डिब्बा रखें जहां आप वोह चीज़ें डालती जाएं जो अब इस्तिमाल में नहीं आतीं जब डिब्बा भर जाए तो उसे किसी ज़रूरतमन्द को दे दें येह आ़दत घर को मुनज़्ज़म रखने में बहुत मददगार होती है ।

5 अगर सिर्फ़ बावर्ची ख़ाने, बाथरूम और सेह़न को मुनज़्ज़म कर लिया जाए तो पूरा घर मुनज़्ज़म नज़र आने लगता है। इस लिए सेह़न, बावर्ची ख़ाने और घर के दाख़िली रास्ते जहां गर्दो ग़ुबार जमा होता रहता है, रोज़ाना एक से दो बार झाड़ू लगा लेने से उन्हें कम मेह़नत के साथ काफ़ी ह़द तक साफ़ रखा जा सकता है।

इसी त़रह ज़रूरी है कि किचन में खाना पकाते हुए सफ़ाई को भी साथ साथ चलाया जाए मसलन जब सब्ज़ियां उबल रही हों या सालन पक रहा हो इन चन्द मिनटों में इस्तिमाल शुदा बरतन धो लिए जाएं, काउन्टर साफ़ कर लिया जाए इस त़रह करने से खाने के बाद पहाड़ जैसा बरतनों का ढेर नहीं होता और बावर्ची ख़ाना साफ़ सुथरा रहता है। यूंही रात को भी बरतन वग़ैरा धो कर सिन्क को बिल्कुल ख़ाली कर दें।

सोने से पहले पूरे घर का एक चक्कर लगाएं और बिखरी हुई चीज़ों को उन की जगह पर रख दें । यूं सुब्ह़ एक मुनज़्ज़म और मुरत्तब घर आप का मुन्तज़िर होगा जो आप को एक ज़ेहनी सुकून फ़राहम करेगा और आप के दिन का आग़ाज़ ही साफ़ और मुनज़्ज़म अन्दाज़ से होगा।

एक मुसलमान औ़रत के लिए शह़ज़ादिए कौनैन ह़ज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا बेहतरीन नमूना (Role model) हैं आप ने अपने उमूरे ख़ानादारी को बेहतरीन अन्दाज़ में मुनज़्ज़म किया हुवा था ह़ालांकि माद्दी एतिबार से इस दौर में घरेलू काम काज में आसानी के लिए आज की त़रह की सहूलिय्यात भी मुय्यसर नहीं थीं इस के बावुजूद तमाम घरेलू कामों के साथ साथ इ़बादतो रियाज़त, शौहर की ख़िदमत और औलाद की बेहतरीन तरबियत फ़रमाई।

अल्लाह पाक हमें इन के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

वोही है राह तेरे अ़ज़्मो शक़ की मन्ज़िल
जहां हैं आ़इशा व फ़ातिमा के नक़्शे क़दम

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا को येह तस्बीह़ात पढ़ने की तालीम फ़रमाई :

33 बार سُبۡحَانَ اللّٰہ , 33 मरतबा اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ और 34 मरतबा اَللّٰہُ اَکۡبَر और इरशाद फ़रमाया कि येह तुम्हारे लिए ख़ादिम से बेहतर है। (بخاری،3/516،حدیث:5362)

इस अ़ज़ीम मामूल को तस्बीह़े फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا कहा जाता है। येह तमाम सलासिले त़रीक़त में, बिलख़ुसूस सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिया में भी मामूल और बाइ़से बरकत है।

ह़ज़रते मुल्ला अ़ली क़ारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ मिरक़ातुल मफ़ातीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़ में फ़रमाते हैं कि

सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो तस्बीह़ात पढ़ने की तालीम फ़रमाई, उन में येह ह़िक्मत भी है कि सोने के वक़्त इन तस्बीह़ात को पढ़ने से दिन भर के काम काज की थकन और दर्दो आलाम दूर हो जाते हैं। (مرقاۃ المفاتیح،5/233)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ की त़रफ़ से अ़त़ा कर्दा इस्लामी बहनों के 63 नेक आमाल में से एक नेक अ़मल येह भी है।

क्या आज आप ने पांचों नमाज़ों के बाद कम अज़ कम एक मरतबा आयतुल कुर्सी, सूरतुल इख़्लास और तस्बीह़े फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا पढ़ी ?

निय्यत कीजिए ! नमाज़ों के बाद तस्बीह़ात का येह मुबारक मामूल अपनाएंगी और सोने से पहले तस्बीह़े फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا पढ़ कर अपने दिल को ज़िक्रे इलाही से मुनव्वर करेंगी।

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

1 भंवों को रंगने और तराशने के मुतअ़ल्लिक़ शरई हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि आज कल ख़वातीन "**आई ब्रो टिन्ट**" (Eyebrow Tint) करवाने में भंवों को रंग (डाई) देती हैं, और येह कलर भंवों के बालों के रंग जैसा ही किया जाता है, मसलन बाल काले हों, तो काले रंग का शेड इस्तिमाल करती हैं, ताकि चेहरे के बक़िय्या हिस्सों (मसलन रुख़्सार, नाक जबड़ा और होंट) की त़रह़ उन के नुक़ूश को भी उभारा और ख़ूबसूरत बनाया जा सके। येह उ़मूमी त़ौर पर पानी पहुंचने से मानेअ़ नहीं होता, लेकिन इस की बाज़ अक़्साम पानी से रोकने वाली भी होती हैं। और कई बार इस में भंवों को ख़ास शक्ल व डिज़ाइन देने के लिए अत़राफ़ से कुछ बाल कटवाए भी जाते हैं। इस तफ़्सील की रौशनी में बराहेकरम राहनुमाई फ़रमा दें कि येह अ़मल करना शरअ़न कैसा है?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

शरअ़न सियाह रंग के इ़लावा दीगर रंगों से भंवों को ज़ीनत के लिए रंगना मना नहीं जैसा कि सर के बाल सियाह ख़िज़ाब के इ़लावा मेहंदी से रंगना जाइ़ज़ है। इस एतिबार से आई ब्रो टिन्ट (Eyebrow Tint) में ह़रज नहीं, लेकिन यहां मज़ीद दो चीज़ों का ख़याल रखना लाज़िम है, (1) इस अ़मल में भंवों के बालों की कटिंग न की जाती हो क्यूंकि ख़ूबसूरती के लिए भंवों के बाल काटना जाइ़ज़ नहीं। (2) इस कलर लगाने में भंवों के बालों या बदन पर कोई ऐसी तह न बने जो पानी को नीचे पहुंचने में रुकावट बने, क्यूंकि बदन पर कोई ऐसी चीज़ लगाना जो वुज़ू व फ़र्ज़ ग़ुस्ल से रुकावट बनती हो, येह शरअ़न मम्नूअ़ व नाजाइ़ज़ है जैसा कि उ़लमाए किराम ने नेल पॉलिश लगाने का येही हुक्म दिया है। हां मेकअप वग़ैरा की ऐसी तह जो चेहरा धोने से बआसानी उतर जाती है वोह मम्नूअ़ नहीं।

नोट : अगर अब्रू के बाल बहुत ज़ियादा बढ़ चुके हों कि जिस से चेहरा वाक़ेई़ बदनुमा हो जाए तो सिर्फ़ उन बढ़े हुए बालों को इतना तराश कर छोटा कर सकते हैं कि जिस से बदनुमाई दूर हो जाए।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 समझदार नाबालिग़ बेटे के साथ ह़ज करने का शरई हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि एक औ़रत के शौहर का कुछ अ़र्सा क़ब्ल इन्तिक़ाल हुवा है। उस के वुरसा बेवा और एक आ़क़िल बेटा है जिस की उ़म्र 13 साल है लेकिन वोह नाबालिग़ है। येह लड़का अपनी उ़म्र के एतिबार से समझदार व क़ाबिल इत्मीनान यानी वोह बा ह़या और पर्दे के मुआ़मलात की समझ बूझ रखने वाला है। शौहर की विरासत से हिस्सा मिलने के सबब बेवा पर ह़ज फ़र्ज़ हो चुका है। पूछना येह था कि क्या येह ख़ातून अपने 13 साल के बेटे के साथ ह़ज पर जा सकती है?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

अव्वलन येह ज़ेहन नशीन रहे कि इन्दश्शरअ़ किसी भी औ़रत

को शौहर या महरम के बग़ैर शरई मसाफ़त यानी 92 किलो मीटर या इस से ज़ाइद की मसाफ़त पर वाक़ेअ़ किसी जगह जाना ह़राम है, साथ जाने वाले महरम का आ़क़िल व बालिग़ या मराहिक़ और क़ाबिले इत्मीनान (यानी फ़ासिक़ व बेबाक न) होना भी ज़रूरी है। मराहिक़ यानी क़रीबुल बुलूग़ लड़का जिस के हम उ़म्र बालिग़ हो गए हों और उस की मिक़्दार बारह साल है, इस मुआमले में वोह भी बालिग़ के हुक्म में है। लिहाज़ा पूछी गई सूरत में मज़्कूरा ख़ातून का तेरह साला नाबालिग़ बेटा भी मराहिक़ व क़ाबिले इत्मीनान है जिस की वजह से उस ख़ातून का अपने बेटे के साथ ह़ज की अदाएगी के लिए सफ़र इख़्तियार करना जाइज़ है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 ना महरम की मौजूदगी में तयम्मुम से पढ़ी गई नमाज़ का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मैं ने एक मस्अला पढ़ा था कि अगर औ़रत को वुज़ू करना है और वहां कोई नामहरम मौजूद है जिस से छुपा कर हाथों को धोना और सर का मस्ह नहीं कर सकती तो वोह तयम्मुम कर ले, मेरा सुवाल येह है कि अगर औ़रत इस त़रह तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ ले तो क्या फिर बाद में उस नमाज़ का इ़आदा करना होगा या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

दरयाफ़्त की गई सूरत में उस औ़रत पर दोबारा वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ना लाज़िम नहीं है इस लिए कि उसूल येह है कि जिस उ़ज़्र की वजह से तयम्मुम किया गया है, अगर वोह उ़ज़्र बन्दे की त़रफ़ से हो तो नमाज़ का इ़आदा लाज़िम होता है। लेकिन अगर उ़ज़्र अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हो, बन्दे का इस में कुछ दख़्ल न हो तो ऐसे उ़ज़्र के सबब तयम्मुम कर के पढ़ी जाने वाली नमाज़ का इ़आदा लाज़िम नहीं होता, और दरयाफ़्त कर्दा सूरत में भी चूंकि ग़ैर के सामने सत्र खोलने से मानेअ़ हुआ और अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ है और येह दोनों चीज़ें अल्लाह तआ़ला की जानिब से हैं लिहाज़ा येह उ़ज़्र अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से होगा और इस की वजह से तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ने पर उस का इ़आदा लाज़िम नहीं होगा।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 बच्चे में नक़्स की सूरत में इस्तिक़ाते ह़म्ल का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम इस मस्अले के बारे में पांच माह का ह़म्ल है, अल्ट्रासाउन्ड में बच्चे का दिमाग़ छोटा व कमर पे फोड़ा आ रहा है, डॉक्टर कह रहे कि ह़म्ल ख़त्म कर दें, क्या इस वजह से ह़म्ल को ख़त्म किया जा सकता है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

मज़्कूरा सूरत में ह़म्ल ख़त्म कराने की शरअ़न इजाज़त नहीं। क्यूंकि जब ह़म्ल चार माह का हो जाता है तो उस में रूह फूंक दी जाती है, और जब रूह फूंक दी गई तो अब वोह एक जानदार इन्सान की त़रह है। लिहाज़ा अब इस्क़ात ह़म्ल कराना गोया एक जान का नाह़क़ क़त्ल है, जो कि सख़्त ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। क़ुरआनो ह़दीस में कई मक़ामात पर क़त्ले नाह़क़ की मज़म्मत और उस के इर्तिकाब पर अ़ज़ाबे नार की वईदें सुनाई गई हैं।

वाज़ेह़ रहे कि डॉक्टर्ज़ के बताने से या अल्ट्रासाउन्ड वग़ैरा से ह़ासिल होने वाली मालूमात यक़ीनी और क़त्ई नहीं होतीं। लिहाज़ा एक ग़ैर यक़ीनी बात की बुनियाद पर एक ज़िन्दा इन्सानी जान को क़त्ल करने की इजाज़त नहीं मिल सकती। बल्कि बिलफ़र्ज़ अगर किसी त़रह ज़न्ने ग़ालिब हो जाए फिर भी रूह फूंके जाने के बाद इस्क़ाते ह़म्ल की इजाज़त नहीं हो सकती। क्यूंकि इस से ज़ियादा से ज़ियादा येही मालूम होगा कि बच्चे को कोई बीमारी है। और बीमारी की वजह से भी ज़िन्दा इन्सान को क़त्ल करना जाइज़ नहीं होता। हां जान पड़ने से पहले इस त़रह की दुरुस्त मालूमात मिलें तो हुक्म मुख़्तलिफ़ हो सकता है।

मह़ज़ वहम और ग़ैर यक़ीनी अन्देशे की वजह से किसी यक़ीनी जान को तलफ़ करना जाइज़ नहीं है। फ़ुक़हाए किराम ने एक मस्अला बयान फ़रमाया कि जब वक़्ते विलादत बच्चा रुक जाए और मां की हलाकत का ख़ौफ़ हो तो मह़ज़ इस वहम की वजह से ज़िन्दा बच्चे को काटने की इजाज़त नहीं दी जाएगी, बिल्कुल इसी त़रह अल्ट्रसाउन्ड जैसे ज़न्नी ज़रीए से ह़ासिल होने वाली मालूमात, जो यक़ीनी और क़त्ई नहीं होतीं, इस की बुनियाद पर इस्क़ाते ह़म्ल की इजाज़त नहीं दी जा सकती, क्यूंकि इस में भी एक यक़ीनी जान को मह़ज़ अन्देशे की बुनियाद पर क़त्ल करना लाज़िम आता है, जो शरअ़न जाइज़ नहीं।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

जुमादल उ़ख़रा के चन्द अहम वाक़िआ़त

तारीख़ / माह / सिन	नाम/वाक़िआ़	मज़ीद मालूमात के लिए पढ़िए
1 जुमादल उ़ख़रा 1102 हि.	यौमे विसाल : सुल्तानुल आ़रिफ़ीन ह़ज़रते सख़ी सुल्तान बाहू सरवरी क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना जुमादल उ़ख़रा 1438 हि. और "फ़ैज़ाने सुल्तान बाहू"
5 जुमादल उ़ख़रा 672 हि.	यौमे उ़र्स : मौलाना जलालुद्दीन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद रूमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना जुमादल उ़ख़रा 1439 हि.
9 जुमादल उ़ख़रा 544 हि.	यौमे विसाल : ह़ज़रते इमाम क़ाज़ी इ़याज़ मालिकी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना जुमादल उ़ख़रा 1438 हि.
14 जुमादल उ़ख़रा 189 हि.	यौमे विसाल : शागिर्दे इमामे आ़ज़म, इमाम मुह़म्मद बिन ह़सन शैबानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना जुमादल उ़ख़रा 1440 हि.
14 जुमादल उ़ख़रा 505 हि.	यौमे उ़र्स : हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना जुमादल उ़ख़रा 1439 हि. और "फ़ैज़ाने इमाम ग़ज़ाली"
19 जुमादल उ़ख़रा 1382 हि.	यौमे विसाल : ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद ज़फ़रुद्दीन रज़वी बिहारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना जुमादल उ़ख़रा 1438 हि.
22 जुमादल उ़ख़रा 13 हि.	यौमे उ़र्स : मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना जुमादल उ़ख़रा 1438 ता 1445 हि. और "फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अकबर"
24 जुमादल उ़ख़रा 1375 हि.	यौमे विसाल : ताजुल उ़लमा ह़ज़रते सय्यिद शाह औलादे रसूल मुह़म्मद मियां मारहरवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना जुमादल उ़ख़रा 1438 हि.
26 जुमादल उ़ख़रा 410 हि.	यौमे विसाल : ह़ज़रते शैख़ अबुल फ़ज़्ल अ़ब्दुल वाह़िद तमीमी ह़म्बली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना जुमादल उ़ख़रा 1438 हि.
जुमादल उ़ख़रा 36 हि.	शहादते मुबारका : ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह और ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا	अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के 2 रिसाले (1) "ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह" (2) "ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम"

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

"माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" के शुमारे दावते इस्लामी की वेबसाइट से डाउनलोड कर के पढ़िये और दूसरों को शेयर भी कीजिये।

जुमादल उ़ख़रा की मुनासबत से क़ाबिले मुत़ालआ़ कुतुबो रसाइल



नफ़ा में नुक़्सान न कीजिए !

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

"नेकी" करना, यक़ीनन सवाब का काम है मगर बाज़ औक़ात शैत़ान नेकी करवा कर फंसा देता और नफ़ा में नुक़्सान करवा देता है, मसलन नेकी करवा कर किसी को रियाकारी में मुब्तला कर देता है, इस त़रह़ कोई काम बज़ाहिर नेक होता है, लेकिन उस में किसी दूसरे की ह़क़ तल्फ़ी और दिल आज़ारी हो रही होती है, जैसा कि कोई शख़्स किसी सोने वाले के क़रीब बुलन्द आवाज़ से तिलावत कर रहा हो, जिस की वजह से बार बार सोने वाले की आंख खुल रही हो और वोह बेचारा दरख़्वास्त भी कर रहा हो कि आहिस्ता आवाज़ से तिलावत कर लीजिए ! लेकिन तिलावत करने वाला कहे कि "तू मुझे क़ुरआने करीम पढ़ने से रोकता है !" तो याद रहे कि ऐसी सूरत में तिलावत करने वाला गुनाहगार होगा। (دیکھئے: غنیۃ المتملی، ص497) यूंही बाज़ लोग गली मह़ल्ले में आधी रात तक ईको साउन्ड पर नात ख़्वानी कर रहे होते हैं, जिस के सबब घरों में लोग परेशान हो रहे होते और बच्चे बूढ़े, मरीज़ वग़ैरा सो नहीं पाते। याद रखिए ! अगर मह़ल्ले के दो चार आदमी आप के साथ नातख़्वानी में शरीक हैं तो इस का मत़लब हरगिज़ येह नहीं है कि एक दिन का बच्चा, 100 साल की बुढ़िया और दिल का मरीज़ भी आप की ताईद में है कि ख़ूब ईको साउन्ड चलाओ ! अगर ऐसी सूरते ह़ाल में कोई नातख़्वानी से रोकता है तो उस से कहते हैं : "तू हमें नातख़्वानी से रोकता है !!" यूंही कुछ लोग रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ की रातों में बड़े बड़े स्पीकर लगा कर उन का रुख़ किसी के घर की त़रफ़ कर देते हैं जिस से वोह बेचारे सो नहीं पाते, और अगर वोह इस की शिकायत करें तो बाज़ औक़ात स्पीकर लगाने वाले लड़ाई करते हैं। ह़ालांकि येह सब हम से शैत़ान करवा रहा होता है और हम समजते हैं कि हम बड़े नेक और बहुत बड़े आ़शिक़े रसूल हैं। हमारी आवाज़ से भी किसी को तक्लीफ़ नहीं होनी चाहिए, येही वजह है कि एह़राम वाले शख़्स के तल्बिया (यानी लब्बैक) पढ़ने के मुतअ़ल्लिक़ लिखा है कि "इस्लामी भाई बआवाज़े बुलन्द लब्बैक कहा करें मगर आवाज़ इतनी भी बुलन्द न करें कि इस से ख़ुद को या किसी दूसरे को तक्लीफ़ हो।" (रफ़ीक़ुल मोतमिरीन, स. 27)

अल्लाह पाक हमें शरीअ़त के दाइरे में रहते हुए नेकी करने और अपनी नेकियों को ज़ाएअ़ होने से बचाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी का साथ दीजिये और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर अ़त़िय्यात (Donation) के ज़रीए़ माली तआ़वुन कीजिये !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाह़ी (Reformatory), फ़लाह़ी (Welfare) रूह़ानी ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है